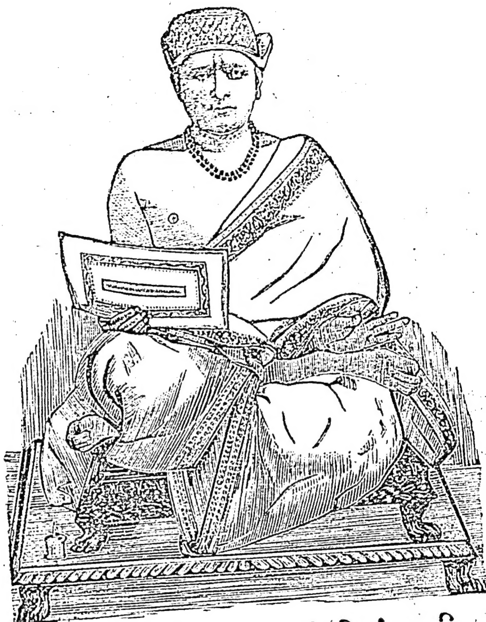


॥ ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी
पुरुषोत्तमजी महात्मा श्रीमद्रामगुरु
अखंडानंदसरस्वतीके प्रशिष्य
औ
पूज्यपाद श्रीमद्बापूसरस्वतीके शिष्य ॥

श्री

विचारचंद्रोदय.

तीसरी आवृत्ति.

ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्री पीतांबरजीकृत.



मुमुक्षुके हितार्थ

शरीफ सालेमहंमदने छपाया.

दोहा.

"ब्रह्मरूप अहि ब्रह्मवित्, ताकी बानी वेद;
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद."

(वि. सा. तृ. त.)



मुंबईमें निर्णयसागर छापखानैमें छपा.

संवत् १९४२—सन १८८६.

ॐ गुरुपरमात्मने नमः ॥

॥ तृतीयावृत्तिकी प्रस्तावना ॥

यह प्रश्नउत्तररूप ग्रंथ मुमुक्षुजनोंकूं अति उपयोगी भया है। काहेतें जो वेदांतअभ्यासके आरंभकालमैं इस ग्रंथके समान अन्य ग्रंथ नहीं है॥

इस आवृत्तिमैं ग्रंथकर्ता ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजकी मूर्ति रखी है। तथा नवीन अकारादि अनुक्रमणिका रखी है॥ वेदांतपदार्थसंज्ञारूप षोडशकला जो ग्रंथके अंतमैं है। तिसमैं "अजिव्हत्वादि ६।१४०" है। तहां ६ का अंक षट्पदार्थनका सूचक है। औ १४० का अंक श्रीपदार्थमंजूषागत क्रमांकका सूचक। ऐसै अन्यठिकाने बी जानना.

इस ग्रंथका सारभूत "वेदांतविनोद अंक १ वेदांतपदावली" नामसैं लघुग्रंथ प्रकट किया है, सो मुमुक्षुनकूं कंठ करनेमैं अति उपयोगी होवैगा.

श० सा०.

॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

॥ प्रस्तावना ॥

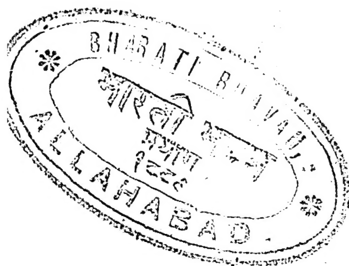
सर्वमतशिरोमणि श्रीवेदांतसिद्धांत है ॥ ताके जाननैवास्ते कनिष्ठ औ मध्यमआदिक अधिकारिनके अर्थ अनेकसंस्कृत औ प्राकृत ग्रंथ हैं। परंतु जाकी बुद्धिमैं विशेषशंका होवै नहीं। ऐसा मंदमतिमान् परमआस्तिक शुद्धचित्तवाला जो उत्तमअधिकारी है। ताके अर्थ सरल श्रेष्ठ अल्प औ विख्यात वेदांतप्रक्रियाका ग्रंथ कोउ नहीं है। यातैं मैंनै यह विचारचंद्रोदय नामक वेदांतप्रक्रियाका प्रश्नोत्तररूप ग्रंथ किया है ॥ यामैं षोडशप्रकरण हैं। तिनका "कला" ऐसा नाम धर्‍या है ॥ एकएक कलाविषै एकएक विलक्षण

प्रक्रिया धरी है ॥ मुमुक्षुकूं ब्रह्मसाक्षात्कारविषै अवश्यउपयोगी जो प्रक्रिया हैं । वे सर्व संक्षेपतैं यामैं हैं ॥ अंतकी षोडशवींकलाविषै अनेकवेदांतपदार्थनके नाम रखे हैं । सो धारनेंसैं अन्य महद्ग्रंथनके श्रवणविषै उपयोगी होवैंगे ॥ या ग्रंथकूं ब्रह्मनिष्ठगुरुके मुखसैं जो मुमुक्षु कंठ करैगा वा याके अर्थकूं बुद्धिमैं धारण करैगा । वाके चित्तरूप आकाशमैं अवश्य ज्ञानरूप युवाऽवस्थाकूं धारनेवाला विचाररूप चंद्रमा उदय होवैगा औ संशय अरु भ्रांतिसहित अज्ञानरूप अंधकारकूं दूरी करैगा । याहीतैं याका नाम विचारचंद्रोदय धर्‍या है ॥ याका विषय नीचें धरी अनुक्रमणिकाविषै स्पष्ट लिख्या है । तहां देखलेना ॥ (या ग्रंथके विशेषज्ञानविषै उपयोगी श्रीसटीक बालबोध हमने किया है । जाकूं इच्छा होवै सो

|| प्रस्तावना ||

देखे) विशेष विज्ञप्ति यह है किः—यह ग्रंथ ब्रह्मनिष्टगुरुके मुखसैंहीं श्रद्धापूर्वक पढना । स्वतंत्र नहीं ॥ काहेतैं । गुरुविना सिद्धांतके रहस्यका ज्ञान होता नहीं । औ गुरुमुखसैं सकल अभिप्राय जान्या जावैं है । यातैं गुरुके मुखसैंहीं पढना चाहिये ॥

लि. पंडित पीतांबरजी.



अनुक्रमणिका.



अनुक्रमणिका.

ॐ

॥ श्री विचारचंद्रोदय ॥

तृतीयावृत्तिकी

अकारादि अनुक्रमणिका ॥

प्रश्नः— जड सो क्या है ?

उत्तरः— जो आपकूं न जानैं औ दूसरेकूं वी न जानैं । ऐसै जो अज्ञान[२१] औ तिनके कार्य भूत[२२] भौतिक[२३] पदार्थ । सो जड हैं ॥

प्रश्नः— ऊपर कहे तीनवस्तुनके विचारका किसरीतिसैं उपयोग है ?

उत्तरः— "तत्त्वमसि" महावाक्यमैं स्थित "त्वं"पद औ "तत्"पदका वाच्यअर्थ जो जीव[२४]

॥२१॥"नहीं जानता हूं"ऐसै व्यवहारका हेतु आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादिभावरूप अज्ञान पदार्थ है॥

॥ २२ ॥ आकाशादिक पांचभूत ॥

॥ २३ ॥ भूतनके कार्य पिंडब्रह्मांडादिक ॥

॥ २४ ॥ चिदाभासयुक्त अंतः करणसहित कूटस्थ चैतन्य । सो जीव है ॥



औ ईश्वर[25] । तिनकी उपाधिरूप जो प्रपंच[26] । तिसकूं जेवरीमैं सर्पकी न्याई । औ ठौंठमैं पुरुषकी न्याई औ मरुभूमिमैं मृगजलकी न्याई । विचार करि मिथ्या जानिके त्याग करना । यह प्रपंचके विचारका उपयोग है ॥

"मैं जो ("त्वं" पदका लक्ष्यार्थ) आत्मा । सो ("तत्" पदका लक्ष्यार्थ) ब्रह्म हूं" इसरीतिसैं ब्रह्मआत्माकी एकताकूं विचारकरि सत्य जानिके अवशेष रखना । यह " मैं कौन हूं?" औ " ब्रह्म कौन है ?" इस विचारका उपयोग (फल) है ॥

॥ २५ ॥ चिदाभासयुक्त मायासहित ब्रह्मचैतन्य। सो ईश्वर है ॥

॥ २६ ॥ समष्टि औ व्यष्टिरूप तीनशरीर। पंचकोश । तीनअवस्था आदिक नामरूप ॥

प्रश्नः– इस विचारका अधिकारी कौन है। औ सो क्या करै?

उत्तरः–इस विचारका अधिकारी उत्तमजि-ज्ञासु है। सो सद्गुरुकी कृपासैं उपोद्घात आदि-ककी प्रक्रियाकूं विचारिके "मैंही आप ब्रह्म हूं" इसरीतिसैं ब्रह्मआत्माकूं अपरोक्ष जानै॥

प्रश्नः– तिन प्रक्रियाके नाम कौन हैं?

उत्तरः–

॥ १ ॥ उपोद्घात ॥

॥२७॥विवेक वैराग्य षड्संपत्ति औ मुमुक्षुता। इन च्यारीसाधनकरि सहित होवै औ ब्रह्मवित्गुरु अरु वेदांतशास्त्रके वचनविषै परमविश्वासी होवै। कुतर्क कदाचित् करै नहीं। ऐसा जो स्वरूपके जाननैंकी तीव्रइच्छावाला अधिकारी। सो उत्तमजिज्ञासु है॥

॥ २८ ॥ अद्वैतके बोध करनैंका कोइ बी प्रकार। सो प्रक्रिया है॥

॥ १५ ॥ वेदांतप्रमेय ॥
॥ १६ ॥ वेदांतपदार्थसंज्ञा ॥
ये तिन प्रक्रियांके नाम हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये उपोद्धातवर्णन नामिका प्रथमकला समाप्ता ॥ १ ॥

॥२९॥ प्रपंचका विचार प्रथम द्वितीय षष्ठ द्वादश त्रयोदश औ षोडशवीं प्रक्रिया (कला) विषै किया है। औ "प्रपंचसहित मैं कौन हूं?" याका विचार तृतीय चतुर्थ औ पंचम प्रक्रियाविषै किया है। औ परमात्मा कौन है? याका विचार दशमप्रक्रियाविषै किया है। औ ब्रह्म आत्मा दोनूंके स्वरूपका विचार सप्तम अष्टम नवम एकादश औ चतुर्दशवीं प्रक्रियाविषै किया है। प्रपंच औ ब्रह्म आत्माके स्वरूपका विचार पंचदशवींप्रक्रियाविषै किया है॥ सर्व प्रक्रियाका "तत्" "त्वं" पदार्थका शोधन औ तिनकी एकताका निश्चय प्रयोजन है॥

अथ द्वितीयकलाप्रारंभः ॥ २ ॥

॥ प्रपंचारोपापवाद ॥

प्रश्नः— शुद्धब्रह्मविषै प्रपंचका आरोप[30] कैसैं हुवा है ?

उत्तरः— अनादि शुद्धब्रह्मकेविषै अनादि[31]-कल्पित[32] प्रकृति है ॥ तिस प्रकृतिका ब्रह्मके साथि

॥ ३० ॥ वस्तु (ब्रह्म)विषै अवस्तु (अज्ञान तत्कार्य) का कथन आरोप है। याहीकूं अध्यारोप बी कहै हैं॥

॥ ३१ ॥ उत्पत्तिरहित वस्तु। स्वरूपसैं अनादि है ॥ ऐसे शुद्धब्रह्म। प्रकृति। तिनका संबंध। ईश्वर। जीव। औ तिनका भेद। ये षट् हैं। अरु प्रवाहरूपसैं प्रपंच बी अनादि है ॥

॥ ३२ ॥ जो होवै नहीं औ स्वप्नपदार्थकी न्याई भ्रांतिसैं भासै। सो कल्पित है ॥

अनादि कल्पिततादात्म्य (कल्पितभेदसहित वास्तवअभेदरूप) संबंध है ॥ सो प्रकृति । माया औ अविद्या औ तमःप्रधान प्रकृतिरूपकरि विभागकूं पावतीहै ॥ तिनमैं जो शुद्धसत्वगुणयुक्त[33] । सो माया है औ जो मलिनसत्वगुणयुक्त[34] है सो अविद्या है ॥ औ जो तमोगुणकी मुख्यताकरि युक्त है । सो तमःप्रधान प्रकृति है ॥ मायाविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है । सो अधिष्ठान (ब्रह्म) औ मायासहित[35] जगत्कर्त्ता सर्वज्ञ ईश्वर कहिये

॥३३॥ क्षत्रिय औ शूद्ररूप मंत्रीनसैं ब्राह्मणरूप राजाकी न्याई जो रज तमसैं दबे नहीं । किंतु रज तमकूं आप दबावै । ऐसा सत्वगुण ॥

॥ ३४ ॥ जो रज तमकूं दबावै नहीं । किंतु शूद्ररूप दोनूंराजकुमारनसैं ब्राह्मणरूप एक मंत्रीकी न्याई रज तमसैं आप दबै । ऐसा सत्वगुण ॥

॥३५॥ इहां मायाशब्दकारि माया औ तमःप्रधान

है ॥ त उत्पन्न भये ॥ तिनका पंचीकरण नहीं
सो था । तब अपंचीकृत थे । तिनतैं समष्टिव्य-
भोक्ता सूक्ष्मसृष्टि होयकें । पीछे ईश्वरकी ईच्छासैं
जीव बनका पंचीकरण भया । तब सो भूत पंची-
पाधि गे । तिनतैं समष्टिव्यष्टिरूप स्थूलसृष्टि भयी ।
प्रकृति । समष्टि स्थूलसूक्ष्मकारणप्रपंचका अभि-
नमैं मायावकी दृष्टिसैं ईश्वर है । औ व्यष्टि स्थूल-
तृका र्निाणप्रपंचका अभिमानी जीव है ॥ तिनमैं
ईश्वर । मृज्ञ होनैतैं नित्यमुक्त है औ जीवअल्पज्ञ
॥३६॥ है ॥ इसरीतिसैं शुद्धब्रह्मविषै प्रपं-
सीकी अपेोप हुवा है ॥
कहिये है।
व्यापक है -यह आरोप सत्य है वा मिथ्या है ?
आपेक्षिकव्य-- यह आरोप जेवरीविषै सर्पकी न्याई
अपेक्षासैं व्यषै स्वप्नकी न्याई औ दर्पणविषै नग-
अपेक्षासैं पाबकी न्याई मिथ्या है ॥

प्रश्नः– यह आरोप किससैं होवै है ?

उत्तरः– यह आरोप अज्ञानसैं होवै है ॥

प्रश्नः–यह आरोप कबका औ काहेकूं हुवा होवैगा। यह विचार कैसे होवै ?

उत्तरः–जैसें कोइ पुरुषके वस्त्र ऊपर तैलका दाग लग्या होवै। तिसकूं जानिके ताकूं मिटावनेका उपाय किया चाहिये औ यह दाग कबका काहेकूं लग्या होवैगा। इस विचारका कछु प्रयोजन नहीं है ॥ तैसें यह प्रपंचका आरोप कबका औ काहेकूं हुवा होवैगा। इस विचारका बी कछु प्रयोजन नहीं है। परंतु इसकी निवृत्तिका उपाय करना योग्य है॥

प्रश्नः– इस सर्वआरोपकी निवृत्ति किस रीतिसैं होवै है ?

उत्तरः– ब्रह्मज्ञानसैं माया औ अविद्याकी

निवृत्ति होवै है। तिसतैं कार्यसहित प्रकृतिकी निवृत्ति होवै है। तिसतैं प्रकृति औ ब्रह्मके संबंधकी निवृत्ति होवै है । तिसतैं जीवभाव औ ईश्वरभावकी निवृत्ति होवै है । तिसतैं जीवईश्वरके भेदकी निवृत्ति होवै है। तिसतैं बंधकी निवृत्ति होयके मोक्ष सिद्ध होवै है ॥ इसरीतिसैं एककालविषैहीं सर्वआरोपकी निवृत्तिरूप ३७ अपवाद होवै है ॥

प्रश्नः– यह ब्रह्मज्ञान किससैं होवै है ?

उत्तरः– यह ब्रह्मज्ञान आगे कहियेगा जो विचार । तिससैं होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपंचारोपापवाद वर्णन नामिका द्वितीयकला समाप्ता ॥ २ ॥

॥ ३७ ॥ सर्पका औ ताके ज्ञानका बाधकरिके रज्जुरूप अधिष्ठानके अवशेषकी न्याई । प्रपंच औ ताके ज्ञानका बाधकरिके अधिष्ठानरूप शुद्धब्रह्मका जो अवशेष । सो अपवाद है ॥

अथ तृतीयकलाप्रारंभः ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ देह तीनका मैं द्रष्टा हूं ॥

प्रश्नः– पहिली प्रक्रिया । "देह तीनका मैं द्रष्टा हूं" ॥ सो देह तीन कौनसै हैं ?

उत्तरः– स्थूलदेह सूक्ष्मदेह औ कारणदेह । ये देह तीन हैं ॥

प्रश्नः– स्थूलदेह सो क्या है ?

उत्तरः– पंचीकृतपंचमहाभूतके पचीसतत्त्वनका स्थूलदेह है ॥

प्रश्नः– पंचमहाभूत कौनसै हैं ?

उत्तरः– आकाश वायु तेज जल औ पृथ्वी । ये पंचमहाभूत हैं ॥

प्रश्नः– पंचमहाभूतके पचीसतत्त्व (पदार्थ) कौनसै हैं ?

उत्तरः-

॥ १ ॥ आकाशके पांचतत्त्वः-काम[38] क्रोध शोक मोह[39] औ भय ॥

॥ २ ॥ वायुके पांचतत्त्वः-चलन वलन धावन प्रसारण औ आकुंचन ॥

॥ ३ ॥ तेजके पांचतत्त्वः-क्षुधा तृषा आलस्य निद्रा औ कांति ॥

॥ ४ ॥ जलके पांचतत्त्वः-शुक्र (वीर्य) शोणित (रुधिर) लाल मूत्र औ स्वेद (प्रसीना) ॥

॥ ५ ॥ पृथ्वीके पांचतत्त्वः- अस्थि (हाड) मांस नाडी त्वचा औ रोम ॥

ये पंचमहाभूतके पचीसतत्त्वनके नाम हैं ॥

प्रश्नः-पंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये ?

॥ ३८ ॥ कोई बी भोगकी इच्छा ॥

॥ ३९ ॥ अहंता ममतारूप बुद्धि ॥

उत्तरः— जिन भूतनका पंचीकरण भया है। तिन भूतनकूं पंचीकृतपंचमहाभूत कहिये ॥

प्रश्नः— पंचीकरण सो क्या है?

उत्तरः—पंचभूतनमैंसैं एकएकके दो दो भाग किये। सो भये दश ॥ तिनमैंसैं पहिले पांचभाग रहने दिये औ दूसरे पांचभागनमैंसैं एक एक भागके च्यारीच्यारीभाग किये ॥ सो च्यारी च्यारी भाग। आकाशादिक भूतनका आपआपका जो अर्ध अर्ध मुख्यभाग रहने दिया है। तिसविषै न मिलायके आपआपसैं भिन्न च्यारी भूतनके अर्ध अर्ध भागनविषै मिलावनै। सो पंचीकरण कहिये है ॥

॥ ४० ॥ प्रथम अपंचीकृतपंचमहाभूत थे। तिनका ईश्वरकी इच्छासैं स्थूलसृष्टिद्वारा जीवनके भोगअर्थ परस्पर मिलापरूप पंचीकरण भया है ॥

॥ २ ॥ वायुके दोभाग किये । तिनमैंसैं एक भाग रहने दिया औ दुसरेभागके च्यारी-भाग किये । तिनमैंसैं वायुविषै न मिलावना औ एक आकाशविषै । एक तेजविषै । एक जलवि-षै । अरु एक पृथ्वीविषै मिलावना ॥ ऐसैंही

॥ ३ ॥ तेजके दोभाग किये । तिनमैंसैं एक भाग रहने दिया औ दूसरेभागके च्यारीभाग किये । तिनमैंसैं तेजविषै न मिलावना औ एक आकाशविषै । एक वायुविषै । एक जलविषै । अरु एक पृथ्वीविषै मिलावना ॥ ऐसैंही

॥ ४ ॥ जलके दोभाग किये । तिनमैंसैं एक भाग रहने दिया औ दुसरेभागके च्यारीभाग किये । तिनमैंसैं जलविषै न मिलावना औ एक आकाशविषै । एक वायुविषै । एक तेजविषै । अरु एक पृथ्वीविषै मिलावना ॥ ऐसैंही

॥ ९ ॥ पृथ्वीके दोभाग किये। तिनमैंसैं एक भाग रहने दिया औ दुसरेभागके च्यारीभाग किये। तिनमैंसैं पृथ्वीविषै न मिलावना औ एक आकाशविषै। एक वायुविषै। एक तेजविषै। अरु एक जलविषै मिलावना ॥

इसरीतिसैं पचीसतत्त्व होयके पंचमहाभूतनका परस्पर मिलाप है ॥

प्रश्नः—पंचमहाभूतनके पचीसतत्त्व कैसैं भये?

उत्तरः—सर्वभूतनका आपका एक एक मुख्यभाग है औ असुख्यच्यारीभाग अन्यभूतनके मिले हैं ॥ तिसतैं एक एक भूतके पांचपांच तत्त्व भये। सो सर्व मिलिके पचीसतत्त्व भये ॥

प्रश्नः—स्थूलदेहविषै ये पचीसतत्त्व कैसैं रहते हैं?

उत्तरः-

॥ १ ॥ आकाशके पांचतत्त्वः-

॥४१॥कोई ग्रंथविषै शिर कंठ हृदय उदर कटि-देशगत आकाश। ये आकाशके पांचतत्व हैं ॥ तिनमैं शिरोदेशगत आकाश आकाशका मुख्यभाग है। अनाहत शब्दका आश्रय होनेतैं॥कंठदेशगत आकाश वायुका भाग है। श्वासप्रश्वासका आश्रय होनैतैं॥हृदयदेशगत आकाश तेजका भाग है। पित्तका आश्रय होनैतैं ॥ उदरदेशगत आकाश जलका भाग है। पान किये जल-का आश्रय होनैतैं ॥ कटिदेशगत आकाश पृथ्वीका भाग है। गंधका आश्रय होनैतैं ॥ इसरीतिसैं काम-क्रोधादिक स्थूलदेहके तत्त्व नहीं। किंतु लिंगदेहके धर्म हैं औ अन्यग्रंथनकी रीतिसैं तौ कामादिक लिंग-देहके मुख्यधर्म हैं औ स्थूलदेहविषै घटमैं जलकी शीतलताके आवेशकी न्याई इनका आवेश होवै है। यातैं स्थूलदेहके बी गौणधर्म कहिये हैं ॥

काम क्रोध शोक मोह औ भय ॥ तिनमैं ॥ १ ॥ काम[42]ः—आकाशविषै वायुका भाग मिल्या है। काहेतैं। कामनारूप वृत्ति चंचल है औ वायु बी चंचल है। यातैं यह वायुका भाग है ॥

॥ २ ॥ क्रोधः—आकाशविषै तेजका भाग मिल्या है। काहेतैं। क्रोध आवता है तब शरीर तपायमान होता है औ तेज बी तपायमान है। यातैं यह तेजका भाग है ॥

॥ ३ ॥ शोक[43]ः— आकाशका मुख्यभाग

॥ ४२ ॥ पिताके तुल्य पुत्रकी न्याई। काम। वायुके तुल्य है। यातैं वायुका भाग है ॥ ऐसैं अन्य तत्त्वन विषै बी जानि लेना ॥

॥ ४३ ॥ यद्यपि वायु आदिक भूतनके भागनविषै बी आकाशके अन्य च्यारीभागनमैंसैं एक एक भाग मिल्या है। सो आकाशका मुख्यभाग नहीं कहिये है

है ॥ काहेतें । शोक उत्पन्न होवै तब शरीर शून्य जैसा होवै है । औ आकाश बी शून्य जैसा है । यातैं यह आकाशका मुख्यभाग है ॥

॥ ४ ॥ मोहः— आकाशविषै जलका भाग मिल्या है ॥ काहेतें । मोह पुत्रादिकविषै प्रसरता है औ जलका बिंदु बी प्रसरता है । यातैं यह जलका भाग है ॥

॥ ५ ॥ भयः—आकाशविषै पृथ्वीका भाग मिल्या है॥काहेतैं।भय होवै तब शरीर जड(अक्रिय) होयके रहता है औ पृथ्वी बी जडता स्वभाववाली

तथापि शोक औ आकाशकी अतिशयतुल्यता है । यातैं शोक आकाशका मुख्यभाग है ॥ कहिंक लोभ बी आकाशकी न्याईं पदार्थकी प्राप्तिकरि अपूर्ण होनैतें आकाशका मुख्यभाग कहाहै ॥ इसरीतिसैं अन्यभूतनविषै बी जानि लेना ॥

है । यातैं यह पृथ्वीका भाग है ॥

॥ २ ॥ **वायुके पांचतत्त्व** ॥

चलन । वलन । धावन । प्रसारण । औ आकुंचन । तिनमैंसैं

॥ ६ ॥ **चलनः**—वायुविषै जलका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । चलन नाम चलनैका है औ जल बी चलता है । यातैं यह जलका भाग है ॥

॥ ७ ॥ **वलनः**—वायुविषै तेजका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । वलन नाम अंगके वालनेका है औ तेजका प्रकाश बी वलता है । यातैं यह तेजका भाग है ॥

॥ ८ ॥ **धावनः**—वायुका मुख्यभाग है ॥ काहेतैं । धावन नाम दौडनेका है औ वायु बी दौडता है । यातैं यह वायुका मुख्यभाग है ॥

॥ ९ ॥ **प्रसारणः**—वायुविषै आकाशका

भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । प्रसारण नाम प्रसरनैका है औ आकाश बी प्रसर्‍या हुवा है। यातैं यह आकाशका भाग है ॥

॥१०॥ आकुंचनः—वायुविषै पृथ्वीका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । आकुंचन नाम संकोच करनैका है औ पृथ्वी बी संकोचकूं पायी हुयी है । यातैं यह पृथ्वीका भाग है ॥

॥ ३ ॥ तेजके पांचतत्त्व ॥

क्षुधा । तृषा । आलस्य । निद्रा । औ कांति । तिनमैं

॥११॥ क्षुधाः—तेजका मुख्यभाग है । काहेतैं । क्षुधा लगे तब जो खावैं सो भस्म होवै है औ अग्निविषै बी जो डारैं सो भस्म होवै है। यातैं यह तेजका मुख्यभाग है ॥

॥ १२ ॥ तृषाः—तेजविषै वायुका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । तृषा कंठकूं शोषण करै

है औ वायु बी गीलेवस्त्रादिककूं सुकावे है। यातैं यह वायुका भाग है ॥

॥ १३ ॥ आलस्यः—तेजविषै पृथ्वीका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं। आलस्य आवै तब शरीर जड होय जावै है औ पृथ्वी बी जडस्वभाव-वाली है। यातैं यह पृथ्वीका भाग है ॥

॥ १४ ॥ निद्राः—तेजविषै आकाशका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं। निद्रा आवै तब शरीर शून्य होवै है औ आकाश बी शून्यतावाला है। यातैं यह आकाशका भाग है ॥

॥ १५ ॥ कांतिः—तेजविषै जलका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं। कांति धूपसैं घटै है औ जल बी धूपसैं घटै है। यातैं यह जलका भाग है ॥

॥ ४ ॥ जलके पांचतत्त्व ॥

शुक्र। शोणित। लाळ। मूत्र। औ स्वेद। तिनमैंसैं

॥ १६ ॥ शुक्रः—जलका मुख्यभाग है ॥ काहेतैं । शुक्र श्वेतवर्ण है औ गर्भका हेतु है अरु जल बी श्वेतवर्ण है औ वृक्षका हेतु है ॥ यातैं यह जलका मुख्यभाग है ॥

॥ १७ ॥ शोणितः—जलविषै पृथ्वीका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । शोणित रक्तवर्ण है औ पृथ्वी बी काहिंक रक्त है । यातैं यह पृथ्वीका भाग है ॥

॥ १८ ॥ लाळः—जलविषै आकाशका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं लाळ ऊंचा नीचा होवै है औ आकाश बी ऊंचा नीचा है । यातैं यह आकाशका भाग है ॥

॥१९॥ मूत्रः—जलविषै तेजका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । घर्म हैं औ तेज बी धर्म है। यातैं यह तेजका भाग है ॥

॥ २० ॥ स्वेदः—जलविषै वायुका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । प्रसीना श्रम करनेसैं होवै है औ वायु बी पंखा आदिकसैं श्रम करनेसैं होवै है । यातैं यह वायुका भाग है ॥

॥ ५ ॥ पृथ्वीके पांचतत्त्व ॥

अस्थि । मांस । नाडी । त्वचा । औ रोम । तिनमैंसैं

॥ २१ ॥ अस्थिः—पृथ्वीका मुख्यभाग है ॥ काहेतैं । कठिन है औ पीतवर्ण है औ पृथ्वी बी कठिन है अरु कहींक पीतरंगवाली है । यातैं यह पृथ्वीका मुख्यभाग है ॥

॥ २२ ॥ मांसः—पृथ्वीविषै जलका भाग मिल्या है ॥ काहेतैं । मांस गीला है औ जल बी गीला है । यातैं यह जलका भाग है ॥

॥ ४४ ॥ नख औ दंतनका हड्डीमैं अंतर्भाव है ॥

॥ २३ ॥ नाडीः–पृथ्वीविषै तेजका भाग मिल्या है ॥ काहेतें । नाडीसें तापकी परीक्षा होवै है औ तेज बी तापरूप है । यातें यह तेजका भाग है ॥

॥ २४ ॥ त्वचाः–पृथ्वीविषै वायुका भाग मिल्या है ॥ काहेतें । त्वचासें शीत उष्ण कठिन कोमल स्पर्शकीं मालुम होवै है औ वायु बी स्पर्शगुणवाला है । यातें यह वायुका भाग है ॥

॥ २५ ॥ रोमः–पृथ्वीविषै आकाशका भाग मिल्या है ॥ काहेतें । रोम शून्य है । काटनेसें पीडा होवै नहीं औ आकाश बी शून्य है । यातें यह आकाशका भाग है ॥

॥ ४५ ॥ केश (मस्तकके बाल)का रोम (शरीरके बाल) विषै अंतर्भाव है ॥

इसरीतिसैं स्थूलदेहविषै पचीसतत्त्व रहते हैं ॥

प्रश्नः– पचीसतत्त्व जाननैका क्या प्रयोजन है ?

उत्तरः–पचीसतत्त्व मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पंचीकृत पंचमहाभूतके हैं ॥ इनका जाननैहारा मैं द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं। ऐसा निश्चय करना। यह पचीसतत्त्वके जाननैका प्रयोजन है ॥

प्रश्नः– "पचीसतत्त्व मैं नहीं औ ये मेरे नहीं" सो किसरीतिसैं समजना ?

उत्तरः–

॥ १ ॥ आकाशके पांचतत्त्वविषैः–

कामः–होवै तब बी मैं जानता हूं औ काम न होवै तब तिसके [46]अभावकूं बी मैं जानता

॥ ४६ ॥ कार्यकी उत्पत्तिसैं पूर्व जो अभाव। सो प्राग-

हूं । यातैं यह काम मैं नहीं औ यह मेरा नहीं । यह आकाशका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १ ॥

क्रोधः—होवै तब बी मैं जानता हूं औ क्रोध न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातैं यह क्रोध मैं नही औ यह मेरा नहीं । यह आकाशका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ २ ॥

शोकः—होवै तब बी मैं जानता हूं औ शोक न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातैं यह शोक मैं नहीं औ यह मेरा

भाव है ॥ नाशके अनंतर जो अभाव सो प्रध्वंसाभाव है ॥ तीनकालमैं जो अभाव सो अत्यंताभाव है ॥ अन्यवस्तुसैं जो अन्यवस्तुका भेद । सो अन्योन्याभाव है ॥ इसरीतिसैं अभाव च्यारीप्रकारका है ॥

नहीं । यह आकाशका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ३ ॥

मोहः—होवै तब बी मैं जानता हूं औ मोह न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह मोह मैं नहीं औ यह मेरा नहीं यह आकाशका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ४ ॥

भयः—होवै तब बी मैं जानता हूं औ भय न होवै तब तिसके अभावकू बी मैं जानता हूं। यातैं यह भय मैं नहीं औ यह मेरा नहीं । यह आकाशका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ५ ॥

॥ २ ॥ वायुके पांचतत्त्वविषैः—

चलनः—शरीर चले तब बी मैं जानता हूं औ शरीर न चले तब तिस चलनेके अभावकूं

बी मैं जानता हूं। यातैं यह चलन मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह वायुका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ६ ॥

वलनः– शरीर वले तब बी मैं जानता हूं औ शरीर न वले तब तिस वलनेके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह वलन मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ७ ॥

धावनः–शरीर दौडै तब बी मैं जानता हूं औ शरीर न दौडै तब तिस दोडनैके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह धावन मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह वायुका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ८ ॥

प्रसारणः—शरीर प्रसरे तब बी मैं जानता हूं औ शरीर न प्रसरे तब तिस प्रसरणेके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह प्रसारण मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह वायुका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ९ ॥

आकुंचनः—शरीर संकोचकूं पावै तबी मैं जानता हूं औ शरीर न संकोचकूं पावै तब तिस संकोचनैके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह आकुंचन मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह वायुका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १० ॥

॥ ३ ॥ तेजके पांचतत्त्वविषैः—

क्षुधाः—लगे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ क्षुधा न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं

जानता हूं। यातैं यह क्षुधा मैं नहीं औ यह मेरी नहीं। यह तेजकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ ११ ॥

तृषाः—लगे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ तृषा न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह तृषा मैं नहीं औ यह मेरी नहीं यह तेजकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १२ ॥

आलस्यः—होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ आलस्य न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह आलस्य मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह तेजका है। मैं इस-का जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १३ ॥

निद्राः—होवै तिसकूं बी मै जानता हूं औ

निद्रा न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह निद्रा मैं नहीं औ यह मेरी नहीं। यह तेजकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १४ ॥

कांतिः–होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ कांति न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह कांति मैं नहीं औ यह मेरी नहीं। यह तेजकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १५ ॥

॥ ४ ॥ जलके पांचतत्त्वविषै:–

शुक्रः–(वीर्य) शरीरविषै बढे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ वीर्य घटे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह वीर्य मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका

जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १६ ॥

शोणितः–(रुधिर) शरीरविषै बढे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ रुधिर घटे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह रुधिर मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १७ ॥

लाळः–गिरे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ लाळ न गिरे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥ १८ ॥

मूत्रः–आवै तिसकूं मैं जानता हूं औ मूत्र न आवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जान-

ता हूं। यातैं यह मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ १९ ॥

स्वेदः—(प्रसीना) होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ प्रसीना न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह प्रसीना मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ २० ॥

॥ ५ ॥ पृथ्वीके पांचतत्त्वविषै ॥

अस्थिः—(हाड)सूधे होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ हाड सूधे न होवैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये हाड मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पृथ्वीके हैं। मैं

इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ २१ ॥

मांसः—बढे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ मांस घटे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह मांस मैं नहीं औ यह मेरा नहीं। यह पृथिवीका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ २२ ॥

नाडीः—चलैं तिनकूं बी मैं जानता हूं औ न चलैं तब तिनके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये नाडी मैं नहीं औ ये मेरी नहीं। ये पृथ्वीकी हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ २३ ॥

त्वचाः—स्पर्शकूं ग्रहण करे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ स्पर्शकूं ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करनेके अभावकूं बी मैं जानता



हूं। यातैं यह त्वचा मैं नहीं औ यह मेरी नहीं। यह पृथिवीकी है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥ २४ ॥

रोमः—बहुत होवैं तिनकूं बी मैं जानता हूं औ रोम कमती होवैं तब तिनके कमतीपनेकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये रोम मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पृथिवीके हैं। मैं इनका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ २५ ॥

इसरीतिसैं पचीसतत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह समजना ॥

प्रश्नः— "पचीसतत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं" इस जाननैसैं क्या निश्चय भया?

उत्तरः— स्थूलदेह औ तिसके धर्म जो १ नाम। २ जाति। ३ आश्रम। ४ वर्ण।

५ संबंध। ६ परिमाण । ७ जन्ममरण। इत्यादिक बी मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह निश्चय भया ॥

प्रश्नः– नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः– जन्मसैं प्रथम नाम नहीं था औ जन्मके अनंतर नाम कल्पित है औ शरीरके भिन्न भिन्न अंगनविषै विचार कियेतैं नाम मिलता नहीं। यातैं यह नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह स्थूलदेहविषै कल्पित है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥ ऐसै नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना ॥ १ ॥

प्रश्नः–जाति (वर्ण) मै नहीं औ मेरी नहीं। यह कैसैं जाननना ?

उत्तरः– ब्राह्मणादिक जाति स्थूलदेहका धर्म है। सूक्ष्मदेह औ आत्माका धर्म नहीं ॥ काहे-

तें। लिंगदेह औ आत्मा तौ जो पूर्वदेहविषै होवै सोई इस वर्तमानदेहविषै औ भावीदेहविषै रहता है। औ जाति तौ जो पूर्वदेहविषै थी सो इस देहविषै नहीं है औ जो इस देहविषै है सो आगिले देहविषै रहेगी नहीं। यातैं जाति स्थूलदेहकाहीं धर्म है। लिंगदेहका औ आत्माका धर्म नहीं है॥ औ शरीरके अंगनविषै विचारिके देखिये तौ स्थूलदेहविषै जाति मिले नहीं। यातैं यह जाति मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह स्थूलदेहविषै आरोपित है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥ ऐसैं जाति मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना॥ २॥

प्रश्नः— आश्रम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः— ब्रह्मचारी। गृहस्थ। वानप्रस्थ। औ

संन्यासी । ये च्यारीआश्रम भिन्नभिन्नकर्म करावनेके लिये आरोपकरिके स्थूलदेहविषै माने हैं । सो बी मनुष्यमात्रविषै संभवते नहीं । यातैं ये आश्रम मैं नहीं औ मेरे नहीं । ये स्थूलदेहविषै आरोपित हैं । मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इनतैं न्यारा हूं ॥ ऐसैं आश्रम मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥ ३ ॥

प्रश्नः—वर्ण (रंग) मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—गौर श्याम रक्त पीत इत्यादि जो रंग हैं । सो स्थूलदेहविषै प्रत्यक्ष देखिये हैं । जातैं मैं स्थूलदेह नहीं । तातैं ये रंग मैं नहीं औ मेरे नहीं । ये स्थूलदेहके हैं ॥ मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इनतैं न्यारा हूं॥ ऐसैं वर्ण मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥४॥

प्रश्नः—संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः— पितापुत्र गुरुशिष्य स्त्रीपुरुष स्वामिसेवक । इत्यादिसंबंध स्थूलदेहके परस्पर प्रसिद्ध मिथ्या माने हैं औ विचार कियेसैं मिलते नहीं ॥ जातैं मैं स्थूलदेहसैं न्यारा असंग । यातैं ये संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं । ये स्थूलदेहविषै आरोपित हैं । मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ ऐसैं संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥९॥

प्रश्नः— परिमाण (आकार) मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—लंबाटूंका जाडापतला टेढासूधा । इत्यादि आकार बी प्रसिद्ध स्थूलदेहविषै देखिये हैं । जातैं मैं स्थूलदेहतैं न्यारा निराकार हूं ।

यातैं ये आकार मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये स्थूलदेहके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इनतैं न्यारा हूं ॥ ऐसै परिमाण मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना ॥ ६ ॥

प्रश्नः— मैं जन्ममरणवान् नहीं। औ मेरेकूं जन्म मरण होवैं नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—आत्माका जन्म मानिये तौ आत्मा अनित्य होवैगा। सो वार्ता मीमांसकसैं आदिलेके परलोकवादी जो आस्तिक हैं। तिनकूं इष्ट नहीं ॥ काहेतैं। जो आत्मा उत्पत्तिवान् होवै तौ नाशवान् बी होवैगा। तातैं पूर्वजन्मविषै नहीं किये कर्मसैं सुखदुःखका भोग औ इसजन्मविषैं किये कर्मका भोगसैं विना नाश। ये दो दूषण होवैंगे। यातैं कर्मवादीके मतसैं आत्माकूं जो कर्त्ताभोक्ता मानिये। तौ बी जन्ममरणरहितहीं

मानना होवैगा ॥ औ आत्माके जन्मका कोई कारण बी संभवै नहीं ॥ काहेतें । आत्माका जो कारण होवै सो आत्मातें भिन्नहीं चाहिये । औ आत्मातें भिन्न तौ अनात्मा नाम रूप हैं । सो तौ आत्माविषै रज्जुसर्पकी न्याई कल्पित हैं । यातें कारण बनैं नहीं ॥ औ ब्रह्म तौ घटाकाशके स्वरूप महाकाशकी न्याई आत्माका स्वरूपहीं है । तिसतें भिन्न नहीं । यातें सो कारण बनै नहीं ॥ तातें आत्माका जन्म नहीं ॥ औ जातें जन्म नहीं तातें आत्माका मरण बी नहीं । औ जातें आत्माविषै जन्ममरणका अभाव है । तातें १ जायते (जन्म)। २ अस्ति (प्रगटता)। ३ वर्धते (वृद्धि) । ४ विपरिणमते (विपरिणाम) । ५ अपक्षीयते (अपक्षय)। ६ नश्यति (मरण)। इन षट्विकारनतें बी

आत्मा रहित है ॥ यातैं मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरेकूं जन्ममरण होवैं नहीं । ये स्थूलदेहकूं कर्मसैं होवै हैं ॥ मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ ऐसैं मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरेकूं जन्ममरण होवै नहीं । यह जानना ॥ ७ ॥

प्रश्नः– पंचमहाभूतनकी निवृत्तिविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः– दृष्टांतः– जैसै कोइकूं भूत लग्या होवै । सो धानक (भोया)कूं बुलायके डमरु बजायके लवणादि पांचवस्तु मिलायके तिसका बलिदान देके भूतकी निवृत्ती करै है ॥ सिद्धांतः– तैसैं आकाशादिक पंचमहाभूत शरीररूप होयके जीवकूं लगे हैं । तिनकी निवृत्ति वास्ते ब्रह्मनिष्ठगुरुरूप धानक (भोया)के

विधिपूर्वक शरण जायके वेदशास्त्ररूप डमरु (डाक) बजायके ऊपर कहे जो पचीसतत्त्व । तिनमैंसैं पांचपांचतत्त्वरूप बलिदान एकएकभूतकूं आपआपका भाग अर्पण करिके । मैं इन पचीसतत्त्वनका द्रष्टा हूं । इसरीतिसैं निश्चय करनैतैं इन पांचमहाभूतनकी अँत्यंतनिवृत्ति होवै है ॥

इसरीतिसैं स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

॥ ४७ ॥ विवेकादि शुभगुणसहित मोक्षकी इच्छावाला अधिकारी हाथमैं भेटा लेके गुरुके शरण होयके साष्टांगनमस्कार करिके । "हे भगवन् । मेरेकूं ब्रह्मविद्याका उपदेश करो ।" ऐसैं कहिके "बंध किसकूं कहिये । मोक्ष किसकूं कहिये । अविद्या किसकूं कहिये औ विद्या किसकूं कहिये?" इत्यादि प्रश्न करे । औ गुरुकी प्रसन्नता वास्ते तन मन धन वाणी अर्पण करिके सेवा करे। यह ब्रह्मविद्याके ग्रहणका विधि है ॥

॥४८॥ पीछे लगे नहीं ।यह अत्यंतनिवृत्ति है ॥

॥ सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

प्रश्नः— सूक्ष्मदेह सो क्या है?

उत्तरः— अपंचीकृत पंचमहाभूतके सतरातत्त्वका सूक्ष्मदेह है ॥

प्रश्नः— सूक्ष्मदेहके सतरातत्त्व कौनसैं हैं?

उत्तरः— पांचज्ञानइंद्रिय । पांचकर्मइंद्रिय । पांचप्राण । मन औ बुद्धि । ये सतरातत्त्व हैं ॥

प्रश्नः— पांच[४९]ज्ञानइंद्रिय कौनसैं हैं?

उत्तरः— श्रोत्र त्वचा चक्षु जिव्हा औ घ्राण। ये पंचज्ञानइंद्रिय हैं ॥

प्रश्नः— पांच[५०]कर्मइंद्रिय कौनसैं हैं?

उत्तरः— वाक् पाणि पाद उपस्थ औ गुद। ये पांचकर्मइंद्रिय हैं ॥

॥ ४९ ॥ ज्ञानके साधन इंद्रिय ॥

॥ ५० ॥ कर्मके साधन इंद्रिय ॥

प्रश्नः— पांचप्राण कौनसें हैं ?

उत्तरः— प्राण अपान समान उदान औ व्यान। ये पांच प्राण हैं ॥

प्रश्नः— मन कोनकूं कहिये ?

उत्तरः— संकल्पविकल्परूप जो वृत्ति। ताकूं मन कहिये ॥

प्रश्नः— बुद्धि किसकूं कहिये ?

उत्तरः— निश्चयरूप जो वृत्ति। ताकूं बुद्धि कहिये ॥

प्रश्नः—अपंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये ?

उत्तरः— जिन भूतनका पूर्व कही रीतिसें पंचीकरण न भया होवै। तिन भूतनकूं अपंचीकृतपंचमहाभूत कहिये। तिनहींकूं सूक्ष्मभूत औ तन्मात्रा बी कहै हैं ॥

प्रश्नः— अपंचीकृतपंचमहाभूतनके सतरातत्त्व कैसें जाननैं ?

उत्तरः—

पांचज्ञानइंद्रिय औ पांच कर्मइंद्रियविषैः—

॥१–२॥ आकाशके सत्वगुणका भाग श्रोत्र है औ आकाशके रजोगुणका भाग वाक् है ॥ श्रोत्रइंद्रिय शब्दकूं सुनता है । औ वाक्इंद्रिय-शब्दकूं बोलता है ॥ श्रोत्र ज्ञानइंद्रिय है औ वाक् कर्मइंद्रिय है । इन दोनूंकी मित्रता है ॥

॥३–४॥ वायुके सत्वगुणका भाग त्वचा है औ वायुके रजोगुणका भाग पाणि है ॥ त्वचा-इंद्रिय स्पर्शकूं ग्रहण करै है औ हस्तइंद्रिय तिसका निर्वाह करै है ॥ त्वचा ज्ञानेंद्रिय है औ हस्त कर्मेंद्रिय है ॥ इन दोनूंकी मित्रता है ॥

॥५१॥ सर्वपदार्थनमें सत्व रज तम। ये तीनगुण वर्तते हैं

॥५–६॥ तेजके सत्वगुणका भाग चक्षु है औ तेजके रजोगुणका भाग पाद है ॥ चक्षुइंद्रिय रूपका ग्रहण करै है औ पादइंद्रिय तहां गमन करै है ॥ चक्षु ज्ञानेंद्रिय है औ पाद कर्मेंद्रिय है ॥ इन दोनूंकी मित्रता है ॥

॥७–८॥ जलके सत्वगुणका भाग जिव्हा है औ जलके रजोगुणका भाग उपस्थ है ॥ जिव्हा-इंद्रिय रसका ग्रहण करै है औ उपस्थइंद्रिय रसका त्याग करै है ॥ जिव्हा ज्ञानेंद्रिय है औ उपस्थ कर्मेंद्रिय है ॥ इन दोनूंकी मित्रता है ॥

॥९–१०॥ पृथिवीके सत्वगुणका भाग घ्राण है औ पृथिवीके रजोगुणका भाग गुद है ॥ घ्राणइं-द्रिय गंधका ग्रहण करै है औ गुदइंद्रिय गंधका त्याग करै है ॥ घ्राण ज्ञानेंद्रिय है औ गुद कर्में-द्रिय है । इन दोनूंकी मित्रता है ॥

पांचप्राण औ मनबुद्धिविषैः–

॥११–१५॥ इन पांचभूतनके रजोगुणके भाग मिलिके पांचप्राण भये है ॥ औ

॥१६–१७॥ इन पांचभूतनके सत्त्वगुणके भाग मिलिके अंतःकरण भया है ॥ यहहीं अंतःकरण मन औ बुद्धिरूप है ॥ इहां चित्त औ अहंकारका । मन औ बुद्धिविषै अंतर्भाव है ॥ ऐसैं अपंचीकृतपंचमहाभूतनके कार्य । सतरातत्त्व जानने ॥

प्रश्नः– सतरातत्त्वके समजनैका क्या फल है ?

उत्तरः– ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं । ये अपंचीकृतपंचमहाभूतके है । यह सतरातत्त्वके समज़नेका फल है ॥

प्रश्नः– ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह किस कारणसैं जानना ?

उत्तरः– इन सतरातत्त्वका मैं जाननैहारा हूं ॥ जो जिसकूं जाने सो तिसतैं न्यारा होवै है । यह नियम है ॥ इस कारणसैं ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥

प्रश्नः–इसविषै दृष्टांत क्या समजना ?

उत्तरः– दृष्टांतः–जैसैं नृत्यशालाविषै स्थित दीपक । राजा प्रधानादिक नायका वाजंत्री औ अन्य सभाके लोक बैठे होवैं । तब बी प्रकाशे है औ सर्व उठि जावै तब शून्यग्रहकूं बी प्रकाशे है ॥ सिद्धांतः–तैसैं स्थूलदेहरूप नृत्यशालाविषै साक्षीरूप जो मैं दीपक हूं । सो चिदाभासरूप राजा औ मनरूप प्रधान औ पांचप्राणरूप अनुचर औ बुद्धिरूप नायका औ दशइंद्रियरूप वाजंत्री औ शब्दादि पंचविषयरूप सभाके लोक । ये जाग्रत्स्वप्नसमयविषै होवै तब

इसकूं प्रकाशता हूं औ सुषुप्तिसमयविषै ये न होवैं तब तिनके अभावकूं बी मैं प्रकाशता हूं ॥ इसविषै यह उक्त दृष्टांत समजना ॥

प्रश्नः– सो कैसैं समजना ?

उत्तरः– जागृत्अवस्थाविषै इंद्रिय औ अंतःकरण दोनूंकी सहायतासैं मैं प्रकाशता हूं (जानता हूं)। औ स्वप्नअवस्थाविषै इंद्रियनसैं विना केवल अंतःकरणकी सहायतासैं मैं प्रकाशता हूं। औ सुषुप्तिअवस्थाविषै इंद्रिय औ अंतःकरण दोनूंकी सहायता विना केवल मैंही प्रकाशता हूं। ऐसैं समजना ॥

प्रश्नः–इसविषै औरदृष्टांत क्या है ?

उत्तरः– दृष्टांतः– जैसै पांचछिद्रवाले घटके भीतर पात्र तैल औ बत्तीसहित दीपक जलता है। सो दीपक। पात्र तैल बत्ती घटके भीतरके

अवयव औ घटके छिद्रनकूं प्रकाशता हुया घटके बाहिर छिद्रनके सन्मुख क्रमतैं धरे जो वीणा। पुष्पनका गुच्छ। मणि। रसपात्र। औ अत्तरकी सीसी। तिन सर्वकूं छिद्रद्वारा प्रकाशता है औ सूर्यरूपसैं सारै ब्रह्मांडकूं प्रकाशता है। औ महातेजमय सामान्यरूपसैं सर्वव्यापी है॥

सिद्धांतः— तैसै पांचज्ञानेंद्रियरूप छिद्रवाले स्थूलदेहरूप घटके भीतर हृदयकमलरूप पात्र है। तामैं मनरूप तैल है औ बुद्धिरूप बत्ती है। तापर आरूढ आत्मारूप दीपक है। सो हृदयरूप पात्रकूं औ मनरूप तैलकूं औ बुद्धिरूप बत्तीकूं औ देहके भीतरके अवयवनकूं औ इंद्रियरूप छिद्रनकूं प्रकाशता (जानता) हुया। इंद्रियनसैं संबंधवाले शब्दादिक विषयनकूं बी इंद्रियद्वारा प्रकाशता है। औ ईश्वररूपसैं ब्रह्मांडादि सर्वबाह्यप्रपंचकूं प-

काशता है। औ सामान्यचैतन्य ब्रह्मरूपसैं सर्वव्यापी है ॥ यह इसविषै और दृष्टांत है ॥

प्रश्नः— ऐसैं कहनैसैं क्या निर्णय भया ?

उत्तरः— कहे जो सतरातत्त्व सो मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पंचमहाभूतके हैं ॥ मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनसैं न्यारा हूं। यह निर्णय भया ॥

प्रश्नः— सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। सो किसरीतिसैं समजना ?

उत्तरः—

पांचज्ञानइंद्रियविषैः—

॥ १ ॥ श्रोत्रः— शब्दकूं सुनै तिसकूं बी मैं

॥ ५२ ॥ इहां और यज्ञशालाका दृष्टांत है। सो आगे ७ वीं कलाविषै उपद्रष्टारूप आत्माके विशेषणके प्रसंगमैं कहियेगा ॥

जानता हूं औ न सुनै तब तिस सुननैके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह श्रोत्र मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह आकाशका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इसतैं न्यारा हूं॥

॥ २ ॥ त्वचाः— स्पर्शकूं ग्रहण करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करनैके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह त्वचा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह वायुकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इसतैं न्यारा हूं॥

॥ ३ ॥ चक्षुः— रूपकूं देखे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ न देखे तब तिस देखनेके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह चक्षु मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह तेजका है। मैं इसका जान-

नैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

॥ ४ ॥ जिव्हाः— रसका स्वाद लेवे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ स्वाद न लेवे तब तिस स्वाद लेनेके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह जिव्हा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जलकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

॥ ५ ॥ घ्राणः— गंधका ग्रहण करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ न ग्रहण करे तब तिस ग्रहण करनैके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह घ्राण मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

कर्मइंद्रियविषैः—

॥ ६ ॥ वाक्ः— (वाचा) बोले तिसकूं बी

मैं जानता हूं औ न बोले तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह वाक् मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह आकाशकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

॥ ७ ॥ पाणिः– (हस्त) लेना देना करे तिसकूं बी मैं जानता हूं औ न करे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये हस्त मैं नहीं औ मेरे नहीं ये वायुके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥

॥ ८ ॥ पादः– चले तिसकूं बी मैं जानता हूं औ न चले तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये पाद मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये तेजके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥

॥ ९ ॥ उपस्थः– रस (मूत्र औ वीर्य)का

त्याग करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ त्याग न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह उपस्थ मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जलका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्र-ष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥

॥ १० ॥ गुदः– मलका त्याग करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ त्याग न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह गुद मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥

प्राण औ अंःतकरणविषैः–

॥ ११–१५ ॥ पांचप्राणः–क्रिया करैं तिसकूं बी मैं जानता हूं औ क्रिया न करैं तब क्रियाके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं ये प्राण मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये मिले हुये

पंचमहाभूतके हैं ॥ मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इनतैं न्यारा हूं ॥

॥ १६ ॥ मनः– संकल्पविकल्प करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातैं यह मन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह मिले हुये पंचमहाभूतका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इसतैं न्यारा हूं ॥

॥ १७ ॥ बुद्धिः– निश्चय करै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ निश्चय न करै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातै यह बुद्धि मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह मिले हुये पंचमहाभूतकी है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याईं इसतैं न्यारा हूं ॥ इसरीतिसैं ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह समजना ॥

प्रश्नः—ऐसैं कहनैसैं क्या निश्चय भया ?

उत्तरः—१ लिंगदेह औ तिसके धर्म पुण्यपापका कर्त्तापना औ तिनके फल सुखदुःखका भोक्तापना। २ औ इसलोक परलोकविषै गमनआगमन । ३ औ वैराग्यशमदमादि सात्त्विकीवृत्तियां ।औ रागद्वेषहर्षादि राजसीवृत्तियां । औ निद्राआलस्यप्रमादादि तामसीवृत्तियां । ४ तैसैं क्षुधातृषा अंधमंदपटुपना इत्यादिक मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह निश्चय भया ॥

प्रश्नः—पुण्यपापका कर्त्ता औ तिनके फल सुखदुःखका भोक्ता मैं कैसैं नहीं औ कर्त्तापना भोक्तापना मेरा धर्म नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—जो वस्तु विकारी होवै सो क्रियावान् होनैतैं कर्ता कहिये है । मैं निर्विकार कू-

टस्थ होनैंतैं क्रियाका आश्रय नहीं। यातैं पुण्यपापरूप क्रियाका मैं कर्त्ता नहीं। औ जो कर्त्ता नहीं सो भोक्ता बी होवै नहीं ॥ यातैं ये अंतःकरणके धर्म हैं। मेरे नहीं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं। ऐसैं जानना ॥ १ ॥

प्रश्नः–इसलोक परलोकविषै गमनआगमन मेरे धर्म नहीं। यह कैसै जानना?

उत्तरः–अंतःकरण (लिंगदेह) परिच्छिन्न है। तिसका प्रारब्धकर्मके बलसैं गमनआगमन संभवै हैं॥ औ मैं आकाशकी न्याई व्यापक हूं। यातैं मेरे धर्म गमनआगमन नहीं। ऐसैं जानना ॥२॥

प्रश्नः–सात्विकी राजसी औ तामसीवृत्तियां मैं नहीं औ मेरा धर्म नहीं। यह कैसैं जानान?

उत्तरः– दृष्टांतः– जैसैं कोई महलमैं बैठे

राजाके विनोदअर्थ कोई कारीगर कारंजा बनावे है। तिस कारंजेकी कलके खोलनेसैं जलकी तीनधारा निकसतीयां हैं। तिन तीनधाराके भीतर प्रवाहरूपसैं अनंतधारा निकसतीयां हैं। जब सो कल बंध करिये तब तीनधारा बंध होयके अकेला राजाही बाकी रहता है॥ सिद्धांतः— तैसैं स्थूलशरीररूप महलमैं अधिष्ठान कूटस्थरूपकरि स्थित परमात्मारूप राजा है। तिसके विनोदअर्थ माया (अज्ञान)रूप कारिगरनें अंतःकरणरूप कारंजा किया है। जाग्रत् स्वप्नविषै तिसकी प्रारब्धरूप कलके खोलनेसैं तीनगुणके प्रवाहरूप तीनधारा निकसतीयां हैं। तिन तीनधाराके भीतरसैं अगणितवृत्तियां उठतीयां हैं। औ सुषुप्तिविषै प्रारब्धकर्मरूप कलके बंध हुयेतैं तिन वृत्तियांके भावअभावका

प्रकाशक आनंदस्वरूप केवलपरमात्मारूप राजा बाकी रहता है। सोई मैं हूं। यातें ये सात्विकी राजसी तामसी वृत्तियां मैं नहीं औ मेरी नहीं। ये अंतःकरणकी हैं॥ मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतें न्यारा हूं। ऐसें जानना ॥ ३ ॥

प्रश्नः– अंध मंद औ पटुपना मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह कैसें जानना ?

उत्तरः– नेत्रादिक इंद्रिय आपआपके विषयकूं कछू बी ग्रहण न करैं सो तिनका अंधपना है। तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ विषयकूं स्वल्प ग्रहण करैं सो तिनका मंदपना है। तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ विषयकूं स्पष्ट ग्रहण करैं सो तिनका पटुपना है। तिसकूं बी मैं जानता हूं। यातें ये मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये

इंद्रियनके धर्म हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥ ४ ॥

इसरीतिसैं सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥ २ ॥

॥ कारणशरीरका मैं द्रष्टा हूं ॥

प्रश्नः– कारणदेह सो क्या है?

उत्तरः– पुरुष जब सुषुप्तितैं ऊठे। तब कहता है कि "आज मैं कछू बी न जानता भया" [५३] इसतैं सुषुप्तिविषै अज्ञान है। ऐसा सिद्ध होवै है ॥ औ जाग्रत्‌विषै बी "मैं ब्रह्मकूं जानता नहीं औ मेरी मुजकूं खबर नहीं है। मैं

॥ ५३ ॥ सुषुप्तिसैं उठया जो पुरुष। तिसकूं "मैं कछूबी न जानता भया" ऐसा ज्ञान होवै है। सो ज्ञान अनुभवरूप नहीं है। किंतु सुषुप्तिकालविषै अनुभव किये अज्ञानकी स्मृति है ॥ तिस स्मृतिका विषय सुषुप्तिकालका अज्ञान है ॥

यह नहीं जानता हूं । मैं यह नहीं जानता हूं" इस अनुभवका विषय अज्ञान है । औ स्वप्नका कारण बी निद्रारूप अज्ञान है । ऐसा जो अज्ञान । सो कारणदेह है ॥

प्रश्नः— कारणदेह मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः— "मैं जानता हूं" औ "मैं न जानता हूं" ऐसी जो अंतःकरणकी वृत्तियां हैं । तिनकूं ज्ञातअज्ञातवस्तुरूप विषयसहित मैं जानता हूं । यातें यह कारणदेह मैं नहीं औ मे-

---

॥ ५४ ॥ अज्ञान । स्थूलसूक्ष्मदेहका हेतु है । यातें इसकूं कारण कहते हैं ॥ तत्त्वज्ञानसैं इसका दाह होवै है । यातें इसकूं देह कहते हैं ॥ यह अज्ञान गर्भमंदिरके अंधकारकी न्याई ब्रह्मके आश्रित होयके ब्रह्मकूंहीं आवरण करता है ॥

रा नहीं । यह अज्ञानका[५५] है । मैं इसका जाननै-
हारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं।
यह ऐसैं जानना ॥

इसरीतिसैं कारणदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥ ३ ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये देहत्रयद्रष्टृवर्णन-
नामिका तृतीयकला समाप्ता ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थकलाप्रारंभः ॥ ४ ॥

॥ मैं पंचकोशातीत हूं ॥

प्रश्नः- पंचकोशातीत कहिये क्या ?

उत्तरः-पंचकोशातीत । कहिये पांचकोशनतैं
मैं अतीत । नाम न्यारा हूं ॥

॥ ५५ ॥ कारणदेह आप अज्ञान है । तिसकूं
"अज्ञानका है" ऐसैं कह्या । सो जैसैं राहुकूंहीं रा-
हुका मस्तक कहते हैं । तैसैं है ॥

५

प्रश्नः– कोश कहिये क्या है ?

उत्तरः– कोश नाम तलवारके म्यानका औ धनके भंडारका औ कोशकार नामक कीडेके ग्रहका है ॥ तिनकी न्याई पंचकोश आत्माकूं ढांपें हैं। यातें अन्नमयादिक बी कोश कहावें हैं॥

प्रश्नः– पांचकोशके नाम क्या हैं ?

उत्तरः– १ अन्नमयकोश। २ प्राणमयकोश। ३ मनोमयकोश। ४ विज्ञानमयकोश। ५ औ आनंदमयकोश। ये पांचकोशके नाम हैं॥

प्रश्नः– अन्नमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः– मातापितानें खाया जो अन्न। तिसतें भया जो रज वीर्य। तिसकरि जो माताके उदरविषै उत्पन्न होता है। फेर जन्मके अनंतर क्षीरादिक अन्नकरिके जो वृद्धिकूं पावता है। फेर मरणके अनंतर अन्नमयपृथिवीविषै लीन

होता है। ऐसा जो स्थूलदेह। सो अन्नमयकोश है॥

प्रश्नः— अन्नमयकोश कैसा है?

उत्तरः— सुखदुःखके अनुभवरूप भोगका स्थान है॥

प्रश्नः— अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसैं जानना?

उत्तरः— जन्मतैं प्रथम औ मरणतैं पीछे अन्नमयकोश (स्थूलशरीर)का अभाव है। यातैं यह उत्पत्तिनाशवान् होनेतैं घटकी न्याई कार्य है। औ मैं सदा भावरूप हूं। तातैं उत्पत्तिनाशरहित होनेतैं इसतैं विलक्षण हूं। यातैं यह अन्नमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह स्थूलदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं॥ इसरीतिसैं अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥ १॥

प्रश्नः— प्राणमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः— पांचकर्मइंद्रियसहित पांचप्राण । सो प्राणमयकोश है ॥

प्रश्नः— पांचकर्मइंद्रिय औ पांचप्राण कौनसे हैं ?

उत्तरः— पांचकर्मइंद्रिय औ पांचप्राण पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहेहैं ॥

प्रश्नः—पांचप्राणके स्थान औ क्रिया कौन हैं ?

उत्तरः— (१) प्राणवायुः— हृदयस्थानविषै रहता है औ प्रत्येकदिनरात्रिविषै २१६०० श्वासउच्छ्वास लेनेरूप क्रियाकूं करता है ॥

(२) अपानवायुः— गुदस्थानविषै रहता है औ मलमूत्रके उत्सर्गरूप क्रियाकूं करता है ॥

(३) समानवायुः— नाभिस्थानविषै रहता है औ कूपजलकूं बगीचेविषै मालीकी न्याई

भोजन किये अन्नके रसकूं निकासिके नाडीद्वारा सर्वशरीरविषै पहुचावनैरूप क्रियाकूं करता हैं ॥

(४) उदानवायुः– कंठस्थानविषै रहता है। औ खाए पिए अन्नजलके विभागकूं करता है। तथा स्वप्न हींचकी आदिकके दिखावनेरूप क्रियाकूं करता है ॥

(५) व्यानवायुः– सर्वांगस्थानविषै रहता है औ सर्वअंगनकी संधिनके फेरनैरूप क्रियाकूं करता है ॥ इसरीतिसैं पांचप्राणके मुख्यस्थान औ क्रिया हैं ॥

प्रश्नः– प्राणादि वायु शरीरविषै क्या करते हैं ?

उत्तरः– प्राणादि वायु सारेशरीरविषै पूर्ण होयके शरीरकूं बल देते हैं औ इंद्रियनकूं आप-

आपके कार्यविषै प्रवृत्तिरूप क्रियाके साधन होते हैं ॥

प्रश्नः– प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसें जानना ?

उत्तरः– निद्राविषै पुरुष सोया होवै तब प्राण जागता है। तौ बी कोई स्नेही आवै तिसका सन्मान करता नहीं औ चोर भूषण ले जावै तिसकूं निषेध करता नहीं। तातैं यह प्राणवायु घटकी न्याई जड है। औ मैं चैतन्यरूप इसतैं विलक्षण हूं। यातैं यह प्राणमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप हैं ॥ मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं ॥ इसरीतिसैं प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना ॥ २ ॥

प्रश्नः– मनोमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः— पांचज्ञानइंद्रियसहित मन । सो मनोमयकोश है ॥

प्रश्नः— पांचज्ञानइंद्रिय औ मन कौन हैं ?

उत्तरः— ये पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहेहैं ॥

प्रश्नः— मन कैसा है ?

उत्तरः— देहविषै अहंता औ ग्रहादिकविषै ममतारूप अभिमानकूं करता हुया इंद्रियद्वारा बाहीर गमन करता हुवा करणरूप है ॥

प्रश्नः— मनोमयकोशतैं मैं न्यारा हूं । यह किसरीतिसैं जानना ?

उत्तरः— कामक्रोधादिवृत्तियुक्त होनैतैं मन नियमरहित स्वभाववाला है । तातैं विकारी है ॥ औ मैं सर्ववृत्तिनका साक्षी निर्विकार हूं । यातैं यह मनोमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं ।

यह सूक्ष्मदेहरूप है। मैं इसका जाननेहारा आत्मा इनतें न्यारा हूं॥ इसरीतिसैं मनोमयकोशतें मैं न्यारा हूं। यह जानना ॥ ३ ॥

प्रश्नः– विज्ञानमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः– पांचज्ञानइंद्रियसहित बुद्धि । सो विज्ञानमयकोश है ॥

प्रश्नः– ज्ञानइंद्रिय औ बुद्धि कौन हैं ?

उत्तरः– ये पूर्व लिंगदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं ॥

प्रश्नः– बुद्धि कैसी है ?

उत्तरः–सुषुप्तिविषै चिदाभासयुक्त बुद्धि विलीन होवै है औ जाग्रत्विषै नखके अग्रभागतें लेके शिखापर्यंत शरीरविषै व्यापिके वर्त्तती हुयी कर्त्तारूप है ॥

प्रश्नः— विज्ञानमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—बुद्धि। घटादिककी न्याई विलय आदि अवस्थावाली होनैतैं विनाशी है। औ मैं विलय आदि अवस्थारहित होनैतैं इसतैं विलक्षण अविनाशी हूं। यातैं यह विज्ञानमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं। इसरीतिसैं विज्ञानमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥४॥

॥५६॥ जैसैं दीपकका प्रकाश औ आकाश अभिन्न प्रतीत होवै हैं। तौबी भिन्न हैं। औ जैसैं तप्तलोहविषै अग्नि औ लोह अभिन्न प्रतीत होवै हैं। तौबी भिन्न हैं। तैसैं अंतःकरण औ आत्मा अभिन्न प्रतीत होवै हैं। तौबी भिन्न हैं ॥ काहेतैं। सुषुप्तिविषै अंतःकरणके लय-हुवे आत्माकूं अज्ञानका साक्षी होनैकरि प्रतीयमान होनैतैं ॥

प्रश्नः— आनंदमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः— पुण्यकर्मफलके अनुभवकालविषै कदाचित् बुद्धिकी वृत्ति अंतर्मुख हुयी आत्मस्वरूपभूत आनंदके प्रतिबिंबकूं भजती है औ जो प्रिय मोद प्रमोदरूप कहिये है। सोई वृत्ति पुण्यकर्मफलके भोगकी निवृत्तिके हुये निद्रारूपसैं विलीन होवै है। सो वृत्ति आनंदमयकोश है ॥

प्रश्नः— आनंदमयकोश कैसा है ?

उत्तरः—इष्टवस्तुके दर्शनसैं उत्पन्न प्रियवृत्ति जिसका शिर है औ इष्ट वस्तुके लाभसैं उत्पन्न मोदवृत्ति जिसका एक (दक्षिण)पक्ष है औ इष्टवस्तुके भोगसैं उत्पन्न प्रमोदवृत्ति जिसका द्वितीय (वाम)पक्ष है औ बुद्धि वा अज्ञानकी वृत्तिविषै आत्मस्वरूपभूत आनंदका प्रतिबिंब जिसका स्वरूप है औ बिंबरूप आत्माका स्व-

रूपभूत आनंद जिसका पुच्छ[५७] (आधार) है। ऐसा पक्षीरूप भोक्ता आनंदमयकोश है ॥

प्रश्नः– आनंदमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह किसरीतिसैं जानना ?

उत्तरः– आनंदमयकोश बादल आदिक पदार्थनकी न्याई कदाचित् होनेवाला है। यातैं क्षणिक है औ मैं सर्वदा स्थित होनैंतैं नित्य हूं। यातैं यह आनंदमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कारणदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं॥ इसरीतिसैं आनंदमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना ॥ ९ ॥

॥ ५७ ॥ ब्रह्मरूप आनंद आधार होनैंतैं श्रुतिविषे पुच्छशब्दकरि कहा है ॥

॥ ५८ ॥ ऐसैं अन्य च्यारीकोशनकी पक्षीरूपता अस्मत्कृत तैत्तिरीयउपनिषद्के भाषाटीकाविषै सविस्तर लिखी है। जाकूं इच्छा होवै सो तहां देख लेवै ॥

प्रश्नः– विद्यमान अन्नमयादिककोश जब आत्मा नहीं। तब कौन आत्मा है?

उत्तरः–बुद्धि आदिकविषै प्रतिबिंबरूपकरि स्थित औ प्रिय आदिक शब्दसैं कहिये है ऐसा जो आनंदमयकोश है। तिसका बिंबरूप कारण जो आनंद है। सो नित्य होनैतें आत्मा है॥

प्रश्नः– पांचकोश जो हैं सोई अनुभवविषै आवते हैं। तिनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यातैं पांचकोशतैं न्यारा आत्मा है। यह निश्चय कैसैं होवै?

उत्तरः–यद्यपि पांचकोशहीं अनुभवविषै आवते हैं। इनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यह वार्त्ता सत्य है। तथापि जिस अनुभवतैं ये पांचकोश जानिये हैं। तिस अनुभ-

वक्रूं कौन निवारण करैगा । कोइ बी निवारण करि शके नहीं ॥ यातैं पांचकोशनका अनुभवरूप जो चैतन्य है । सो पांचकोशनतैं न्यारा आत्मा है ॥

प्रश्नः– आत्मा कैसा है ?

उत्तरः–सत् चित् आनंद आदिस्वरूप है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये पंचकोशातीतवर्णननामिका चतुर्थकला समाप्ता ॥ ४ ॥

अथ पंचमकलाप्रारंभः ॥ ५ ॥

॥ तीनअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

प्रश्नः– तीनअवस्था कौनसी हैं ?

उत्तरः– १ जाग्रत्[५९] ।

॥ ५९ ॥ स्वप्न औ सुषुप्तितैं भिन्न इंद्रियजन्य ज्ञानका औ इंद्रियजन्य ज्ञानके संस्कारका आधारकाल । सो जाग्रत्अवस्था कहिये है ॥

२ स्वप्न[६०]। ३ औ सुषुप्ति[६१]। ये तीनअवस्था हैं ॥

प्रश्नः– जागृत्अवस्था सो क्या है ?

उत्तरः– चौदाइंद्रिय अध्यात्म[६२] हैं । तिनके चौदादेवता [६३]अधिदेव हैं । तिनके चौदाविषय

॥ ६० ॥ इंद्रियसैं अजन्य । विषयगोचर अंतः-करणकी अपरोक्षवृत्तिका काल । स्वप्नअवस्था कहिये है ॥

॥ ६१ ॥ सुखगोचर औ अविद्यागोचर अविद्याकी वृत्तिका काल । सुषुप्तिअवस्था कहिये है ॥

॥ ६२ ॥ आत्माकूं आश्रय करिके वर्तमान जो इंद्रियादिक । सो अध्यात्म कहिये है ॥

॥ ६३ ॥ स्वसंघातसैं भिन्न होवै औ चक्षुइंद्रियका अविषय होवै । सो अधिदेव कहिये है ॥

अधिभूत[६४] हैं । इन बेचालीस तत्त्वनसैं जिसविषै व्यवहार होवै । सो जाग्रत्[६५] अवस्था है ॥

प्रश्नः– चौदाइंद्रिय कौनसे हैं ?

उत्तरः– ज्ञानइंद्रिय पांचः– १ श्रोत्र । २ त्वचा । ३ चक्षु । ४ जिव्हा । ५ औ घ्राण ॥

कर्मइंद्रिय पांचः– ६ वाक् । ७ पाणि । ८ पाद । ९ उपस्थ । १० औ गुद ॥

अंतःकरण च्यारीः– ११ मन । १२ बुद्धि । १३ चित्त । १४ औ अहंकार ॥ ये चौदाइंद्रिय अध्यात्म हैं ॥

॥ ६४ ॥ स्वसंघातसैं भिन्न होवै औ चक्षुआदि-इंद्रियका विषय होवै । सो अधिभूत कहिये है ॥

॥ ६५ ॥ यह स्थूलदृष्टिवाले पुरुषनकूं जाननै योग्य जाग्रत्का लक्षण है । तैसैंही स्वप्न सुषुप्तिविषै बी जानना ॥

प्रश्नः– चौदाइंद्रियनके चौदादेवता कौन-हैं ?

उत्तरः– ज्ञानइंद्रिय पांचके देवताः–

१ श्रोत्रइंद्रियका देवता । दिशा ॥
२ त्वचाइंद्रियका देवता । वायु ॥
३ चक्षुइंद्रियका देवता । सूर्य ॥
४ जिव्हाइंद्रियका देवता । वरुण ॥
५ घ्राणइंद्रियका देवता । अश्विनीकुमार ॥

कर्मइंद्रिय पांचके देवताः–

६ वाक्इंद्रियका देवता । अग्नि ॥
७ हस्तइंद्रियका देवता । इंद्र ॥
८ पादइंद्रियका देवता । वामनजी ॥
९ उपस्थइंद्रियका देवता । प्रजापति ॥
१० गुदइंद्रियका देवता । यम ॥

अंतःकरण च्यारीके देवताः–

११ मनइंद्रियका[66] देवता । चंद्रमा ॥
१२ बुद्धिइंद्रियका देवता । ब्रह्मा ॥
१३ चित्तइंद्रियका देवता । वासुदेव ॥
१४ अहंकारइंद्रियका देवता । रुद्र ॥
ये चौदादेवता अधिदैव हैं ॥

प्रश्नः—चौदाइंद्रियनके चौदाविषय कौनसे हैं ?

उत्तरः— ज्ञानइंद्रिय पांचके विषयः—

१ शब्द । २ स्पर्श । ३ रूप । ४ रस । ५ गंध ॥

कर्मइंद्रिय पांचके विषयः—

६ वचन । ७ आदान । ८ गमन । ९ रति-भोग । १० मलत्याग ॥

अंतःकरण च्यारीके विषयः—

११ संकल्पविकल्प[67]। १२ निश्चय। १३ चिंतन।

॥ ६६ ॥ अंतरिंद्रियरूप अंतःकरण ॥

॥ ६७ ॥ मनका संकलपविकलप विषय नहीं ।

१४ अहंपना ॥ये चौदाविषय अधिभूत हैं ॥

प्रश्नः– अध्यात्म अधिदैव अधिभूत । ये तीनतीन मिलिके क्या कहिये हैं ?

उत्तरः– अध्यात्मादि तीन पुट (आकार) मिलिके त्रिपुटी कहिये हैं ॥

प्रश्नः– चौदात्रिपुटी किसरीतिसैं जाननी ?

उत्तरः–॥ ज्ञानइंद्रियनकी त्रिपुटी ॥

इंद्रिय–	देवता–	विषय–
अध्यात्म ॥	अधिदैव ॥	अधिभूत ॥
१ श्रोत्र ।	दिशा ।	शब्द ॥
२ त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ॥
३ चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ॥
४ जिव्हा ।	वरुण ।	रस ॥

किंतु जिस वस्तुका संकल्प होवै । सो वस्तु विषय है ॥ तैसैंही बुद्धि चित्त अहंकार औ कर्मइंद्रियनविषै बी जानना ॥

५ घ्राण । अश्विनीकुमार । गंध ॥

॥ कर्मइंद्रियनकी त्रिपुटी ॥

इंद्रिय- अध्यात्म ॥	देवता- अधिदैव ॥	विषय- अधिभूत ॥
६ वाक् ।	अग्नि ।	वचन (क्रिया) ॥
७ हस्त ।	इंद्र ।	लेना देना ॥
८ पाद ।	वामनजी ।	गमन ॥
९ उपस्थ ।	प्रजापति ।	रतिभोग ॥
१० गुद ।	यम ।	मलत्याग ॥

॥ अंतःकरण ४ की त्रिपुटी ॥

११ मन ।	चंद्रमा ।	संकल्पविकल्प ॥
१२ बुद्धि ।	ब्रह्मा ।	निश्चय ॥
१३ चित्त ।	वासुदेव ।	चिंतन ॥
१४ अहंकार ।	रुद्र ।	अहंपना ॥

इसरीतिसैं चौदात्रिपुटी जाननी ॥

प्रश्नः– इन त्रिपुटीनका क्या स्वभाव है?

उत्तरः– तीनतीन पदार्थनकी जो त्रिपुटी हैं। तिनमैंसैं एक न होवै तो तिसतिसका व्यवहार न चले ॥ जैसैं इंद्रिय औ देवता होवै तिसका विषय न होवै तौ बी व्यवहार न चले। विषय औ इंद्रिय होवै अरु देवता न होवै तौबी व्यवहार न चले। ऐसैं सर्व त्रिपुटीनविषै जानना ॥

प्रश्नः– मेरा क्या स्वभाव है। यह कैसैं जानना?

उत्तरः– त्रिपुटी पुर्ण होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ त्रिपुटी अपूर्ण होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं। तैसैं त्रिपुटीसैं व्यवहार चले तिसकूं बी मैं जानता हूं औ व्यवहार न चले तिसकूं बी मैं जानता हूं। ऐसा मेरा स्वभाव है। यह जानना॥

प्रश्नः– इस कथनसैं क्या सिद्ध भया?

उत्तरः– त्रिपुटीसैं जिसविषै व्यवहार चलता है। ऐसी जाग्रत्अवस्था है। यह सिद्ध भया ॥

प्रश्नः– जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ जाग्रत्के अभिमानसैं तिस (जीव)का नाम क्या है ?

उत्तरः– जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका १ नेत्रस्थान है। २ वैखरी वाचा है। ३ स्थूल भोग है। ४ क्रिया शक्ति है। ५ रजोगुण है। ६ औ जाग्रत्के अभिमानसैं विश्व नाम है ॥

प्रश्नः– जाग्रत्अवस्थाके कहनेसैं क्या सिद्ध भया ?

॥ ६८ ॥ यद्यपि जाग्रत्विषै इस चिदाभासरूप जीवकी नखसैं लेके शिखापर्यंत सारेदेहविषै व्याप्ति है। तथापि मुख्यता करिके सो नेत्रविषै रहता है। यातैं ताका नेत्रस्थान कहिये है ॥

उत्तरः— यह जाग्रत्अवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ स्वप्न सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं जाग्रत्अवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह स्थूलदेहकी है। मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥

इसरीतिसैं जाग्रतअवस्थाका मै साक्षी हूं॥

॥ स्वप्नअवस्थाका मैं साक्षी हूं॥

प्रश्नः— स्वप्नअवस्था सो क्या है?

उत्तरः— जाग्रत्अवस्थाविषै जो पदार्थ देखे होवैं। सुने होवैं। भोगे होवैं। तिनका संस्कार बालके हजारवें भाग जैसी बारीक हिता नामक नाडी जो कंठविषै है तिसविषै रहता है॥ तिससैं निद्राकालमैं पांचविषय आदिक पदार्थ औ तिनका ज्ञान उपजता है। तिनसैं जिसविषै व्य-

वहार होवै सो स्वप्नअवस्था है ॥

प्रश्नः— स्वप्नअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ स्वप्नके अभिमानसैं तिस (जीव)का नाम क्या है ?

उत्तरः—स्वप्नअवस्थाविषै जीवका १ कंठस्थान है। २ मध्यमा वाचा है । ३ सूक्ष्म (वासनामय) भोग है। ४ ज्ञान शक्ति है। ५ सत्त्व[६९] गुण है। ६ औ स्वप्नके अभिमानसैं तैजस नाम है॥

प्रश्नः— स्वप्नअवस्थाके कहनेसैं क्या सिद्ध हुवा ?

उत्तरः— स्वप्नअवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ जाग्रत्‌सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं। यातैं यह स्वप्नअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह सूक्ष्म-

॥ ६९ ॥ कितनेक रजोगुण बी कहतें हैं ॥

देहकी है। मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्याई इसतैं न्यारा हूं। यह स्वप्नके कहनेसैं सिद्ध भया ॥

इसरीतिसैं स्वप्नअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

॥ सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

प्रश्नः— सुषुप्तिअवस्था सो क्या है?

उत्तरः— पुरुष जब निद्रासैं सोयके उठे तब सुषुप्तिविषै अनुभव किये सुख औ अज्ञानका स्मरण करिके कहता है। जो "आज मैं सुखसैं सोयाथा औ कछु बी न जानता भया" यह सुख औ अज्ञानका प्रकाश। साक्षीचेतनरूप अनुभवसैं जिसविषै होवैहै। ऐसी जो बुद्धिकी विलयअवस्था। सो सुषुप्तिअवस्था है ॥

प्रश्नः— सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका स्थान

वाचा भोग शक्ति गुण औ सुषुप्तिके अभिमानसैं तिस (जीव)का नाम क्या है ?

उत्तरः— सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका १ हृदय स्थान है। २ पश्यंति वाचा है। ३ आनंद भोग है। ४ द्रव्य शक्ति है। ५ तम गुण है। ६ औ सुषुप्तिके अभिमानसैं प्राज्ञ नाम है॥

प्रश्नः— सुषुप्तिअवस्थाविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—प्रथमदृष्टांतः— जैसें कोईका भूषण कूपविषै गिऱ्या होवै। तिसके निकासनैकूं कोई तारूपुरुष कूपविषै गिरे। सो पुरुष भूषण मिले तिसकूं बी जानता है औ भूषण न मिले तिसकूं बी जानता है। परंतु कहनेका साधन जो वाक्-इंद्रिय है। तिसके देवता अग्निका जलके साथि विरोध होनैतैं तिरोधान होवै हैं। यातैं कहता नहीं। औ जब पुरुष जलसैं बाहीर निकसै तब

कहनेका साधन देवतासहित वाक्इंद्रिय है । यातैं भूषण मिल्या अथवा न मिल्या सो कहता है ॥

सिद्धांतः– तैसैं सुषुप्तिअवस्थाविषै सुख औ अज्ञानका साक्षीचेतनरूप सामान्यज्ञान है । परंतु विशेषज्ञानके साधन जो इंद्रिय औ अंतःकरण । तिनका तब अभाव है । यातैं सुख औ अज्ञानका विशेषज्ञान होता नहीं । जब पुरुष जागता है तब विशेषज्ञानके साधन इंद्रिय औ अंतःकरण होवैहैं । यातैं सुषुप्तिविषै अनुभव-किये सुख औ अज्ञानका स्मृतिरूप विशेष-ज्ञान होवैहै ॥

द्वितीयदृष्टांतः–जैसैं आतपविषै पिगल्या घृत होवै । सो छायाविषै स्थित होवै तौ घट्टारूप होवै है । फेर आतपविषै स्थित होवै तौ पिगलता है ॥

सिद्धांतः– तैसैं सुषुप्तिविषै कारणशरीररूप

अज्ञान है। सो जाग्रत् स्वप्नविषै बुद्धिरूप होवैहै। फेर सुषुप्तिविषै अज्ञानरूप होवैहै ॥

तृतीयदृष्टांतः– जैसैं कोई बालक लडकनके साथि खेल करनेकूं जावै। सो जब श्रमकूं पावै तब माताके गोदमैं सोयके ग्रहके सुखका अनुभव करता है। फेर जब लडके बुलावैं तब बाहीर जायके खेलकूं करता है ॥

सिद्धांतः– तैसैं कारणशरीर जो अज्ञान। तिसरूप माता है। तिसका बुद्धिरूप बालक कर्मरूप लडकनके साथि जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमिविषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है। जब विक्षेपरूप श्रमकूं पावै। तब सुषुप्तिअवस्थारूप ग्रहविषै अज्ञानरूप मातामैं लीन होयके ब्रह्मानंदका अनुभव करता है। फेर जब कर्मरूप लडके बु-

लावैं तब जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमिविषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है ॥

चतुर्थदृष्टांतः– जैसैं समुद्रजलकरि पूर्ण घटकूं गलेमैं रस्सी बांधके समुद्रविषै लीन करैं। तब घटविषै स्थित जल समुद्रके जलसैं एकताकूं पावता है। तौ बी घटरूप उपाधिकरि भिन्नकी न्याई है। फेर जब रस्सीकूं खींचीये तब भेदकूं पावता है। परंतु जलसहित घट औ समुद्रका आधार जो आकाश सो भिन्न होता नहीं। किंतु तीनकालविषै एकरस है ॥

सिद्धांतः– तैसैं अज्ञानरूप समुद्रजलकरि पूर्ण जो लिंगदेहरूप घट है। सो अदृष्टरूप रस्सीसैं बांध्या हुया सुषुप्तिकालविषै। औ तिसके अवांतर भेदरूप मरण मूर्छा अरु प्रलयकालविषै समष्टिअज्ञानरूप ईश्वरकी उपाधि मा-

याविषै लीन होवैहै । तब सो व्यष्टिअज्ञानरूप जीवकी ऊपाधि अविद्या । समष्टिअज्ञानसैं एकताकूं पावैहै । तौ बी लिंगशरीरके संस्काररूप उपाधिकरि भिन्नकी न्याई है । फेर जब अदृष्टरूप रस्सीकूं अंतर्यामी प्रेरता है । तब भेदकूं पावैहै । परंतु व्यष्टिअज्ञानरूप जलसहित लिंगदेहरूप घट औ समष्टिअज्ञानरूप समुद्रका आधार जो चिदाकाश सो भिन्न होता नहीं । किंतु तीनकालविषै एकरस है ॥

प्रश्नः— सुषुप्तिके कहनेसैं क्या सिद्ध भया ?

उत्तरः— सुषुप्तिअवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं औ जाग्रत्स्वप्नविषै यह न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातैं यह सुषुप्तिअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह कार-

णदेहकी है। मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

इसरीतिसैं सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये अवस्थात्रयसाक्षीवर्णननामिका पंचमकला समाप्ता ॥ ५ ॥

अथ षष्ठकलाप्रारंभः ॥ ६ ॥

॥ प्रपंच मिथ्या वर्णन ॥

प्रश्नः– आत्माविषै तीनअवस्था किसकी न्याई भासती हैं ?

उत्तरः– दृष्टांतः– जैसैं सीपीविषै रूपा अथवा भोडल (अभ्रक) अथवा कागज। ये तीन सीपीके अज्ञानसैं कल्पित भासते हैं ॥ तिन तीनवस्तुनका परस्पर वा सीपीके साथि व्यतिरेक है।

औ सीपीका तीनवस्तुनविषै अन्वय है ॥ जैसें किः— सीपीविषै जब रूपा भासै तब भोडल औ कागज भासता नहीं। औ जब भोडल भासै तब रूपा औ कागज भासता नहीं। औ जब कागज भासै तब रूपा औ भोडल भासता नहीं। यह तीनवस्तुनका परस्पर व्यतिरेक है ॥ सीपीविषै आदिमध्यअंतमैं इन तीनवस्तुनका व्यावहारिक औ परमार्थिक अत्यंतअभाव है ॥ यह सीपीविषै बी तिन तीनवस्तुनका व्यतिरेक है। औ भ्रांतिकालविषै "यह रूपा है" "यह भोडल है" "यह कागज है" इसरीतिसैं सीपीका इदं-अंश तिन तीनवस्तुनविषै अनुस्यूत भासता हैं। यह तिन तीनवस्तुनविषै सीपीका अन्वय है ॥ इहां सीपीके तीनअंश हैं:— सामान्यअंश। विशेषअंश। कल्पितविशेषअंश ॥ इदंपना सामान्य-

अंश है ॥ काहेतैं । जो अधिककालविषै प्रतीत होवै सो सामान्यअंश है ॥ इदंपना जातैं भ्रांतिकालविषै प्रतीत होवै है। औ भ्रांतिके अभावकालविषै बी "यह सीपी है" ऐसैं प्रतीत होवै है। यातैं यह इदंपना सामान्यअंश है औ आधार बी कहिये है ॥ नीलपृष्ठ तीनकोणयुक्त सीपी विशेषअंश है ॥ काहेतैं । जो न्यूनकालविषै प्रतीत होवै सो विशेषअंश है ॥ भ्रांतिकालविषै इन नीलपृष्ठ आदिककी प्रतीति होवै नहीं । किंतु इनकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै । यातैं यह विशेषअंश है औ अधिष्ठान बी कहिये है ॥ रूपा आदिक कल्पितविशेषअंश है ॥ काहेतैं । जो अधिष्ठानके ज्ञानकालमैं प्रतीत होवै नहीं । सो कल्पितविशेषअंश है ॥ जैसैं रूपा आदिक। सीपीके अज्ञानकालविषै प्रतीत होवैहै औ सीपीके

आत्माके अज्ञानसैं होवै है ॥ तिनका परस्पर औ अधिष्ठान आत्माके साथि व्यंतिरेक है औ आत्माका तिनविषै अन्वय है ॥ जैसै किः—जाग्रत् भासै है तब स्वप्न औ सुषुप्ति भासै नहीं औ स्वप्न भासै है तब जाग्रत् औ सुषुप्ति भासै नहीं। औ सुषुप्ति भासै है तब जाग्रत औ स्वप्न भासै नहीं। यह तीनअवस्थाका परस्पर व्यतिरेक है॥ औ अधिष्ठानविषै इन तीनअवस्थाका पारमा-

---

॥ ७० ॥ अभाव वा व्यावृत्ति ॥

॥ ७१ ॥ भाव वा अनुवृत्ति ॥

न्वय है ॥ इहां आत्माके अविद्याउपाधिसें आरो-
पित तीनअंश हैं:— सामान्यअंश विशेषअंश
कल्पितविशेषअंश ॥ सत् (हैपनै)रूप सामा-
न्यअंश है । काहेतें । "जाग्रत् है" "स्वप्न है"
"सुषुप्ति है ॥" इसरीतिसें आत्माका सत्पना भ्रां-
त्तिकालविषै बी प्रतीत होवैहै औ भ्रांतिकी निवृ-
त्तिकालविषै "मैं सत् हूं । मैं चित् हूं । मैं आनं-
द हूं । मैं परिपूर्ण हूं । मैं असंग हूं । मैं नित्य-
मुक्त हूं । मैं ब्रह्म हूं" । इसरीतिसें आत्माके सत्प-
नैकी प्रतीति होवैहै । यातें यह सत्रूप सामान्य-
अंश है औ आधार बी कहिये है ॥ चेतन आनं-

होवैहै। औ "मैं ब्रह्म हूं" ऐसै आत्माके ज्ञानकालमैं आत्मासै भिन्न सत् प्रतीत होवैं नहीं। यातैं यह तीनअवस्थारूप प्रपंच कल्पितविशेषअंश है औ भ्रांति बी कहिये है॥ इसरीतिसैं ये तीनअवस्था आत्माविषै मिथ्या प्रतीत होवै हैं॥

प्रश्नः—आत्माविषै मिथ्याप्रपंचकी प्रतीतिमैं अन्यदृष्टांत कौनसे हैं?

उत्तरः—जैसैं स्थाणुविषै पुरुष प्रतीत होवैहै।

तैसैं आत्माविषै अपनैं अज्ञानतैं प्रपंच प्रतीत होवैहै। सो मिथ्या है॥ इसरीतिसैं प्रपंचके मिथ्यापनैका निश्चय करना। सोइ प्रपंचका बाँध है॥

प्रश्नः—भ्रांतिरूप संसार कितनै प्रकारका है?

॥ ७२ ॥ मिथ्यापनैके निश्चयका नाम बाध है। सो शास्त्रीय यौक्तिक औ अपरोक्ष भेदतैं तीनभांतिका है॥

उत्तरः—१ भेद[७३]भ्रांति । २ कर्ता[७४]भोक्तापनैकी भ्रांति । ३ संग[७५]की भ्रांति । ४ विकार[७६]की भ्रांति । ५ ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति ।

॥ ७३ ॥ जीव ईश्वरका भेद । जीवनका परस्पर भेद । जडनका परस्पर भेद । जीव जडका भेद । औ जड ईश्वरका भेद । यह पांचप्रकारकी भेदभ्रांति है ॥

॥ ७४ ॥ अंतःकरणके धर्म कर्त्तापनैं भोक्तापनैंकी आत्माविषै प्रतीति होवैहै । यह कर्त्ताभोक्तापनैंकी भ्रांति है ॥

॥ ७५ ॥ आत्माका देहादिकविषैं अहंतारूप औ ग्रहादिकविषै ममतारूप संबंध है । वा सजातीय विजातीय स्वगत वस्तुके साथि संबंधकी प्रतीति । सो संगभ्रांति है ॥

॥ ७६ ॥ दुग्धके विकार दधिकी न्याईं । ब्रह्मका विकार जीव तथा जगत् है । ऐसी जो प्रतीति । सो विकारभ्रांति है ॥

यह पांचप्रकारका भ्रांतिरूप संसार है ॥

प्रश्नः—पांचप्रकारके भ्रमकी निवृत्ति किन दृष्टांतनसैं होवैहै ?

उत्तरः— ॥ १ ॥ बिंब७७प्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेदभ्रमकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ २ ॥ स्फाटिकविषै लालवस्त्रके लालरंगकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैके भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ ३ ॥ घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ ७७ ॥ सूत्रभाष्यके ऊपर पंचपादिका नाम टीका पद्मपादाचार्यने करी है। तिस पंचपादिकाका व्याख्यानरूप विवरण नाम ग्रंथ है। तिसके कर्त्ता श्रीप्रकाशात्मचरण नाम आचार्य्य है। तिसकी रीतिके अनुसार यह उपर लिख्या बिंबप्रतिबिंबका दृष्टांत है॥

॥ ४ ॥ रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥ ५ ॥ कनकविषै कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यपनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

प्रश्नः–बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेदभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है?

उत्तरः–जैसैं दर्पणविषै मुखका प्रतिबिंब भासता है। सो प्रतिबिंब दर्पणविषै नहीं है। किंतु दर्पणकूं देखने वास्ते निकसी जो नेत्रकी वृत्ति। सो दर्पणकूं स्पर्श करिके पीछे लौटिके मुखकूंहीं देखती है। यातैं बिंब जो मुख तिसके साथि प्रतिबिंब अभिन्न है। तातैं प्रतिबिंब मिथ्या नहीं। किंतु सत्य है ॥ औ प्रतिबिंबके धर्म जो बिंबसैं भिन्नपना औ दर्पणविषै स्थितपना औ

बिंबसैं उलटेपना । ये तीन औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान सो भ्रांति है ॥ यातैं इन धर्मनका मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाध करिके बिंब औ प्रतिबिंबका सदाअभेद निश्चय होवैहै ॥

सिद्धांतः—तैसैं शुद्धब्रह्मरूप बिंब है। तिसका अज्ञानरूप दर्पणविषै जीवरूप प्रतिबिंब भासता है । तिनमैं स्वप्नकी न्याई एकजीव मुख्य है । औ दूसरे स्थावरजंगमरूप नानाजीव भासते हैं । सो जीवाभासहैं ॥ सो जीवरूप प्रतिबिंब ईश्वररूप बिंबके साथि सदा अभिन्न है ॥ परंतु मायाके बलसैं तिस जीवके धर्म । बिंबरूप ईश्वरसैं भेद । जीवपना । अल्पज्ञपना । अल्पशक्तिपना । परिच्छिन्नपना । नानापना । इत्यादि । औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान । सो भ्रांति है ॥ यातैं तिनका मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाध करिके । जीवरूप प्रतिबिं-

ब औ ईश्वररूप बिंबका सदाअभेद निश्चय होवैहै ॥ इसरीतिसैं बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेद-भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥ १ ॥

प्रश्नः—स्फाटिकविषै लालवस्त्रके लालरंगकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांति किसरीतिसैं निवृत्त होवैहै ?

उत्तरः—जैसैं लालवस्त्रके ऊपर धरे स्फाटिकमणिविषै वस्त्रका लालरंग संयोगसंबंधसैं भासता है। परंतु सो वस्त्रका धर्म है ॥ वस्त्र औ स्फाटिकके वियोगके भये स्फाटिकविषै भासता

॥ ७८ ॥ मुख्य जीवईश्वरके भेदके निषेधसैं तिसके अंतर्गत च्यारीभेदनका निषेध सहज सिद्ध होवैहै ॥ सर्वभेद उपाधिके किये हैं । उपाधि सर्व मिथ्या हैं । तातैं तिनके किये भेद बी सर्व मिथ्या हैं । यातैं वास्तव अद्वैतब्रह्मही अवशेष रहता है ॥

नहीं । यातें स्फाटिकका धर्म नहीं है । किंतु स्फाटिकविषै भ्रांतिसैं भासता है ॥

सिद्धांतः—तैसैं अंतःकरणका धर्म जो कर्त्ता-भोक्तापना सो आत्माविषै तादात्म्यसंबंधसैं भासता है । परंतु सो अंतःकरणका धर्म है ॥ सुषुप्तिविषै अंतःकरण औ आत्माके वियोगके भये आत्माविषै भासता नहीं । यातें आत्माका धर्म नहीं है । किंतु आत्माविषै भ्रांतिसैं भासता है ॥ इसरीतिसैं स्फाटिकविषै लालरंगके प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनेकी भ्रांति निवृत्त होवैहै २

प्रश्नः—घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै ?

उत्तरः—जैसैं घटउपाधिवाला आकाश घटाकाश कहिये है । सो आकाश घटके संग भासता है । तौ बी घटके धर्म उत्पत्तिनाश गमनआगमन आदिक हैं । सो आकाशकूं स्पर्श

करते नहीं । यातैं आकाश असंग है । औ आकाशका संबंध घटके साथि भासता है । सो भ्रांति है ॥

सिद्धांतः—तैसैं देहआदिक संघातरूप उपाधिवाला आत्मा जीव कहिये है । सो आत्मा संघातके संग भासता है । तौ बी संघातके धर्म जन्ममरणादिक हैं । सो आत्माकूं स्पर्श करते नहीं ॥ काहेतैं । संघात दृश्य है औ आत्मा द्रष्टा है । तातैं आत्मा संघातसैं न्यारा असंग है ॥ जातैं आत्मा संघातरूप नहीं । तातैं आत्माका संघातके साथि अहंतारूप संबंध बी नहीं । औ जातैं आत्माका संघात नहीं । किंतु संघात पंचमहाभूतका है । तातैं आत्माका संघातके साथि ममतारूप संबंध बी नहीं ॥ जातैं आत्मा संघातसैं न्यारा है । तातैं आत्माका संघातके संबंधी स्त्रीपुत्र ग्रहादिकनके साथि बी ममतारूप संबंध नहीं । ऐसैं आ-

त्मा असंग है ॥ इसका संघातके साथि अहंताममतारूप संबंध भ्रांति है । इसरीतिसैं घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥ ३ ॥

प्रश्नः—रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै ?

उत्तरः—मंदअंधकारविषै रज्जु स्थित होवै । तिसके देखने वास्ते नेत्ररूप द्वारसैं अंतःकरणकी वृत्ति निकसै है । सो वृत्ति अंधकारादि दोषसैं रज्जुके आकारकूं पावती नहीं । यातैं तिस वृत्तिसैं रज्जुके आवरणका भंग होवै नहीं । तब रज्जुउपाधिवाले चैतन्यके आश्रित रही जो तूला[७९]-अविद्या । सो क्षोभकूं पायके सर्परूप विकारकूं धारती है ॥ सो सर्प । दुग्धके परिणाम दधिकी

॥ ७९ ॥ घटादिरूप उपाधिवाले चैतन्यकूं आवरण करनैंवाली जो अविद्या । सो तूलाअविद्या है ॥

न्याई अविद्याका परिणाम है। औ रज्जुउपाधिवाले चैतन्यका विवर्त है। परिणाम (विकार) नहीं ॥

सिद्धांतः—तैसैं ब्रह्मचैतन्यके आश्रित रही जो मूलाअविद्या । सोप्रारब्धादिक निमित्तसैं क्षोभकूं पायके जड चैतन्य(चिदाभास) प्रपंचरूप विकारकूं धारती है ॥ सो प्रपंच अविद्याका परिणाम है औ अधिष्ठान ब्रह्मचैतन्य-

॥ ८० ॥ शुद्धब्रह्म औ आत्माकूं आवरण करनैवाली जो अविद्या । सो मूलाअविद्या है ॥

॥८१॥ कार्य करनैके सनमुख होनैकूं क्षोभ कहै हैं ॥

॥ ८२ ॥ पूर्वरूपकूं त्यागिके अन्यरूपकी जो प्राप्ति सो परिणाम है ॥ वा उपादानके समानसत्तावाला जो अन्यथारूप (उपादानतैं औरप्रकारका आकार) सो परिणाम है ॥ जैसैं दुग्धका परिणाम दधि है । याहीकूं विकार बी कहै हैं ॥

॥ ८३ ॥ जो आप निर्विकाररूपसैं स्थित होवै

का विवर्त है। परिणाम नहीं ॥ इसरीतिसैं रज्जु-विषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥ ४ ॥

प्रश्नः— कनकविषै कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवैहै ?

उत्तरः— जैसैं कनक औ कुंडलका कार्य-

औ अविद्याकृत कल्पितकार्यका आश्रय होवै । सो अधिष्ठान है ॥ जैसैं कल्पितसर्पका अधिष्ठान रज्जु है । याहीकूं परिणामीउपादानसैं विलक्षण दूसरा विवर्तउपादान बी कहते हैं ॥

॥ ८४॥ अधिष्ठानतैं विषमसत्तावाला (अल्प अरु भिन्न सत्तावाला) जो अधिष्ठानसैं अन्यथारूप (औरप्रकारका आकार) सो विवर्त है ॥ जैसैं रज्जुका विवर्त सर्प है । याहीकूं कल्पितकार्य औ कल्पितविशेष बी कहते हैं ॥

कारणभावकरि भेद भासता है सो कल्पित है। औ कनकसैं कुंडलका भिन्न स्वरूप देखीता नहीं। यातैं वास्तव अभेद है। तातैं कनकसैं भिन्न कुंडलकी सत्ता नहीं है ॥

सिद्धांतः– तैसैं ब्रह्म औ जगत्का कार्य-कारणभावकरि अरु विशेषणकरि भेद भासता है सो कल्पित है ॥ औ विचारकरि देखिये तौ अस्तिभातिप्रियसैं भिन्न नामरूपजगत् सत्य सिद्ध होवै नहीं। किंतु मिथ्या सिद्ध होवैहै ॥ औ जो वस्तु जिसविषै कल्पित होवै सो वस्तु तिसतैं भिन्न सिद्ध होवै नहीं। यातैं ब्रह्मसैं जगत्का वास्तवअभेद है। तातैं ब्रह्मसैं जगत्की भिन्न सत्ता नहीं है ॥ इसरीतिसैं कनक-विषै कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै॥९॥

प्रश्नः– भ्रांति सो क्या है ?

उत्तरः– भ्रांति सो अध्यास है ॥

प्रश्नः– अध्यास सो क्या है ?

उत्तरः– भ्रांतिज्ञानका विषय जो मिथ्या वस्तु औ भ्रांतिज्ञान । तिसका नाम अध्यास है ॥

प्रश्नः– यह अध्यास कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः– ज्ञानाध्यास औ अर्थाध्यास । इस भेदतैं अध्यास दो भांतिका है ॥ तिनमैं अर्थाध्यास । केवल[८५]संबंधाध्यास । संबंधसहित[८६] संबंधीका अ-

---

॥८५॥ अनात्माविषै आत्माका अध्यास होवैहै । तहां आत्माका अनात्माके साथि तादात्म्यसंबंध अध्यस्त है । आत्माका स्वरूप नहीं । यातैं अनात्माविषै आत्माका केवलसंबंधाध्यास है ॥

॥ ८६ ॥ आत्माविषै अनात्माका संबंध औ स्वरूप दोनूं अध्यस्त हैं । यातैं अत्माविषै अनात्माका संबंध सहित संबंधीका अध्यास है ॥

ध्यास । केवलधर्माध्यास । धर्मसहित धर्मीकाअध्यास । अन्योन्याध्यास । अन्यतराध्यास । इन भे-

॥ ८७ ॥ स्थूलदेहके गौरता आदिक औ इंद्रियनके दर्शन आदिक धर्मोंकाही आत्माविषै अध्यास होवैहै । तिनके स्वरूपका नहीं । यातैं आत्माविषै देह औ इंद्रियनके केवलधर्मका अध्यास है ॥

॥८८॥ अंतःकरणके कर्तापना आदिक धर्म औ स्वरूप दोनूं आत्माविषै अध्यस्त हैं । यातैं अंतःकरणका आत्माविषै धर्मसहित धर्मीका अध्यास है ॥

॥ ८९ ॥ लोह औ अग्निकी न्याईं आत्माविषै अनात्माका औ अनात्माविषै आत्माका जो अध्यास । सो अन्योन्याध्यास है ॥

॥ ९० ॥ अनात्माविषै आत्माका स्वरूप अध्यस्त नहीं । किंतु आत्माविषै अनात्माका स्वरूप अध्यस्त है । यहहीं अन्यतराध्यास है । दोनूंमेसैं एकका अध्यास अन्यतराध्यास कहिये है ॥

दतैं षट्प्रकारका है ॥ अथवा स्वरूपाध्यास[९१] औ संसर्गाध्यास[९२]। इस भेदतैं अर्थाध्यास दो प्रकारका है॥ ताके अंतर्गत[९३] उक्त षड्भेद हैं । औ ऊपर लिखे

॥ ९१ ॥ ज्ञानसैं बाध होने योग्य वस्तु । अधिष्ठानविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होवैहै । देहादि अनात्माका अधिष्ठानके ज्ञानसैं बाध होवैहै । यातैं ताका आत्माविषै स्वरूपाध्यास है ॥

॥ ९२ ॥ बाधके अयोग्य वस्तुका स्वरूप अध्यस्त होवै नहीं । किंतु ताका संबंध अध्यस्त होवै है। यातैं अनात्माविषै आत्माका संसर्गाध्यास है । याहीकूं संबंधाध्यास बी कहे हैं ॥

॥ ९३ ॥ केवलधर्माध्यास । धर्मसहित धर्मीका अध्यास । औ अन्यतराध्यास । ये तीन स्वरूपाध्यासके अंतर्गत हैं॥केवलसंबंधाध्यास । संसर्गाध्यास हीं है ॥ संबंधसहित संबंधीका अध्यास संसर्गाध्याससहित स्वरूपाध्यास है । औ अन्योन्याध्यासमैं संसर्गाध्यास

भेदभ्रांति आदिक पांचप्रकारका भ्रम बी याहीके अंतर्गत है ॥ औ आगे नेडेही कहियेगा जो आत्मा अनात्माके विशेषणोका अन्योन्याध्यास सो बी याहीके अंतर्गत है । सो ताके टिप्पणविषै दिखाया जावैगा ॥

प्रश्नः—अहंकारादिक अनात्माका औ आ-

औ स्वरूपाध्यास दोनूं हैं ॥ काहेतें । आत्माका स्वरूप तौ सत्य है । यातें अध्यस्त नहीं । किंतु ताका संसर्ग कहिये तादात्म्यसंबंध अनात्माविषै अध्यस्त है । यातें ताका संसर्गाध्यास है ॥ औ अनात्माका स्वरूपहीं आत्माविषै अध्यस्त है । यातें ताका स्वरूपाध्यास है ॥ तातें अन्योन्याध्यास दोनूंके अंतर्गत है॥

॥ ९४ ॥ भेदभ्रांति आदिक पांचप्रकारका भ्रम जो पूर्व लिख्या है । तिनमैं संगभ्रांतिकूं छोडिके च्यारीप्रकारका भ्रम स्वरूपाध्यासके अंतर्गत है । औ पांचवी संगभ्रांति । संसर्गाध्यासके भीतर है ॥

त्माका जाननेमैं विशेषउपयोगी कौन अध्यास है?

उत्तरः—अन्योन्याध्यास है ॥

प्रश्नः—अन्योन्याध्यास सो क्या है ?

उत्तरः—परस्परविषै परस्परके अध्यासका नाम । अन्योन्याध्यास है ॥

॥९५॥इहां सर्व अध्यासनके स्वरूप औ उदाहरण विस्तारके भयसैं विशेष लिखे नही । किंतु संक्षेपसैं लिखे है।परंतु अन्योऽन्याध्यासका स्वरूप तौ विशेष उपयोगी जानिके स्पष्ट दिखाया है ॥ तामैं अनात्माके धर्म दुःख औ द्वैतसहितपना । आत्माके आनंद औ अद्वैतपनैविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे हैं औ आत्माके धर्म सत् अरु चित् । अनात्माके असत्ता औ जडताविषै संसर्ग (संबंध)द्वारा अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे हैं ॥ कार्यसहित अज्ञानसैं जो आवृत्त (ढांप्या) होवै।सो अधिष्ठान कहिये है ॥ इसरीतिसैं आत्मा औ अनात्माका यह अन्योन्याध्यास बी संसर्गाध्यास औ स्वरूपाध्यासके अंतर्गत है ॥

प्रश्नः— आत्मा औ अनात्माका परस्पर अध्यास किसरीतिसैं है ?

उत्तरः— सत् चित् आनंद औ अद्वैतपना । ये च्यारीविशेषण आत्माके हैं ॥ असत् जड दुःख औ द्वैतसहितपना । ये च्यारीविशेषण अनात्माके हैं ॥ तिनमैं अनात्माके दुःख औ द्वैतसहितपना । इन दोविशेषणोनैं आत्माके आनंद औ अद्वैतपनैकूं ढांपे हैं । तातैं आत्माविषै “ मैं आनंदरूप औ अद्वैतरूप हूं ” । ऐसी प्रतीति होवै नहीं । किंतु “ मैं दुःखी औ ईश्वरादिकसैं भिन्न हूं ” । ऐसी प्रतीति होवै है ॥ औ आत्माके सत् औ चित् । इन दोविशेषणोनैं अनात्माके असत् औ जडपनैकूं ढांपे हैं । तातैं अनात्मा जो अहंकारादिक । तिसविषै “ असत् है । अभान (जड)रूप है ” । ऐसी प्रतीति होवै



नहीं । किंतु "विद्यमान है । औ भासता (चेतन) है" । ऐसी प्रतीति होवै है ॥

इसरीतिसैं आत्मा औ अनात्माका पर[96]स्पर अध्यास है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपंचमिथ्यावर्णननामिका षष्ठकला समाप्ता ॥ ६ ॥

अथ सप्तमकलाप्रारंभः ॥ ७ ॥

॥ आत्माके विशेषण ॥

प्रश्नः—आत्माके विशेषण कितनैं प्रकारके है ?

उत्तरः—आत्माके विशेषण । विधेय[97] (सा-

॥ ९६ ॥ ब्रह्म औ ईश्वरका अरु कूटस्थ औ जीवका जो परस्पर अध्यास है । सो आगे ग्यारवींकलाविषै कहेंगे ॥

॥ ९७ ॥ जैसैं "सधवा" शब्द । विधवास्त्रीका

क्षात्बोधक) औ निषेध्य (प्रपंचके निषेधद्वारा बोधक) भेदतैं दोप्रकारके हैं ॥

प्रश्नः–आत्माके विधेयविशेषण कौनसे हैं ?

उत्तरः– १ सत् । २ चित् । ३ आनंद । ४ ब्रह्म । ५ स्वयंप्रकाश । ६ कूटस्थ ।

निषेध करिके सुवासिनीस्त्रीका साक्षात्बोधक है । तैसैं "सत्" आदिक विधेयविशेषण 'असत्' आदिक प्रपंचके विशेषणोंका निषेध करिके सदादिरूप ब्रह्मके साक्षात्बोधक हैं । यातैं "विधेय" कहिये हैं ॥

॥ ९८ ॥ जैसैं अविधवा शब्द विधवास्त्रीका निषेध करिके अर्थात् तातैं विलक्षण सुवासिनीस्त्रीका बोधक है । तैसैं अनंतआदिक जो निषेध्यविशेषण हैं । वे अंत आदिक प्रपंचके धर्मोंका निषेध करिके अर्थात् तिनतैं विलक्षण ब्रह्मके बोधक हैं । यातैं निषेध्य कहिये हैं ॥

७ साक्षी । ८ द्रष्टा । ९ उपद्रष्टा । १० एक । इत्यादिक हैं ॥

प्रश्नः—सत् आत्मा कैसें है?

उत्तरः—जिसकी ज्ञानसें वा औरकिसीसें बी निवृत्ति होवै नहीं । सो सत् है ॥ आत्माकी जातें ज्ञानसें वा औरकिसीसें बी निवृत्ति होवै नहीं । यातें आत्मा सत् है ॥ १ ॥

प्रश्नः—चित् आत्मा कैसें है?

उत्तरः—अलुप्तप्रकाश सो चित् है ॥ आत्मा जातें अलुप्तप्रकाशरूप है । यातें चित् है ॥ २ ॥

प्रश्नः— आनंद आत्मा कैसें है?

उत्तरः—परम (सर्वसें अधिक) प्रीतिका जो विषय । सो आनंद है ॥ आत्माविषै जातें सर्व-की परमप्रीति है । यातें आत्मा आनंद है ॥ ३ ॥

प्रश्नः—ब्रह्मरूप आत्मा कैसें है?

उत्तरः—आत्मा सत्चित्आनंदरूप श्रुति

युक्ति औ अनुभवसैं सिद्ध है । औ ब्रह्म बी शास्त्र (उपनिषद्)विषै सत्‌चित्‌आनंदरूप कह्या है । तातैं आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ किंवा ब्रह्म नाम व्यापकका है ॥ जिसका देशतैं अंत न होवै सो व्यापक कहिये है ॥ आत्मा जो ब्रह्मसैं भिन्न होवै तौ देशतैं अंतवाला होवैगा । जिसका देशतैं अंत होवै तिसका कालतैं बी अंत होवै है । यह नियम है ॥ जिसका देशकालतैं अंत होवै सो अनित्य कहिये है । तातैं आत्मा अनित्य होवैगा । यातैं आत्मा ब्रह्मसैं भिन्न नहीं ॥ औ आत्मासैं भिन्न जो ब्रह्म होवै । तौ ब्रह्म अनात्मा होवैगा ॥ जो अनात्मा घटादिक हैं सो जड हैं । तातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म जड होवैगा । सो वार्ता श्रुतिसैं विरुद्ध है । यातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म नहीं । तातैं ब्रह्मरूप आत्मा है ॥ ४ ॥

प्रश्नः–स्वयंप्रकाश आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–जो दीपककी न्याई आपके प्रकाशनैविषै किसीकी बी अपेक्षा करै नहीं । औ आप सर्वका प्रकाशक होवै। सो स्वयंप्रकाश कहिये है॥ ऐसा आत्माहीं है। यातें आत्मा स्वयंप्रकाश है ॥ अथवा जो सदाअपरोक्षरूप होवै औ किसी ज्ञानका विषय न होवै । सो स्वयंप्रकाश कहिये है ॥ आत्मा जातें सदाअपरोक्षरूप है । औ प्रकाशरूप होतेतें किसी बी ज्ञानका विषय (प्रकाश्य) नहीं । यातें स्वयंप्रकाश है ॥ ५ ॥

प्रश्नः–कूटस्थ आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–कूट नाम लोहारके अहिरनका है । ताकी न्याई जो निर्विकार (अचल)रूपसें स्थित होवै सो कूटस्थ कहिये है ॥ जैसें लोहार अनेक घाट घडता है । तौ बी अहिरन ज्यूंका

उत्तरः—लोकव्यवहारविषै उदासीन (रागद्वेषरहित) । समीपवर्ती । औ चेतन होवै । सो साक्षी कहिये है ॥ जातैं आत्मा देहादिकसैं उदासीन है। औ समीपवर्ती है। औ चेतन (अजडप्रकाश) है । यातै आत्मा साक्षी है ॥ वा अंतःकरणरूप उपाधिवाला चेतन साक्षी कहिये है ॥ वा अंतःकरण औ अंतःकरणकी वृत्तिनविषै वर्तमान चेतनमात्र (केवलचेतन) साक्षी कहिये है ॥ ऐसा आत्मा है । यातैं साक्षी है ॥ ७ ॥

प्रश्नः—द्रष्टा आत्मा कैसैं है?

उत्तरः—जैसे यज्ञशालाविषै यज्ञकार्यके कर-
नैहारे १६ ऋत्विज् होवै हैं। औ सोलवां यज-
मान होवै है। औ सतरावी यजमानकी स्त्री होवै
है। औ अठारवां उपद्रष्टा (पास बैठके देखनैहारा)
होवै है। सो कछु बी कार्य करता नहीं॥ तैसें
स्थूलदेहरूप यज्ञशालाविषै पांचज्ञानइंद्रिय पांच-
कर्मइंद्रिय औ पांचप्राण। ये १६ ऋत्विज् हैं।
सोलवां मनरूप यजमान है। औ सतरावी बुद्धि-
रूप यजमानकी स्त्री है। ये सर्व आपआपके वि-
षयके ग्रहण करनैरूप भोगमय यज्ञका कार्य क-
रते हैं। औ इन सर्वका समीपवर्ती जाननैहारा

आत्मा अठारवां उपद्रष्टा है ॥ ९ ॥

प्रश्नः—एक आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—आत्माका सजातीय (जातिवाला) और आत्मा नहीं है। यातैं आत्मा एक है ॥१०॥ इत्यादिक आत्माके विधेयविशेषण हैं ॥

प्रश्नः—आत्माके निषेध्यविशेषण कौनसे हैं ?

उत्तरः—१ अनंत। २ अखंड। ३ असंग। ४ अद्वितीय। ५ अजन्मा। ६ निर्विकार। ७ निराकार। ८ अव्यक्त। ९ अव्यय। १० अक्षर। इत्यादिक हैं ॥

प्रश्नः—अनंत आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—आत्मा व्यापक है। तातैं आत्माका देशतैं अंत नहीं। औ जातैं आत्मा नित्य है। तातैं आत्माका कालतैं अंत नहीं। औ जातैं आत्मा अधिष्ठान होनैतैं सर्वका स्वरूप है। तातैं

आत्माका वस्तुतैं अंत नहीं । औ जातैं आत्माका देश काल औ वस्तुतैं अंत (परिच्छेद) नहीं । तातैं आत्मा अनंत है ॥ १ ॥

प्रश्नः–अखंड आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–(१) जीवईश्वरका भेद । (२) जीवनका परस्पर भेद । (३) जीवजडका भेद । (४) जडईश्वरका भेद । (५) जडजडका भेद । ये पांचभेद हैं । तिनतैं आत्मा रहित है ॥ अथवा (१) सजातीय । (२) विजातीय । (३) स्वगत भेदतैं आत्मा रहित है । यातैं आत्मा अखंड है ॥ २ ॥

प्रश्नः–असंग आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–संग नाम संबंधका है ॥ सो संबंध तीनप्रकारका हैः–(१) सजातीयसंबंध । (२) विजातीयसंबंध । (३) स्वगतसंबंध ॥ अपनी जातिवालेसैं जो संबंध है । सो सजातीय है । जैसैं ब्राह्मण-

का अन्यब्राह्मणसैं है ॥ अन्यजातिवालेसैं जो संबंध है। सो विजातीय है। जैसैं ब्राह्मणका शूद्रसैं है ॥ अपनै अवयव (अंग)नसैं जो संबंध है। सो स्वगत है। जैसैं ब्राह्मणका अपनै हस्तपादमस्तक आदिक अंगनसैं हैं ॥

आत्मा (चेतन) एक है। तातैं ताकी जाति नहीं। औ जीव ईश्वर ब्रह्मा विष्णु शिव। मैं तूं इत्यादिकभेद तौ उपाधिके किये हैं। तातैं मिथ्या हैं। यातैं आत्माका काहूके साथि सजातीयसंबंध बनै नहीं (१)॥

तैसैं आत्मा अद्वैत है औ सत् है। तिसतैं भिन्न माया (अज्ञान) औ मायाका कार्य स्थूलसूक्ष्मप्रपंच प्रतीत होवै है। सो असत् है। औ असत् कछु वस्तु नहीं। यातैं आत्माका काहूके साथि विजातीयसंबंध बनै नहीं (२) ॥

तैसैं आत्मा निरवयव है औ सच्चिदानंदादिक तौ आत्माके अवयव नहीं । किंतु एकरूप होनैतैं आत्माका स्वरूप है । तातैं आत्माका काहूके साथि स्वगतसंबंध बनै नहीं (३) ॥

इसरीतिसैं आत्मा सर्वसंबंधसैं रहित है । यातैं असंग है ॥ ३ ॥

प्रश्नः—अद्वैत आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—द्वैत जो प्रपंच । सो स्वप्नकी न्याई कल्पित होनैतैं वास्तव नहीं है । यातैं आत्मा द्वैतसैं रहित होनैतैं अद्वैत है ॥ ४ ॥

प्रश्नः—अजन्मा आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—स्थूलदेहका धर्म जन्म है ॥ सूक्ष्मदेहका धर्म बी नहीं तौ आत्माका धर्म जन्म कहांसैं होवैगा ॥ फेर जो आत्माका जन्म मानिये तौ आत्माका मरण बी मानना होवैगा । तातैं

आत्मा अनित्य सिद्ध होवैगा । सो परलोकवादी आस्तिकनकूं अनिष्ट (अवांछित) है ॥ काहेतैं । जन्ममरणवाला वस्तु है ताका आदिअंतविषै अभाव है । तातैं पूर्वजन्मविषै आत्मा नहीं था औ तिसके कर्म बी नहीं थे । तब इस जन्मविषै आत्माकूं कर्मसैं विना भोग होवै है ॥ औ मरणसैं अनंतर आत्मा नहीं होवैगा। तातैं इसजन्मविषै किये कर्मका भोगसैं विना नाश होवैगा । तातैं वेदोक्तकर्मकी व्यर्थता होवैगी । यातैं आत्माका धर्म जन्म नहीं ॥ तातैं आत्मा अजन्मा है औ अजन्मा कहनैसैं अजरअमर अर्थसैं सिद्ध भया ॥९॥

प्रश्नः–निर्विकार आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–(१) जैसैं घटके जन्म ।(२) अस्तिपना (प्रकटता) ।(३) वृद्धि।(४) विपरिणाम ।(५) अपक्षय । (६) विनाश । ये षट्धर्म हैं । परंतु घटविषै

स्थित औ घटसैं भिन्न जो आकाश हैं। तिसके धर्म नहीं ॥ तैसैं "देह जन्मता है" यह जन्म (१)। "देह जन्म्या है" यह अस्तिपना (पूर्व नहींथा अब है) (२)। "देह बालक भया" यह वृद्धि (३)। "देह युवा भया" यह विपरिणाम (४)। "देह वृद्ध भया" यह अपक्षय (५)। "देह मरणकूं पाया" यह विनाश (६)। ये षट्विकार देहके धर्म हैं॥ देहकूं जाननैहारा अरु देहसैं न्यारा जो आत्मा है। तिसके धर्म नहीं॥ इसरीतिसैं षट्विकारनतैं रहित आत्मा निर्विकार है ॥ ६ ॥

प्रश्नः–निराकार आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–(१) स्थूल। (२) सूक्ष्म। (३) लंबा। (४) ठूंका (छोटा)। ये च्यारीप्रकारका जगत्‌विषै आकार है ॥ आत्मा। इंद्रिय औ मनका अविषय होनैतैं सूक्ष्म है। तातैं स्थूल नहीं (१)। आत्मा

व्यापक है । तातैं सूक्ष्म (अणु) नहीं (२) । आत्मा सर्वठिकाने ओतप्रोत है । तातैं लंबा औ टूंका नहीं (३–४) । यातैं निराकार है ॥ ७ ॥

प्रश्नः– अव्यक्त आत्मा कैसै है ?

उत्तरः– आत्मा । जातैं मनइंद्रियआदिकका अगोचर होनैतैं अस्पष्ट है । यातैं अव्यक्त है ॥ ८ ॥

प्रश्नः– अव्यय आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–जैसैं कोठेमैं धान्यके निकासनै औ डालनैकरि धान्यका व्यय (घटना बढना) होवै है । तैसैं आत्माका व्यय होवै नहीं । यातैं आत्मा अव्यय है ॥ ९ ॥

प्रश्नः–अक्षर आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः– आत्मा जातैं क्षर (नाश)तैं रहित है । यातैं अक्षर है ॥ याहीकूं अक्षय अमृत औ

अविनाशी बी कहे हैं ॥ १० ॥

इसरीतिसैं आत्माके निषेध्यविशेषण हैं ॥

प्रश्नः— ये कहे जो आत्माके विशेषण । सो परस्परअभिन्न किसरीतिसैं हैं ?

उत्तरः—सच्चिदानंदादिक जो आत्माके गुण होवैं । तौ परस्पर भिन्न होवैं ॥ औ ये आत्माके गुण नहीं । किंतु स्वरूप हैं । यातैं परस्पर भिन्न नहीं । किंतु अभिन्न हैं ॥ औ एकही आत्मा नाशरहित है । यातैं सत् कहिये है । औ जडसैं विलक्षण प्रकाशरूप है । यातैं चित् कहिये है । औ दुःखसैं विलक्षण मुख्यप्रीतिका विषय है । यातैं आनंद कहिये है । ऐसें सर्वविशेषणनविषै जानना ॥

दृष्टांतः—जैसें एकही पुरुष पिताकी दृष्टिसैं पुत्र कहिये है । औ पितामहकी दृष्टिसैं पौत्र

कहिये है । औ पितृभ्राताकी दृष्टिसैं भ्रातृज कहिये है। औ मातुलकी दृष्टिसैं भेणीज कहिये है॥ किंवा जैसैं एकही संन्यासी । पशु स्त्री गृहस्थ अदंडी आदिकनकी दृष्टिसैं मनुष्य पुरुष त्यागी दंडी इत्यादी विधेयविशेषणोंकरिके कहिये है॥ औ घट पाषाण वृक्ष आदिककी दृष्टिसैं अघट अपाषाण अवृक्ष आदिक निषेध्यविशेषणोंकरिके कहिये है ॥ तैसैं एकही आत्मा प्रपंचके विशेषण असत् जड दुःख औ अंत खंड संग आदिककी दृष्टिसैं सत् चित् आनंदादिक औ अनंत आदिक कहिये है ॥ इसरीतिसैं कहे जो आत्माके विशेषण सो परस्पर भिन्न नहीं । किंतु अभिन्न हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये आत्मविशेषणवर्णननाभिका सप्तमकला समाप्ता ॥ ७ ॥

अथ अष्टमकलाप्रारंभः ॥ ८ ॥

॥ सत्‌चित्‌आनंदका विशेषवर्णन ॥

प्रश्नः– सत् सो क्या है ?

उत्तरः– तीनकालमैं जो अबाधित होवै। सो सत् है ॥ १ ॥

प्रश्नः– चित् सो क्या है ?

उत्तरः– तीनकालमैं जो सर्वकूं जानैं। सो चित् है ॥ २ ॥

प्रश्नः– आनंद सो क्या है ?

उत्तरः–तीनकालमैं जो परमप्रेमका विषय होवै। सो आनंद है ॥ ३ ॥

प्रश्नः– मैं सत् हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः– तीनकालविषै मैं हूं। यातैं मैं सत्

हूं । यह ऐसैं जानना ॥

प्रश्नः— तीनकालविषै मैं हूं । यातैं सत् हूं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः— जाग्रत्‌विषै मैं हूं । स्वप्नविषै मैं हूं । सुषुप्तिविषै मैं हूं ॥ तैसैं प्रातःकालविषै मैं हूं । मध्यान्हकालविषैं मैं हूं । सायंकालविषै मैं हूं ॥ तैसैं दिवसविषै मैं हूं । रात्रिविषै मैं हूं । पक्षविषै मैं हूं ॥ तैसैं मासविषै मैं हूं । ऋतुविषै मैं हूं । वर्षविषै मैं हूं ॥ तैसैं बाल्यअवस्थाविषै मैं हूं । यौवनअवस्था-विषै मैं हूं । वृद्धअवस्थाविषै मैं हूं ॥ तैसैं पूर्वदेहविषै मैं हूं । इसदेहविषै मैं हूं । भावीदेहविषै मैं हूं ॥ तैसैं युगविषै मैं हूं । मनुविषै मैं हूं । कल्पविषै मैं हूं ॥ तैसैं भूतकालविषै मैं हूं । भविष्यत्‌कालविषै मैं हूं । वर्त्तमानकालविषै मैं हूं ॥ इसरीतिसैं तीन-कालविषै मैं हूं । यातैं सत् हूं । यह जानना ॥

प्रश्नः-मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तु सहित तीनकाल क्या जाननैं ?

उत्तरः- मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तु सहित तीनकाल असत् हैं । ऐसैं जाननैं ॥

प्रश्नः- सत् औ असत्का निर्णय किससैं होवै है ?

उत्तरः- सत् औ असत्का निर्णय अन्वयव्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

प्रश्नः- सत्असत्के निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः- जो मैं जाग्रत्विषै हूं । सोइ मैं स्वप्नविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । जाग्रत् मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् है ॥ जो मैं स्वप्नविषै हूं । सोई मैं सुषुप्तिविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । स्वप्न मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् है ॥ जो मैं सुषुप्ति-

विषै हूं। सोई मैं प्रातःकालविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। सुषुप्ति मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं प्रातःकालविषै हूं। सोई मैं मध्यान्हकालविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। प्रातःकाल मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं मध्यान्हकालविषै हूं। सोई मैं सायंकालविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। मध्यान्हकाल मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं सायंकालविषै हूं। सोई मैं दिवसविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। सायंकाल मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं दिवसविषै हूं। सोई मैं रात्रिविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। दिवस मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं रात्रिविषै हूं। सोई मैं पक्षविषै हूं। यातैं मैं सत् हूं। रात्रि मेरेविषै नहीं। यातैं यह असत् है ॥ जो मैं पक्षविषै हूं। सोई मैं मासविषै हूं। यातैं

मैं सत् हूं । पक्ष मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् हैं ॥ जो मैं मासविषै हूं । सोई मैं ऋतुविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । मास मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् है ॥ जो मैं ऋतुविषै हूं । सोई मैं वर्षविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । ऋतु मेरेविषै नहीं यातैं यह असत् है ॥ जो मैं वर्षविषै हूं । सोई मैं बाल्यअवस्थाविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं वर्ष मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् है ॥ जो मैं बाल्यअवस्था विषै हूं । सोई मैं यौवनअवस्थाविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । बाल्यअवस्था मेरेविषै नहीं यातैं यह असत् है ॥ जो मैं यौवनअवस्थाविषै हूं । सोई मैं वृद्धअवस्थाविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । यौवनअवस्था मेरेविषै नहीं । यातैं यह असत् है ॥ जो मैं वृद्धअवस्थाविषै हूं । सोई मैं पूर्वदेहविषै हूं । यातैं मैं सत् हूं । वृद्धअवस्था मेरे-

विषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं पूर्वदेह-विषै हूं । सोई मैं इसदेहविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । पूर्वदेह मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं इसदेहविषै हूं । सोई मैं भावीदेहविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । यह देह मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं भावीदेहविषै हूं सोई मैं युग-विषै हूं । यातें मैं सत् हूं । भावीदेह मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं युगविषै हूं । सोई मैं मनुविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । युग मेरे-विषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं मनुविषै हूं । सोई मैं कल्पविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । मनु मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं कल्प-विषै हूं । सोई मैं भूतकालविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । कल्प मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं भूतकालविषै हूं । सोई मैं भविष्यतकालविषै हूं ।

यातें मैं सत् हूं । भूतकाल मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं भविष्यत्कालविषै हूं । सोई मैं वर्त्तमानकालविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । भविष्यत्कालविषै मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ जो मैं वर्तमानकालविषै हूं । सोई मैं सर्वकालविषै हूं । यातें मैं सत् हूं । वर्त्तमानकाल मेरेविषै नहीं । यातें यह असत् है ॥ इसरीतिसें सत्असत्के निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥ १ ॥

प्रश्नः– चित् मैं कैसें हूं ?

उत्तरः– तीनकालविषै मैं जानता हूं । यातें मैं चित् हूं ॥

प्रश्नः– तीनकालविषै मैं जानता हूं यातें चित् हूं । यह कैसें जानना ?

उत्तरः– जाग्रतकूं मैं जानता हूं । स्वप्नकूं मैं

जानता हूं। सुषुप्तिकूं मैं जानता हूं तैसैं प्रातः-कालकूं मैं जानता हूं। मध्यान्हकालकूं मैं जानता हूं। सायंकालकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं दिवसकूं मैं जानता हूं। रात्रिकूं मैं जानता हूं। पक्षकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं मासकूं मैं जानता हूं। ऋतुकूं मैं जानता हूं। वर्षकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं बाल्य-अवस्थाकूं मैं जानता हूं। यौवनअवस्थाकूं मैं जानता हूं। वृद्धअवस्थाकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं पूर्व-देहकूं मैं जानता हूं। इसदेहकूं मैं जानता हूं। भावीदेहकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं युगकूं मैं जानता हूं। मनुकूं मैं जानता हूं। कल्पकूं मैं जानता हूं॥ तैसैं भूतकालकूं मैं जानता हूं। भविष्यत्कालकूं मैं जानता हूं। वर्तमानकालकूं मैं जानता हूं। इसरीतिसैं सर्वकालविषै मैं जानता हूं। यातैं मैं चित् हूं। यह जानना॥

प्रश्नः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल क्या जाननैं ?

उत्तरः— मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल जड हैं । ऐसैं जाननैं ॥

प्रश्नः— चित् औ जडका निर्णय किससैं होवै है ?

उत्तरः— चित् औ जडका निर्णय अन्वयव्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

प्रश्नः— चित् औ जडके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः— जो मैं जाग्रत्कूं जानता हूं । सोई मैं स्वप्नकूं जानता हूं । यातैं मैं चित् हूं । जाग्रत् मेरेकूं जानै नहीं । यातैं यह जड है ॥ जो मैं स्वप्नकूं जानता हूं । सोई मैं सुषुप्तिकूं जानता हूं । यातैं मैं चित् हुं । स्वप्न मेरेकूं जानै नहीं । यातैं

यह जड है ॥ इनसैं आदिलेके औरसर्वकाल पूर्वकी न्याई जाननैं ॥ इसरीतिसैं चित् औ जडके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥२॥

प्रश्नः— आनंद मैं कैसैं हूं ?

उत्तरः— तीनकालविषै मैं परमप्रिय हूं । यातैं मैं आनंद हूं ॥

प्रश्नः— तीनकालविषै मैं प्रिय हूं । यातैं आनंद हूं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः— जाग्रत्‌विषै मैं प्रिय हूं । स्वप्नविषै मैं प्रिय हूं । सुषुप्तिविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं प्रातःकालविषै मैं प्रिय हूं । मध्यान्हकालविषै मैं प्रिय हूं । सायंकालविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं दिवसविषै मैं प्रिय हूं । रात्रिविषै मैं प्रिय हूं । पक्षविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं मासविषै मैं प्रिय हूं । ऋतुविषै मैं प्रिय हूं । वर्षविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं

बाल्यअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं । यौवनअवस्था-विषै मैं प्रिय हूं । वृद्धअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं पूर्वदेहविषै मैं प्रिय हूं । इसदेहविषै मैं प्रिय हूं । भावीदेहविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं युगविषै मैं प्रिय हूं । मनुविषै मैं प्रिय हूं । कल्पविषै मैं प्रिय हूं ॥ तैसैं भूतकालविषै मैं प्रिय हूं । भविष्यत्‌कालविषै मैं प्रिय हूं । वर्तमानकालविषै मैं प्रिय हूं ॥ इसरीतिसैं तीनकालविषै मैं परमप्रिय हूं यातैं मै आनंद हूं । यह जानना ॥

प्रश्नः—मेरेसै भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल क्या जाननै ?

उत्तरः—मेरेसै भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल दुःख है । ऐसै जाननै ॥

प्रश्नः—आनंद औ दुःखका निर्णय किससै होवैं है ?

उत्तरः—आनंद औ दुःखका निर्णय अन्वय-व्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

प्रश्नः—आनंद औ दुःखके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति कैसै जाननी ?

उत्तरः—जो मैं जाग्रत्‌विषै (परम)प्रिय हूं। सोई मैं स्वप्नविषै प्रिय हूं यातैं मैं आनंद[९९] हूं। जाग्रत् मेरेकूं प्रिय नहीं। यातैं यह दुःख है ॥ इनसैं आदिलेके औरसर्वकाल पूर्वकी न्याई

॥ ९९ ॥ जो जो जाग्रत्‌आदिककाल आत्माविषै भासता है। सो सो काल यद्यपि दुःखरूप है। तथापि अध्यास करिके आत्माकूं चिदाभासद्वारा प्रिय भासता है। तब अन्यकाल प्रिय भासते नहीं। यातैं सर्वकालमैं व्यभिचारी प्रीति है। तातैं ये वास्तव दुःखरूपहीं है। औ आत्मा (आप)मैं अव्यभिचारी (सर्वदा)प्रीति है। यातैं आत्मा आनंदरूप है॥

जाननै ॥ इसरीतिसें आनंद औ दुःखके निर्णय-विषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

प्रश्नः—मैं परमप्रिय हूं। यह कैसें जानना?

उत्तरः—**दृष्टांत**—जैसें पुत्रके मित्रविषै प्रीति है। सो पुत्रवास्ते है। औ पुत्रविषै जो प्रीति है सो तिसके मित्रवास्ते नहीं। यातें पुत्र अधिक प्रिय है ॥ तैसें धनपुत्रादिकविषै जो प्रीति है। सो आत्माके वास्ते है। औ आत्माविषै जो प्रीति है। सो धन-पुत्रादिकके वास्ते नहीं। यातें आत्मा अधिकप्रिय है ॥ इसरीतिसें मैं परमप्रिय हूं। यह जानना ॥

प्रश्नः—प्रीतिका न्यूनअधिकभाव कैसें जानना?

उत्तरः—जाग्रत्‌विषै सर्वसें प्रिय द्रव्य है। काहेतें। धनवास्ते पुरुष देश छोडिके परदेश जाता है। औ अनेक नीचकर्म करता है। यातें द्रव्य प्रिय है ॥ द्रव्यतें पुत्र प्रिय है। काहेतें। पुत्र

दुष्टकर्म करिके राजग्रहविषै बंधनकूं पाया होवै। तब तिसकूं धन देके छुडावता है । यातैं धनतैं पुत्र प्रिय है ॥ पुत्रतैं शरीर प्रिय है । काहेतैं । जब दुर्भिक्ष (दुष्काळ) होवै । तब पुत्रकूं बेचके शरीरका निर्वाह करै है। यातैं पुत्रतैं शरीर प्रिय है ॥ शरीरतैं इंद्रिय प्रिय हैं। काहेतैं । कोई मारनै आवै तब इंद्रियनकूं छुपायके "मेरे शरीरविषै मार परंतु आंख कान नाक मुखविषै मारना नहीं" ऐसैं कहता है । यातैं शरीरतैं इंद्रिय प्रिय हैं ॥ इंद्रियतैं प्राण (मन) प्रिय है । काहेतैं । किसीकूं दुष्टकर्म करनैसैं राजाका हुकुम भया होवै कि "इसके प्राण लेने" तब कहता है कि । मेरे धन पुत्र स्त्री ग्रह लूट ल्यो । परंतु प्राण मत लेना । तौबी राजाकी आज्ञा तौ प्राणके लेने विषै है । तब कहता है कि । "मेरा कान काटो ।

नाक काटो । हाथ काटो । पांउ काटो । परंतु मेरे प्राण मत लेना।" यातैं इंद्रियतैं प्राण प्रिय है। प्राणतैं आत्मा प्रिय है। काहेतैं। किसीकूं अतिशयव्याधिसैं पीडा होती होवै। तब कहता है कि "मेरे प्राण जावैं तब मैं सुखी होऊं" यातैं प्राणतैं आत्मा प्रिय है ॥ इसरीतिसैं प्रीतिका न्यूनअधिकभाव जानना ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सच्चिदानंदविशेषवर्णननामिका अष्टमकला समाप्ता ॥८॥

अथ नवमकलाप्रारंभः ॥ ९ ॥

॥ अवाच्यसिद्धांतवर्णन ॥

प्रश्नः— ब्रह्मात्मा जब वाणीका विषय नहीं तब सत्‌चित्‌आनंद आदिक विशेषणनसैं कैसैं कहिये है ?

उत्तरः– ब्रह्मात्माके कितनैक विधेय[100]विशेषण हैं औ कितनैक निषेध्य[101]विशेषण हैं। तिनमैं विधेयविशेषण जो सदादिक हैं। सो प्रपंचका निषेध करिके अवशेष (बाकी रहे) ब्रह्मकूं लक्षणा[102]सैं साक्षात्‌बोधन करै हैं। औ निषेध्यविशे-

॥१००॥ "सत् है"। "चित् है"। इसप्रकार विधिमुखसैं ब्रह्मके बोधक पद ॥

॥ १०१ ॥ "अनंत (अंतवाला नहीं)" "अखंड (खंडवाला नहीं)" इसप्रकार निषेधमुखसैं ब्रह्मके बोधक पद ॥

॥१०२॥माया औ प्रपंचविषै आपेक्षिक सत्यता है। औ ब्रह्मविषै निरपेक्ष सत्यता है। दोनूं मिलिके 'सत्' पदका वाच्य है। औ मायाकी सत्यताकूं त्यागिके केवल ब्रह्मकी सत्यता लक्ष्य है ॥ अंतःकरणकी वृत्तिरूप ज्ञान औ चेतनरूप ज्ञान। दोनूं मिलिके 'चित्'

षण जो अनंतादिक हैं । सो तौ साक्षात् प्रपंच-

पदका **वाच्य** है । वृत्तिज्ञानकूं छोडिकें केवल चेतनरूप ज्ञान **लक्ष्य** है ॥ विषयानंद वासनानंद औ ब्रह्मानंद । तीनूं मिलिके ‘ आनंद पदका ’ **वाच्य** है। दोनूंकूं छोडिके केवल ब्रह्मानंद **लक्ष्य** है ॥ माया औ ताके कार्य आकाशादिकविषै आपेक्षिकव्यापकता है । अरु ब्रह्म (आत्मा) विषै निरपेक्षव्यापकता है । दोनूं मिलिके ‘ ब्रह्म ’ (विभु) पदका **वाच्य** है । केवल ब्रह्म **लक्ष्य** है ॥ साभासबुद्धिविषै आपेक्षिकस्वप्रकाशता है औ चेतनविषै निरपेक्षस्वप्रकाशता है । दोनूं मिलिके स्वयंप्रकाशपदका **वाच्य** है । केवल चेतन **लक्ष्य** है ॥ रज्जुआदिकविषै आपेक्षिकअविकारिता है । औ चेतनविषै निरपेक्षअविकारिता है । ये दोनूं मिलिके ‘ कूटस्थ ’ पदका **वाच्य** है । औ केवल चेतन **लक्ष्य** है ॥ लौकिकसाक्षी औ मायाअविद्या-उपहितचेतन (ब्रह्म औ आत्मा) दोनूं मिलिके

काहीं निषेध करै हैं । औ तिसतैं विलक्षण ब्रह्मात्मा अर्थतैं सिद्ध होवै है । तातैं ब्रह्मात्मा अवाच्य होनेतैं किसी विशेषणसैं नहीं कहिये है ॥

प्रश्नः– सदादिक विधेयविशेषण । प्रपंचका

'साक्षी' पदका **वाच्य** है । औ केवल मायाअविद्याउपहितचेतन **लक्ष्य** है ॥ साभासअंतःकरणकी वृत्तिरूप दृष्टि करिके विशिष्ट (सहित) चेतन । द्रष्टा पदका **वाच्य** है । औ केवल चेतनभाग **लक्ष्य** है ॥ यज्ञका उपद्रष्टा औ प्रत्यगात्मा दोनूं मिलिके 'उपद्रष्टा' पदका **वाच्य** है । केवल प्रत्यगात्मा **लक्ष्य** है॥ लोकगत एकाकीपुरुष औ सजातीयभेदरहित ब्रह्म 'एक' पदका **वाच्य** है । केवल ब्रह्म **लक्ष्य** है॥ऐसैं अनुक्त अन्य विधेयविशेषणोंविषै बी जानी लेना॥इसरीतिसैं प्रपंचके 'असत्' आदिक विशेषणोंके निषेधक सदादिपदोंके अर्थविषै बी भागत्यागलक्षणाकी प्रवृत्ति है ॥

निषेध करिके अवशेषब्रह्मकूं कैसें बोधन करै है ?

उत्तरः— सत् कहनेसैं असत्का निषेध भया। बाकी रह्या सद्रूप । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

चित् कहनेसैं जडका निषेध भया। बाकी रह्या चिद्रूप । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

आनंद कहनेसैं दुःखका निषेध भया। बाकी रह्या आनंद (सुख)रूप । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

ब्रह्म कहनेसैं परिच्छिन्नका निषेध भया। बाकी रह्या व्यापक । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

स्वयंप्रकाश कहनेसैं परप्रकाशका निषेध भया। बाकी रह्या स्वयंप्रकाश । सौ लक्षणासैं सिद्ध है ॥

कूटस्थ (अविकारी) कहनेसैं विकारका निषेध भया। बाकी रह्या निर्विकारी । सो लक्ष-

णासैं सिद्ध है ॥

साक्षी द्रष्टा औ उपद्रष्टा कहनेसैं साक्ष्यदृश्य औ उपदृश्य (समीपगत वस्तु) का निषेध भया । बाकी रह्या साक्षी द्रष्टा औ उपद्रष्टा । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

एक कहनेसै नानाका निषेध भया । बाकी रह्या एक । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

इसरीतिसैं अन्य विधेयविशेषणविषै बी जानना ॥

प्रश्नः– अनंतादिक निषेध्यविशेषण । प्रपंचका निषेध कैसैं करै हैं ?

उत्तरः– अनंत कहनेसैं देशकालवस्तुकृत परिच्छेदका निषेध है । अखंड कहनैसैं पंचविध वा त्रिविध भेदका निषेध है । अजन्म कहनैसैं जन्मका निषेध है ॥

इसरीतिसैं अन्य निषेध्यविशेषणनविषै बी जानना ॥

प्रश्नः– इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनैका क्या प्रयोजन है ?

उत्तरः– इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनैका प्रयोजन यह है कि । चेतनकूं मनवाणीका अविषय कहनैहारी श्रुतिके अर्थका अविरोध होवै है ॥ जातैं गुण क्रिया जाति औ संबंध आदिक जो शब्दकी अरु मनकी प्रवृत्तिके निमित्तरूप धर्म हैं । सो ब्रह्ममैं नहीं हैं । किंतु निर्धर्मक होनेतैं ब्रह्म निर्विशेष है । यातैं श्रुति बी ताकूं मनवाणीका अविषय कहती है ॥ किंवा जो कछु बोलना है सो द्वैतसैं होवै है । अद्वैतसैं नहीं । यातैं इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनैसैं श्रुतिविरुद्ध द्वैतकी सिद्धि होवै नहीं । औ अद्वैत सुखसैं सम-

जनेकूं शक्य होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये अवाच्यसिद्धांतवर्णननामिका नवमकला समाप्ता ॥ ९ ॥



अथ दशमकलाप्रारंभः ॥ १० ॥

॥ सामान्यविशेषचैतन्यवर्णन ॥

प्रश्नः– विशेषचैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः– अंतःकरण औ अंतःकरणकी वृत्तिनविषै जो सामान्यचैतन्य ब्रह्मका प्रतिबिंबरूप चिदाभास । सो विशेषचैतन्य[१०३] है ॥

प्रश्नः– चिदाभासका लक्षण क्या है ?

॥ १०३ ॥ इहां चिदाभासरूप जो विशेषचैतन्य कहा है । सो षष्ठकलाविषै उक्त कल्पितविशेषअंशके अंतर्गत है ॥

उत्तरः— चैतन्य (ब्रह्म)के लक्षणसैं रहित होवै औ चैतन्यकी न्याई भासै। सो चिदाभास कहिये है ॥

प्रश्नः— यह चिदाभास विशेषचैतन्य काहेतैं कहिये है ?

उत्तरः— अल्प देश औ कालविषै जो वस्तु होवै। सो विशेष[१०४] कहिये है॥ जातैं चिदाभास अंतःकरणदेश औ जाग्रत्स्वप्नकाल वा अज्ञानका-

---

॥१०४॥ अधिष्ठान औ अध्यस्त। इस भेदतैं विशेष दोप्रकारका है॥ तिनमैं भ्रांतिकालविषै जाकी प्रतीति होवै नहीं।।किंतु जाकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवै। सो अधिष्ठानरूप विशेष है॥ औ भ्रांतिकालविषै जाकी प्रतीति होवै औ अधिष्ठानके ज्ञानकालविषै जाकी प्रतीति होवै नहीं। सो अध्यस्तरूप विशेष है। याहीकूं कल्पितविशेष कहै हैं ॥

लविषै है । यातैं विशेषचैतन्य कहिये है ॥

प्रश्नः– विशेषचैतन्यविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः– जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है । परंतु सर्वठिकानै प्रतिबिंब होता नहीं । औ जहां जल वा दर्पणरूप उपाधि होवै । तहां प्रतिबिंबरूप करि विशेष भासता है ॥ किंवा जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है । परंतु सो वस्त्र कपास आदिककूं जलावता नहीं । औ जहां आगिआ (सूर्यकांतमणि)रूप उपाधि होवै । तहां अग्निरूपसैं विशेष होयके वस्त्र कपास आदिककूं जलावता है ॥ तिनमैं सामान्यरूप है । सो सर्वदा ज्यूंका त्यूं होनेतैं यथार्थ (बहुकालस्थायि)है । औ उपाधिकरि भासता है जो विशेषरूप । सो व्यभिचारी होनेतैं अयथार्थ (अल्पकालस्थायि) है ॥

तैसैं सामनयचैतन्य जो अस्ति भाति प्रिय।

सो सर्वत्र समान है। परंतु तिससैं बोलना चलना इत्यादिक विशेषव्यवहार होता नहीं। औ जहां अंतःकरणरूप उपाधि होवै। तहां चिदाभासरूपसैं विशेषचैतन्य होयके बोलना चलना। कर्त्तापना भोक्तापना। परलोक इसलोकविषै गमन आगमन। इत्यादिक विशेषव्यवहार होवै है॥ तिनमैं सामान्यचैतन्य जो ब्रह्म। सो सत्य है। औ उपाधिकरि भासता है जो विशेषचैतन्य चिदाभास। सो मिथ्या है॥ तैसैं पुण्यपापका कर्तापना। सुखदुःखका भोक्तापना। परलोक इसलोकविषै गमनागमन। जन्ममरण। चौरासीलक्षयोनिकी प्राप्ति। इत्यादिक संसाररूप धर्म बी चिदाभासके हैं। यातैं मिथ्या हैं॥

प्रश्नः— विशेषचैतन्यके जाननैमैं क्या निश्चय करना?

उत्तरः– विशेषचैतन्य जो चिदाभास औ तिसके धर्म। सो मैं नहीं औ मेरे नहीं । किंतु ये मेरेविषै कल्पित हैं ॥ मैं इनका अधिष्ठान सामान्यचैतन्य इनतैं न्यारा हूं। यह निश्चय करना॥

प्रश्नः– सामान्यचैतन्य सो क्या है ?।

उत्तरः– आकाशकी न्याई सर्वत्र परिपूर्ण। सर्व नामरूपका अधिष्ठान। अस्ति भाति प्रियरूप। निर्विकार जो ब्रह्म है। सो सामान्यचैतन्य है ॥

प्रश्नः– ब्रह्म। सामान्यचैतन्य काहेतैं कहिये है ?

उत्तरः– अधिक देश औ कालविषै जो वस्तु होवै। सो सामान्य कहिये है ॥ जातैं ब्रह्म। बुद्धिकल्पित सर्वदेश औ सर्वकालविषै व्यापक है। तातैं ब्रह्म सामान्यचैतन्य कहिये है ॥

प्रश्नः– सामान्यचैतन्य जाननैविषै दृष्टांत क्या है?

उत्तरः–दृष्टांतः–जैसें एक रज्जुकेविषै नाना पुरुषनकूं किसीकूं दंडकी। किसीकूं सर्पकी। किसीकूं पृथ्वीके रेषाकी। किसीकूं जलधाराकी भ्रांति होवै है॥ तिस भ्रांतिविषै दोअंश हैं॥ एक सामान्य इदंअंश है। औ दूसरा सर्पादिक विशेषअंश है॥ तिनमैं "यह दंड है। यह सर्प है। यह पृथिवीकी रेषा है। यह जलधारा है।" इसरीतिसैं सर्पादिक विशेषअंशनविषै सामान्य इदंअंश सर्वत्र व्यापक है। औ सो रज्जुका स्वरूप है॥ सो सामान्य इदंअंश जातैं भ्रांतिकालविषै बी भासता है। औ भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै बी "यह रज्जु है"। इसरीतिसैं भासता है। यातैं अव्यभिचारी होनैतैं सत्य है। औ

व्यभिचारी जो सर्पादिक विशेषअंश सो कल्पित है ॥

सिद्धांतः— तैसैं सर्वपदार्थनविषै पांचअंश हैं:— १ अस्ति। २ भाति। ३ प्रिय। ४ नाम ५ रूप॥

(१) "घट है" यह अस्ति (सत्)।

(२) "घट भासता है" यह भाति (चित्)।

(३) "घट प्यारा है"। काहेतैं जो घट जल भरनेकूं उपयोगी है। यातैं यह प्रिय (आनंद)॥ सर्पसिंहआदिक बी सर्पिणी औ सिंहिणीकूं प्रिय है।

(४) "घट" यह दो अक्षर नाम है॥

(५) स्थूलगोलउदरवान्‌घटका रूप (आकार।) है॥

ऐसैं। घट आदिक सर्व भूत औ भूतनके कार्यनविषै बी जानना॥ यह बाहीरके पदार्थन-

विषै पांच अंश दिखाये ॥

तैसैं भितर देह आदिकविषै:—

(अ) " मैं हूं " यह अस्ति ।

(भा) "मै भासता (जानता) हूं" यह भाति।

(प्रि) " मै आप आपकूं प्यारा हूं " यह प्रिय है ।

(ना) औ देह। इंद्रिय। प्राण । मन। बुद्धि। चित्त । अहंकार । अज्ञान । औ इनके धर्म । ये नाम हैं ।

(रू) औ इनके " यथायोग्य आकार " सो रूप है ॥

ये अंतरके पदार्थनविषै पांच अंश दिखाये॥

इन सर्वके नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) " पृथिवी है " ।

(भा) " पृथिवी भासती है " ।

(प्रि) पृथिवी प्रिय है" । काहेतैं पृथिवी
रहनेकूं स्थान देती है ।
(ना) "पृथिवी" ऐसा नाम है । औ
(रू) "गंधगुणयुक्त" रूप है ॥
पृथिवीके नामरूपके त्याग कियेसैं
(अ) "जल है" ।
(भा) "जल भासता है ।
(प्रि) "जल प्रिय है" । काहेतैं जल
तृषाकूं दूरी करता है ।
(ना) "जल" ऐसा नाम है । औ
(रू) "शीतस्पर्शगुणयुक्त" रूप है ॥
जलके नामरूपके त्याग कियेसैं
(अ) "तेज है" ।
(भा) "तेज भासता है" ।
(प्रि) "तेज प्रिय है" । काहेतैं तेज शीत

औ अंधकारकूं दूरी करता है ।

(ना) " तेज " ऐसा नाम है । औ

(रू) " उष्णस्पर्शगुणयुक्त " रूप है ॥

तेजके नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) " वायु है " ।

(भा) " वायु भासता है " ।

(प्रि) " वायु प्रिय है" । काहेतैं वायु प्रसीनाकूं दूरी करता है ।

(ना) " वायु " ऐसा नाम है । औ

(रू) "रूपरहित अरु स्पर्शगुणयुक्त" रूपहै ॥

वायुके नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) " आकाश है " ।

(भा) " आकाश भासता है " ।

(प्रि) " आकाश प्रिय है " । काहेतैं आकाश रहने फिरनेंकूं अवकाश देता है।

नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) "पीछे क्या है सो मै जानता नहीं"। ऐसा अज्ञान है। सो

(भा) " अज्ञान भासता है "।

(प्रि) " अज्ञान प्रिय है " काहेतैं अज्ञानी जीवनकूं प्रिय है । औ अज्ञान प्रपंचका कारण होनैसैं जीवनका निर्वाह करता है।

(ना) " अज्ञान " ऐसा नाम है। औ

(रू) " आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीय भावरूप " यह रूप है ॥

अज्ञानके नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) " कछु बी नहीं " ऐसे प्रतीयमान सर्व वस्तुनका अभाव ऐसा शून्य है।

(प्रि) "शून्य शून्यवादिनकूं प्रिय है"। याका

(ना) "शून्य ऐसा नाम है। औ

(रू) "सर्व वस्तुनका अभाव" रूप है॥

शून्यके नामरूपके त्याग कियेसैं

(अ) शून्यके अभावत्वका अधिष्ठान। सत्-वस्तुहीं अवशेष रहता है। सो

(भा) शून्यके भावअभावपनैकूं प्रकाशता है। यातैं चित् है। औ

(प्रि) दुःखसैं भिन्न है। यातैं आनंद है॥

इसरीतिसैं सर्व नामरूपविषै अनुगत अव्यभिचारी नामरूपका अधिष्ठान ब्रह्म सामान्यचैतन्य है॥ औ घटके नामरूप पटविषै नहीं।

॥ १०५ ॥ सुषुप्ति। मूर्छा। औ समाधिका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है॥ "घटकूं मैं जानता हूं"

[illegible] घटके नामरूप घटाविषै नहीं । तातैं परस्पर [१०६]व्यभिचारी ये नामरूप मिथ्या हैं । यह सामान्यचैतन्यके जाननैविषै दृष्टांत है ॥

इसरीतिसैं प्रमाता प्रमाण औ प्रमेयरूप त्रिपुटीका प्रकाशक साक्षी सामान्यचैतन्य है ॥ जाग्रदादि अवस्थाकी संधिनका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥ तैसैंहीं वृत्तिनकी संधिनका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥ अंगुष्ठके अग्रभागका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥ देशांतरविषै वृत्ति गई होवै । तब तिसके मध्यभागका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥ सूर्यचंद्राकार वृत्ति हुयी होवै तिसके मध्यभागका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥ "मेरुकूं मैं नहीं जानता हूं" ऐसैं अज्ञानविशिष्ट मेरुका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ॥

॥ १०६ ॥ जो वस्तु कहींक होवै औ कहींक न होवै । सो वस्तु व्यभिचारी है ॥

प्रश्नः– उक्त सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वतें अधिक सूक्ष्मता औ व्यापकता कैसें हैं?

उत्तरः– जो जो कार्य है। सो स्थूल औ परिच्छिन्न होवै है। औ जो जो कारण है सो सूक्ष्म औ व्यापक (अधिकदेशवार्ति) होवै है। यह नियम है॥ जातें ब्रह्म सर्वका कारण है। यातें सर्वसें अधिक सूक्ष्म औ व्यापक है॥ सो अब दिखावै हैं:– जातें समुद्रजलसें कठिन फेन औ लवण होवै है। यातें जान्या जावै है कि पृथिवी जलका कार्य है। तातें पृथिवीतें जल सूक्ष्म औ व्यापक है॥ किंवा पृथिवीके पाषाण आदिक अवयव वस्त्रविषे डाले हुये निकसते नहीं औ जल वस्त्रविषे ठहरता नहीं। औ पृथिवीमें जहां जहां खोदके देखो तहां तहां जल निकसता है। औ पुराणोविषे पृथिवीतें दशगुण

अधिकदेशवर्ति जल कहा है। यातैं बी पृथिवीतैं जल सूक्ष्म औ व्यापक है। तैसैं अग्नि आदिकके तापसैं शरीरविषै प्रस्वेद (पसीना) छूटता है औ वर्षा होवै है। यातैं जान्या जावै है कि जल अग्निका कार्य है। तातैं जलतैं अग्नि(तेज) सूक्ष्म है औ व्यापक है॥ किंवा जल वस्त्रविषै ठहरता नहीं परंतु घटविषै ठहरता है औ सूर्यादिकका प्रकाश घटविषै बी ठहरता नहीं। औ पुराणोविषै जलतैं दशगुण अधिकदेशवर्ति तेज कहा है। यातैं बी जलतैं तेज सूक्ष्म है औ व्यापक है। तैसैं अग्निका जन्म औ नाश पवनके आधीन है। यातैं जान्या जावै है कि तेज वायुका कार्य है। तातैं तेजतैं वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है॥ किंवा सूर्यादिकका प्रकाश घटादि पात्रविषै ठहरता नहीं परंतु नेत्रसैं दीखता है।

औ वायु तौ नेत्रसैं बी दीखता नहीं । अरु पुराणोविषै तेजतैं दशगुणअधिक वायु कहा है। यातैं तेजतैं वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है । तैसैं वायुकी उत्पत्ति स्थिति अरु लय आकाश (पुलार) विषै हीं होवै है । यातैं जान्या जावै है कि वायु आकाशका कार्य है । तातैं वायुतैं आकाश सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥ किंवा वायु नेत्रसैं दीखता नहीं परंतु त्वचासैं स्पर्शगुणद्वारा ग्रहण होता है। औ आकाश तौ त्वचासैं बी ग्रहण होता नहीं औ पुराणोविषै वायुतैं दशगुण अधिकदेशवर्ति आकाश कहा है ॥ यातैं बी सो वायुतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ तैसै "आकाशसैं आगे क्या होवैगा" ऐसा विचार किये हुये "मैं नहीं जानता हूं" ऐसै बुद्धिके कुंठीभावका आश्रय (विषय) अज्ञान प्रतीत होता है । यातैं जा-

न्या जावै है कि आकाश अज्ञानका कार्य है। तातैं सो अज्ञान। आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ किंवा आकाश त्वचासैं ग्रहण होता नहीं परंतु मनसैं ग्रहण होता है। औ अज्ञान मनसैं बी ग्रहण होता नहीं। औ आकाशतैं अनंतगुण अधिक अज्ञान शास्त्रविषै कहा है। यातैं बी सो आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ तैसैं "मैं नहीं जानता हूं" इस अनुभवका विषय जो अज्ञान। ताका प्रकाश जाननेवाले चेतनसैं होवै है। औ "अज्ञान है अज्ञान भासता है। अज्ञान अज्ञपुरुषनकूं प्रिय है"। इसरीतिसैं अज्ञानविषै अनुस्यूत अस्ति भाति प्रियरूप ब्रह्मचेतन भासता है। यातैं अज्ञान। ब्रह्मचेतनके आश्रित है। तातैं ब्रह्मचेतन अज्ञानतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ किंवा अज्ञान मनकरि ग्रहण होता नहीं। परंतु

"मैं नहीं जानता हूं" इस अनुभवरूप लिंग-करि ताका अनुमान होवै है। औ ब्रह्मचेतन स्वयंप्रकाशरूप होनेतैं किसी बी प्रमाणका विषय नहीं। औ शरीरविषै तिलकी न्याई ब्रह्मके एक देशविषै अज्ञान स्थित है। औ अवशेष रहा ब्रह्म शुद्धस्वप्रकाश है। ऐसै श्रुतिविषै कहा है। यातैं बी सो अज्ञानतैं सूक्ष्म औ व्यापक है। इसरीतिसैं सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वप्रपंचसैं अधिक सूक्ष्मता औ व्यापकता है ॥

प्रश्नः– सामान्यचैतन्यके जाननैसैं क्या निश्चय करना?

उत्तरः– अस्ति भाति प्रियरूप सामान्यचैतन्य जो ब्रह्म। सो मैं हूं। औ मैं सो अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यचैतन्य ब्रह्म हूं। औ

नामरूप जगत् मेरेविषै कल्पित है। यह निश्चय करना ॥

प्रश्नः– इसरीतिसैं निश्चय कियेसैं क्या होवै है ?

उत्तरः– इसरीतिसैं निश्चय कियेसैं सर्वअनर्थकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सामान्यविशेषचैतन्यवर्णननामिका दशमकला समाप्ता ॥१०॥

अथ एकादशकलाप्रारंभः ॥ ११ ॥

॥ "तत्त्वं" पदार्थैक्यनिरूपण ॥

प्रश्नः– "तत्" पद सो क्या है ?

उत्तरः– सामवेदकी छांदोग्यउपनिषद्के षष्ठ

प्रपाठक (अध्याय) विषै श्वेतकेतु नाम पुत्रके प्रति तिसके पिता उद्दालकमुनिनैं उपदेश किये "तत्त्वमसि" महावाक्यका जो प्रथम पद । सो "तत्" पद है ॥

॥ १०७ ॥ इसकी न्याई और "प्रज्ञानं ब्रह्म" यह ऋग्वेदका वाक्य है । औ "अहं ब्रह्मास्मि" यह यजुर्वेदका वाक्य है । औ "अयमात्मा ब्रह्म" यह अथर्वण वेदका महावाक्य है ॥ जो तत्पदका वाच्यअर्थ ईश्वर है औ लक्ष्यअर्थ शुद्धब्रह्म है । सोई ऊपर लिखे तीनमहावाक्यगत "ब्रह्म" शब्दका वाच्यअर्थ अरु लक्ष्यअर्थ है । औ जो त्वंपदका वाच्यअर्थ जीव है अरु लक्ष्यअर्थ कूटस्थसाक्षी है । सोई उक्त तीनमहावाक्यगत "प्रज्ञानं" "अहं" "अयं" पदसहित "आत्मा" इन तीनपदनका वाच्यअर्थ औ लक्ष्य अर्थ है । औ सारे "तत्त्वमसि" वाक्यका जो जीवब्रह्मकी एकतारूप अर्थ है । सोई उक्त तीनवाक्यनका अर्थ है ॥

प्रश्नः– "त्वं" पद सो क्या है?

उत्तरः– इसीही "तत्त्वमसि" महावाक्यका दूसरा पद। सो "त्वं" पद है॥

प्रश्नः– वाच्यार्थ औ लक्ष्यार्थ सो क्या है?

उत्तरः– शब्दका अर्थके साथि जो संबंध। सो शब्दकी वृत्ति कहिये है॥ सो वृत्ति दो प्रकारकी है॥ एक शक्तिवृत्ति है औ दूसरी लक्षणावृत्ति है॥ शब्दविषैं अर्थके ज्ञान करनैका सामर्थ्यरूप जो शब्दका अर्थके साथि साक्षात्‌संबंध। सो शब्दकी शक्तिवृत्ति है॥ औ शक्तिवृत्तिसैं जाने हुये अर्थद्वारा जो शब्दका अर्थके साथि परंपरारूप संबंध है। सो शब्दकी लक्षणावृत्ति है॥ तिनमैं शक्तिवृत्तिकरि जो अर्थ जानिये है। सो शब्दका वाच्यअर्थ कहिये है। ताहीकूं शक्यअर्थ औ मुख्यअर्थ बी कहै हैं॥

औ लक्षणावृत्तिकरि जो अर्थ जानिये है । सो शब्दका लक्ष्यअर्थ कहिये है ॥

प्रश्नः– लक्षणावृत्ति कितनै प्रकारकी है ?

उत्तरः– १ जहत् २ अजहत् औ ३ भागत्यागके भेदतैं लक्षणावृत्ति तीनप्रकारकी है ॥

प्रश्नः– तीनप्रकारकी लक्षणाके लक्षण औ उदाहरण कौनसे हैं ?

उत्तरः–॥१॥जहां संपूर्ण वाच्यअर्थका त्यागकरिके वाच्यअर्थके संबंधीका ग्रहण होवै । सो जहत्लक्षणा है ॥ जैसैं कोईक पुरुषनैं काहूकूं पूछया किः– "गाईका वाडा कहां है?" तब तिसनैं कह्या कि " गंगाविषै गाईका वाडा है।" इहां गंगापदका वाच्यअर्थ देवनदीका प्रवाह है। तिसविषै गाईका वाडा संभवै नहीं । यातैं संपूर्ण वाच्यअर्थ जो देवनदीका प्रवाह । ताका त्याग

करिके । तिसके संबंधी तीरका ग्रहण है ॥

॥ २ ॥ जहां वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके संबंधीका ग्रहण होवै । सो अजहत्लक्षणा है ॥ जैसैं किसीनैं कह्या किः– "शोण दौडता है" ॥ तहां शोणपदका वाच्यअर्थ जो लालरंग है । तिसविषै दौडना संभवै नहीं । यातैं लालरंगवाला घोडा दौडता है । ऐसैं वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके संबंधी घोडेरूप अधिकअर्थका ग्रहण होवै है ॥

॥ ३ ॥ जहां विरोधी कछुक वाच्यभागका त्याग करिके तिसके संबंधी अविरोधी कछुक वाच्यभागका ग्रहण होवै । सो भागत्यागलक्षणा है ॥ जैसैं पूर्व किसी देशकालविषै देख्या पुरुष । अन्य देशकालविषै देखनेमैं आवै । तब देखनेहारा पुरुष कहता है किः–"तिस (दूर)

देश औ तिस (भूत) कालविषै जो पुरुष देख्या था । सो पुरुष इस (समीप) देश औ इस (वर्तमान) कालविषै आया है " ॥ इहां तिस देशकाल औ इस देशकालरूप वाच्यभागकी एकताका विरोध है । यातैं तिनकी दृष्टि त्याग करिके । "पुरुष यहहीं है" ऐसैं अविरोधी वाच्यभागका ग्रहण होवै है ॥

प्रश्न.— तीनप्रकारकी लक्षणामैंसैं महावाक्यविषै कौनसी लक्षणा संभवै है ?

उत्तरः—जहां जहत्लक्षणा होवै । तहां संपूर्ण वाच्यअर्थका त्याग होवै है ॥ जो महावाक्यविषै जहत्लक्षणा मानिये तौ "तत्" "त्वं" पदके वाच्यअर्थविषै प्रवेश भये ब्रह्मचैतन्य औ साक्षीचैतन्यका त्याग होवैगा औ तिनतैं भिन्न असत् जड दुःखरूप प्रपंचका ग्रहण करना होवै-

गा। तातैं महाअनर्थकी प्राप्ति होवैगी। तिसतैं पुरुषार्थ सिद्ध होवै नहीं। यातैं महावाक्यविषै जहत्लक्षणा संभवै नहीं ॥ १ ॥

जहां अजहत्लक्षणा होवै, तहां वाच्यअर्थका कछु बी त्याग होवै नहीं। जो महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा मानिये तौ "तत्" "त्वं" पदके वाच्यअर्थकी एकताका विरोध दूरी होवै नहीं। तातैं लक्षणा करनैका कछु प्रयोजन सिद्ध होवै नहीं। यातैं महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा संभवै नहीं ॥ २ ॥

जहां भागत्यागलक्षणा होवै। तहां विरोधी भागका त्याग करिके अविरोधीभागका ग्रहण होवै है ॥ जो महावाक्यविषै भागत्यागलक्षणा मानिये तौ "तत्" "त्वं" पदके वाच्यअर्थमैंसैं धर्मसहित मायाअविद्यारूप विरोधीभा-

ब्रह्म । ये सर्व मिलिके ईश्वर कहिये है । सो तत्पदका वाच्यअर्थ है ॥

इन सर्वसहित माया औ चिदाभासभागका त्याग करिके अवशेष रह्या जो विराट् हिरण्यगर्भ औ अव्याकृतका अधिष्ठान ईश्वरसाक्षी शुद्धब्रह्म सो "तत्" पदका लक्ष्यअर्थ है ॥

प्रश्नः—ब्रह्मका औ मायामैं प्रतिबिंबरूप ईश्वरका परस्पर अध्यास (अन्योन्याध्यास) कैसैं है?

उत्तरः— अविचारदृष्टिसैं ब्रह्मकी सत्यताका ईश्वरविषै संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) अध्यस्त है । यातैं ईश्वर सत्य प्रतीत होवै है औ ईश्वर अरु ताकी कारणताका स्वरूप ब्रह्ममैं अध्यस्त है । यातैं ब्रह्म । जगत्कारण प्रतीत होवै है ॥ याहीका अनुवाद । तटस्थलक्षणके बोधक श्रुति पुराण

औ आचार्योंके वचन करै हैं ॥ इसरीतिसैं ब्रह्म औ ईश्वरका परस्परअध्यास है ॥

प्रश्नः– उक्तअध्यासकी निवृत्ति किससैं होवै है?

उत्तरः– उक्त अध्यासकी निवृत्ति विवेकज्ञानसैं होवै है ॥

प्रश्नः– "त्वं" पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्यअर्थ क्या है?

उत्तरः– १ चक्षु कंठ औ हृदय । ये तीन जीवके देश हैं ॥ २ जाग्रत् स्वप्न औ सुषुप्ति । ये तीन जीवके काल हैं ॥ ३ स्थूल सूक्ष्म औ कारण । ये तीन जीवके वस्तु (भोगकी सामग्री) हैं ॥ ४ औ यहहीं शरीर है ॥ ५ विश्व तैजस औ प्राज्ञ । ये तीन जीवपनेके अभिमानी हैं ॥ ६ जागृतकूं आदिलेके मोक्षपर्यंत जो भोगरूप सं-

सार । सो जीवका कार्य है ॥ ७ अल्पशक्ति-पना । अल्पज्ञपना । परिच्छिन्नपना । नानापना । पराधीनपना । असमर्थपना । अपरोक्षपना । औ अविद्याउपाधिवान्पना । ये आठ जीवके धर्म हैं ॥ इन सर्वसहित जो अविद्या औ तिसविषै प्रतिबिंबरूप चिदाभास औ तिनका अधिष्ठान कूटस्थ । ये सर्व मिलिके जीव कहिये है ॥ सो "त्वं" पदका वाच्यअर्थ है ॥

इन सर्वसहित चिदाभासभागका त्याग क-रिके अवशेष रह्या जो स्थूल सूक्ष्म कारण शरी-रका अधिष्ठान जीवसाक्षी कूटस्थ आत्मा । सो "त्वं" पदका लक्ष्यअर्थ है ॥

प्रश्नः— कूटस्थका औ बुद्धिमें प्रतिबिंबरूप जीवका परस्परअध्यास कैसें है?

उत्तरः— अविचारदृष्टिसैं कूटस्थकी सत्य-

ताका संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) जीवमैं अध्यस्त है। यातैं जीव मिथ्या प्रतीत होवै नहीं। किंतु सत्य प्रतीत होवै है। औ जीव अरु ताके कर्तापने आदिक धर्मका स्वरूप। कूटस्थमैं अध्यस्त है। यातैं कूटस्थ अकर्ता अभोक्ता असंसारी नित्यमुक्त असंग ब्रह्मरूप प्रतीत होवै नहीं। किंतु तातैं विपरीत प्रतीत होवै है॥ इसरीतिसैं कूटस्थका औ जीवका परस्परअध्यास है॥

प्रश्नः— उक्तअध्यासकी निवृत्ति किससैं होवै है?

उत्तरः— उक्तअध्यासकी निवृत्ति विवेकज्ञानसैं होवै है॥

प्रश्नः— "तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थकी महावाक्यविषै कथन करी एकता कैसै संभवै?

उत्तरः– यद्यपि "तत्" पद औ "त्वं" पदके वाच्यअर्थ जो उपाधिसहित चैतन्य (ईश्वर औ जीव) हैं । तिनकी एकताका विरोध है । तथापि "तत्" पदका लक्ष्यार्थ ब्रह्म औ "त्वं" पदका लक्ष्यार्थ आत्मा । तिनकी एकताका कछु बी विरोध नहीं ॥ ऐसैं "तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थकी महावाक्यविषै कथन करी एकता संभवै है ॥

प्रश्नः– "मैं ब्रह्म हूं" ऐसा ब्रह्मआत्माकी एकताका ज्ञान । किसकूं होवै है ?

उत्तरः– यह ज्ञान । चिदाभासकूं होवै है ॥

प्रश्नः– ब्रह्मतैं भिन्न जो चिदाभास । सो आपकूं ब्रह्मरूप करिके कैसैं जानै है ?

उत्तरः– जीवभावके अधिष्ठान कूटस्थका ब्रह्मके साथि मुख्य अभेद है औ बुद्धिसहित चि-

दाभासका ब्रह्मकेसाथि अपने स्वरूपकूं बाध करिके अभेद होवै है ॥ यातें चिदाभास अपने स्वरूपका बाध करिके आपकूं अहंशब्दके लक्ष्य-अर्थ कूटस्थरूप जानै है। औ अपने निजरूप कूटस्थका "मैं कूटस्थ हूं" ऐसैं अभिमान करिके "मैं ब्रह्म हूं" ऐसैं जानै है ॥ इसरीतिसैं चिदाभास आपकूं ब्रह्मरूप करिके जानै है ॥

प्रश्नः— इन "तत्" औ "त्वं" पदके लक्ष्यार्थकी एकताविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः— ॥ १ ॥ दृष्टांतः— जैसैं घट मठ उपाधिसहित घटाकाश औ मठाकाशकी एकताका विरोध है। तथापि घटमठरूप उपाधिकी दृष्टिकूं छोडिके केवल आकाशकी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ २ ॥ जैसैं काचकी हंडी औ मृत्तिकाकी

हंडीविषै दीपक जलता होवै । तिनकी उपाधि दो हंडीकी एकताका विरोध है । तथापि अग्निपनैकरि दीपककी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ ३ ॥ जैसैं राजा औ रबारी (भेड) होवै । तिनकी उपाधि सेना औ अजावर्गकी एकताका विरोध है । तथापि मनुष्यपनैकी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ ४ ॥ जैसैं गंगाजल औ गंगाजलका कलश होवै । तिनकी उपाधि नदी औ कलशकी एकताका विरोध है । तथापि केवल गंगाजलकी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ ५ ॥ जैसैं सागर औ जलका बिंदु होवै तिनकी उपाधि सागर औ बिंदुकी एकताका विरोध है । केवल जलकी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ ६ ॥ जैसैं कोइएक पुरुषकूं पिताकी अपेक्षासैं पुत्र कहते हैं औ पितामहकी अपेक्षासैं पौत्र कहते हैं। तिनकी उपाधि पिता औ पितामहकी एकताका विरोध है। केवलपुरुषकी एकताका विरोध नहीं ॥

॥ ७ ॥ जैसैं कोई काशीका राजा था। सो हस्तीपर बैठिके स्वारीमैं निकस्या था। ताकूं कोई यात्रावासी पुरुषनैं अछीतरहसें देख्या था ॥ पीछे सो स्वदेशकूं गया औ काशीके राजाकूं कोई अन्यराजानैं राज्य छीनके निकास दिया ॥ तब सो लंगोटी पहरके अंगनैं विभूति लगायके हाथमैं तुंबी औ दंड लेके नग्नपादसैं तीर्थयात्राकूं गया ॥ फिरते फिरते तिस यात्रावासीपुरुषके ग्राममैं गया ॥ तब तिसकूं देखिके सो यात्रावासीपुरुष अन्ययात्रावासीपुरुषनकूं कहता भया किः— अ-

पननै काशीविषै जो राजा देख्या था । "सो यह है" । तब अन्ययात्रावासीपुरुष कहते भये किः– ॥ १ ॥ सो देश अन्य । यह देश अन्य ॥ २ ॥ ताका काल (अवस्था) अन्य । याका काल अन्य ॥ ३ ॥ तिसकी वस्तु (सामग्री) अन्य । याकी वस्तु अन्य ॥५॥ तिसका अभिमान अन्य । इसका अभिमान अन्य ॥ ६ ॥ तिसका कार्य अन्य । इसका कार्य अन्य ॥ ७ ॥ तिसके धर्म अन्य । इसके धर्म अन्य ॥ यातैं तिस काशीके राजाकी औ इस भिक्षुककी एकता कैसै बनै ? " तब सो प्रथम यात्रावासी पुरुष कहता भया किः– "तिसके औ इसके देश । काल । वस्तु । अभिमान । कार्य । औ धर्मका त्याग करिके दोनूंविषै अनुगत (अनुस्यूत) जो पुरुषमात्र सो एकहीं है" ॥

सिद्धांतः— तैसैं जीव ईश्वरके बी देश काल आदिकका त्याग करिके । दोनूंविषै अनुगत जो चेतनमात्रब्रह्म औ आत्मा । सो एकहीं है ॥ यातैं "ब्रह्म सो मैं हूं । औ मैं सो ब्रह्म हूं" । ऐसा दृढनिश्चय करना । सोई तत्त्वज्ञान है ॥ याहीतैं सर्वदुःखकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये "तत्त्वमसि" महावाक्यगत "तत्त्वं" पदार्थैक्यनिरूपणनामिका एकादशकला समाप्ता ॥ ११ ॥

अथ द्वादशकलाप्रारंभः ॥ १२ ॥

॥ ज्ञानीके कर्मनिवृत्तिका प्रकारवर्णन ॥

प्रश्नः— कर्म सो क्या है?

उत्तरः—शरीर वाणी औ मनकी जो क्रिया। सो कर्म है ॥

प्रश्नः— कर्म कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः— ॥ १ ॥ संचित ॥ २ ॥ प्रारब्ध औ ॥ ३ ॥ क्रियमाण (आगामि) भेदतैं कर्म तीन प्रकारका है ॥

प्रश्नः— संचितकर्म सो क्या है ?

उत्तरः— अनेक अतीतजन्मोविषै संचय किया जो कर्म। सो संचित है ॥ १ ॥

प्रश्नः— प्रारब्धकर्म सो क्या है ?

उत्तरः— अनेक संचितकर्मनके मध्यसैं परिपक्व भया औ ईश्वरकी इच्छासैं इस वर्तमानदेहका आरंभक जो कोई एक संचितकर्म। सो प्रारब्ध है ॥ २ ॥

प्रश्नः— क्रियमाणकर्म सो क्या है ?

उत्तरः—ज्ञानतैं पूर्व वा पीछे इस वर्तमान देहविषै मरणपर्यंत करिये है जो कर्म। सो क्रियमाण है ॥ ३ ॥

प्रश्नः— ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है?

उत्तरः— ज्ञानसैं अज्ञानके आवरणअंशकी निवृत्ति होवै है। आवरणकी निवृत्तिके भये आवरणकूं आश्रय करिके स्थित संचित (पूर्वके अनेकजन्मविषै किये) कर्मकी निवृत्ति (नाश) होवै है। औ ज्ञानके आगे पीछे इसजन्मविषै किये क्रियमाणकर्मका "मैं अकर्ता। अभोक्ता। असंग। ब्रह्म हूं।" इस निश्चयके बलसैं अपने आश्रय भ्रमजतादात्म्यके नाश करिके औ रागद्वेषके अभावतैं जलविषै स्थित कमलपत्रकी न्याई ज्ञानीकूं स्पर्श होवै नहीं। किंतु ज्ञानीके

क्रियमाण (इसजन्मविषै किये) शुभ औ अशुभ कर्मका क्रमतैं सुहृद (सकामीभक्त) औ द्वेषी (निंदकजन) ग्रहण करै हैं। औ अज्ञानकी विक्षेपशक्तिके आश्रित ज्ञानीके प्रारब्ध (पूर्वके किसीएक जन्मविषै किये इसजन्मके आरंभक) कर्मकी भोगसैं निवृत्ति होवै है। तातैं ज्ञानी सर्वकर्मसैं मुक्त है ॥ याहीतैं कर्मरचित जन्मादिक संसारसैं बी मुक्त है ॥ इसरीतिसैं ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये ज्ञानिकर्मनिवृत्तिप्रकारवर्णननामिका द्वादशकला समाप्ता ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशकलाप्रारंभः ॥ १३ ॥

॥ सप्तज्ञानभूमिकावर्णन ॥

प्रश्नः— सर्वज्ञानिनका निश्चय तौ एकहीं है। परंतु स्थितिका भेद काहेतैं है?

उत्तरः— सर्वज्ञानिनकी स्थितिका भेद ज्ञानभूमिकाके भेदतैं है ॥

प्रश्नः— सो ज्ञानभूमिका कितनी हैं?

उत्तरः— १ शुभेच्छा। २ सुविचारणा। ३ तनुमानसा। ४ सत्त्वापत्ति। ५ असंसक्ति। ६ पदार्थाभाविनी। ७ तुरीयगा। ये सात ज्ञानभूमिका हैं ॥

प्रश्नः— शुभेच्छा सो क्या है?

उत्तरः— पूर्वजन्मविषै अथवा इसजन्मविषै किये निष्कामकर्म औ उपसनासैं शुद्ध औ एकाग्रचित्तवाले पुरुषकूं विवेक वैराग्य षट्संपत्ति

औ मोक्षइच्छा। ये च्यारीसाधन होयके जो आत्माके जाननैकी तीव्रइच्छा होवै है। सो शुभेच्छा नाम ज्ञानकी प्रथमभूमिका है ॥ १ ॥

प्रश्नः– सुविचारणा सो क्या है?

उत्तरः– आत्माके जाननैकी तीव्रइच्छासैं ब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिपूर्वक शरण जायके। गुरुके मुखसैं जीवब्रह्मकी एकताके बोधक वेदांतवाक्यकूं श्रवण करिके। तिस श्रवण किये अर्थकूं आपके मनविषै घटावनैवास्ते अनेकयुक्तियांसैं मनन (विचार) करना। सो सुविचारणा नाम ज्ञानकी दूसरीभूमिका है ॥ २ ॥

प्रश्नः– तनुमानसा सो क्या है?

उत्तरः– स्वरूपके साक्षात्कार (अपरोक्षअनुभव) अर्थ श्रवणमननद्वारा निर्णय किये ब्रह्मात्माकी एकतारूप अर्थके निरंतर चिंतनरूप

निदिध्यासनसैं जो स्थूल (बहिर्मुख)मनकी सूक्ष्मता (अंतर्मुखता) होवै है। सो तनुमानसा नाम ज्ञानकी तीसरीभूमिका है ॥ ३ ॥

प्रश्नः— सत्त्वापत्ति सो क्या है?

उत्तरः— श्रवण मनन निदिध्यासनसैं संशय औ विपर्ययसैं रहित स्वरूपसाक्षात्काररूप निर्विकल्पस्थितिके भयेतैं। शुद्धसत्त्वगुणकी वा स्वरूपसत्ताकी जो चित्तविषै प्राप्ति होवै है। सो सत्त्वापत्ति नाम ज्ञानकी चतुर्थभूमिका है ॥ ४ ॥

प्रश्नः— असंसक्ति सो क्या है?

उत्तरः— निर्विकल्पसमाधिके अभ्यासकी परिपक्वतासैं देहविषै सर्वथा अहंता ममता गलित होयके। देहादिकविषै जो सर्वथा आसक्ति (प्रीति)का अभाव होवै है। सो असंसक्ति नाम ज्ञानकी पांचवीभूमिका है ॥ ५ ॥

प्रश्नः— पदार्थाभाविनी सो क्या है ?

उत्तरः— अतिशय निर्विकल्पसमाधिके अभ्याससैं देहादिक सर्वपदार्थनका अधिष्ठानब्रह्मरूपसैं प्रतीति होनैकरि जो अभाव (अप्रतीति) होवै है । सो पदार्थाभाविनी नाम ज्ञानकी षष्ठभूमिका है ॥ ६ ॥

प्रश्नः— तुरीयगा सो क्या है ?

उत्तरः— ज्ञाता ज्ञान औ ज्ञेयरूप त्रिपुटीकी चतुर्थपंचमभूमिकाकी न्याईं भावरूपकरि औ षष्ठभूमिकाकी न्याईं अभावरूपकरि प्रतीति बी जहां होवै नहीं । ऐसी जो स्वपरसैं उत्थानरहित तुरीयपदविषै मनकी स्थिति । सो तुरीयगा नाम ज्ञानकी सप्तमभूमिका है ॥ ७ ॥

प्रश्नः— ये सप्तभूमिका किसके साधन हैं ?

उत्तरः—प्रथम द्वितीय औ तृतीय भूमिका ।

तत्त्वज्ञानके साधन हैं। औ चतुर्थभूमिका तौ तत्त्वज्ञानरूप होनैतैं जीवन्मुक्ति औ विदेहमुक्तिका साधन है। औ पंचम षष्ठ औ सप्तम भूमिका

॥१०९॥ कृतोपासन (ज्ञानतैं पूर्व करी है पूर्ण उपासना जिसने सो) औ अकृतोपासन (ज्ञानतैं पूर्व नहीं करी है उपासना जिसनै सो)। इस भेदतैं चतुर्थभूमिकारूप ज्ञानका अधिकारी दोप्रकारका है॥ तिनमैं कृतोपासन जो है सो तौ सम्यक्वैराग्यादि साधनकरि संपन्न होवै है औ ज्ञानके अनंतर अल्पाभ्याससैं झटिति पंचमआदिक भूमिकाविषै आरूढ होवै है॥ औ अकृतोपासन जो है तामैं सर्वसाधन स्पष्ट प्रतीत होते नहीं। किंतु एक दो साधन प्रकट होवै हैं औ अन्यसाधन गोप्य रहते हैं। यातैं सो बुद्धिमान् होवै तौ चतुर्थभूमिकारूप तत्त्वज्ञानकूं पावता है। परंतु बहुकालके अभ्याससैं कदाचित् कोईक पंचमआदिक भूमिकाविषै आरूढ होवै है। झटिति नहीं॥

जीवन्मुक्तिके विलक्षणआनंदके साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सप्तज्ञानभूमिका-वर्णननामिका त्रयोदशकला समाप्ता ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशकलाप्रारंभः ॥ १४ ॥

॥ जीवन्मुक्तिविदेहमुक्तिवर्णन ॥

प्रश्नः– जीवन्मुक्ति सो क्या है ?

उत्तरः– देहादिक प्रपंचकी प्रतीतिके होते ब्रह्मस्वरूपसैं स्थिति। सो जीवन्मुक्ति है ॥

प्रश्नः– जीवन्मुक्तिविषै प्रपंचकी प्रतीति काहेतैं होवै है ?

उत्तरः– आवरण औ विक्षेप। ये दो अविद्याकी शक्तियां हैं। तिनमैं आवरणशक्तिका ज्ञानसैं नाश होवै है। तातैं ज्ञानीकूं अन्यजन्म

होवै नहीं। परंतु प्रारब्धके बलसैं दग्धधान्यकणकी न्याई विक्षेपशक्ति (अविद्यालेश) रहै है। तातैं जीवन्मुक्तिविषै प्रपंचकी प्रतीति होवै है॥

प्रश्नः— जीवन्मुक्तिविषै प्रपंचकी प्रतीति कैसैं होवै है?

उत्तरः— जैसैं रज्जुके ज्ञानसैं सर्पभ्रांतिके निवृत्त भये पीछे कंपादिक भासते हैं। औ जैसैं दर्पणके ज्ञानीकूं प्रतिबिंब भासता है। औ जैसैं मरुस्थलके ज्ञानीकूं मृगजल भासता है। तैसैं तत्त्वज्ञानीकूं जीवन्मुक्तिदशाविषै बाधित भये प्रपंचकी प्रतीति होवै है॥

प्रश्नः— बाधित भये प्रपंचकी प्रतीतिविषै अन्य दृष्टांत क्या है?

उत्तरः— दृष्टांतः— जैसैं महाभारतके यु-

द्धमैं द्रोणाचार्यके मरण भये पीछे अश्वत्थामाके साथि युद्ध भया है ॥ तिसी दिन सत्यसंकल्प श्रीकृष्णपरमात्मानै यह संकल्प किया किः— "आज फिरके ग्रहकूं आवैं तहांपर्यंत यह रथ औ घोडे ज्यूंके त्यूंही बनै रहैं"। यह चिंतन करिके युद्धभूमिमैं आये ॥ तहां अश्वत्थामानैं ब्रह्मास्त्र (अग्निअस्त्र) डाऱ्या। तिसकरि तिसी क्षणविषै अर्जुनके रथ औ घोडे भस्मीभूत भये। तौ बी श्रीकृष्णपरमात्मारूप सारथिके संकल्पके बलसैं ज्यूंके त्यूं बने रहै। जब ग्रहकूं आये तब भस्मीका ढेर हो गया ॥

सिद्धांतः— तैसै स्थूलदेहरूप रथ है। ताके पुण्यपापरूप दो चक्र हैं औ तीनगुणरूप ध्वज है औ पांचप्राणरूप बंधन है औ दशइंद्रियरूप घोडे हैं औ शुभ अशुभ शब्दादि पांचविषयरूप

मार्ग हैं औ मनरूप लगाम है औ बुद्धिरूप सारथि (श्रीकृष्ण) है औ प्रारब्धकर्मरूप ताका संकल्प है औ अहंकाररूप बैठनैका स्थान है औ आत्मारूपी रथी (अर्जुन) है । ताके वैराग्यादि साधनरूप शस्त्र हैं । सो रथपर आरूढ होयके सत्संगरूप रणभूमिमैं गया । ताकूं गुरुरूप अश्वत्थामानैं महावाक्यका उपदेशरूप ब्रह्मास्त्र माऱ्या । तिसकरि ज्ञानरूप अग्नि उदय होयके तिसी क्षणविषै देहादि प्रपंचरूप रथादिक सर्वका बाध भया । तौ बी श्रीकृष्णरूप सारथिस्थानी बुद्धिके प्रारब्धकर्मरूप संकल्पके बलसैं देहादिकका नाश होता नहीं । किंतु [११०] पीछे बी देहादिककी प्रतीति होवै है ॥ याहीकूं

॥ ११० ॥ जिसका नाश होवै सो नाशका प्रतियोगी है॥ ता प्रतियोगीकी नाशविषै प्रतीति होवै है औ

१११
बधितानुवृत्ति कहै हैं ॥ इसरीतिसैं यह बाधित भये प्रपंचकी प्रतीतिविषै दृष्टांत है ॥ १ ॥

प्रश्नः— विदेहमुक्ति सो क्या है?

उत्तरः— प्रपंचकी प्रतीतिरहित ब्रह्मस्वरूपसैं स्थिति । वा प्रारब्धकर्मके भोगसैं नाश भये पीछे स्थूलसूक्ष्मशरीरके आकारसैं परिणामकूं प्राप्त भये अज्ञानका चेतनविषै विलय । सो विदेहमुक्ति है ॥

बाधविषै प्रतियोगीकी प्रतीति होवै नहीं । किंतु तीनकालअभाव प्रतीत होवै है । यह नाश औ बाधका भेद है ॥

॥ १११ ॥ जैसैं कुलालका चक्र । दंडसैं फेरनेका प्रयत्न छोडे हुये पीछे बी वेगके बलसैं फिरता है । तैसैं बाध हुये पीछे बी प्रारब्धकर्मसैं देहादि प्रपंचकी जो प्रतीति होवै । सो बाधितानुवृत्ति है ॥

प्रश्नः– प्रारब्धके अंत भये कार्यसहित अज्ञानलेशका विलय किस साधनसैं होवै है ?

उत्तरः– प्रारब्धके अंत भये अधिक न्यून मूर्छाकालमैं यद्यपि ब्रह्माकारवृत्तिका असंभव है औ विद्वानकूं विधि बी नहीं है। तथापि सुषुप्तिकी न्याई ता मूर्छाकालमैं बी ब्रह्मविद्याका संस्कार है। तामैं आरूढ चेतनसैं कार्यसहित अज्ञानलेशका विलय (नाश) होवै है ॥ औ काष्ठआरूढअग्निसैं तृणादिकका दाह होयके आपके बी दाहकी न्याई। ता संस्कार आरूढ चेतनसैं प्रपंचका विनाश होयके आप (ज्ञानके संस्कार)का बी विनाश होवै है। पीछे असंग शुद्ध सच्चिदानंद स्वप्रकाश अपना आप ब्रह्म अवशेष रहता है ॥ २ ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये जीवन्मुक्तिवि-

देहमुक्तिवर्णननामिका चतुर्दशकला स-
माप्ता ॥ १४ ॥



अथ पंचदशकलाप्रारंभः ॥ १५ ॥

॥ वेदांतप्रमेय[112] (पदार्थ) वर्णन ॥

प्रश्नः– मोक्षका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः– कार्यसहित अज्ञानरूप अनर्थ (बं-

॥ ११२ ॥ वेदांतशास्त्ररूप प्रमाणसैं जन्य जो यथार्थज्ञान । सो प्रमा है ॥ ता प्रमासैं जाननैं योग्य जो पदार्थ । सो प्रमेय है ॥ तिनका इहां कथन है ॥ यातैं इस (पंचदशम) कलाके विचारतैं प्रमेयगत संशयकी निवृत्ति होवै है ॥ प्रमेयगत सं-शयका कथन । हमारे कीए बालबोधिनी टीकासहित बालबोध नामक ग्रंथके नवम उपदेशविषै किया है । तहां देखलेना ॥

ध)की निवृत्ति औ परमानंदरूप ब्रह्मकी प्राप्ति। यह मोक्षका स्वरूप है ॥

प्रश्नः– तिस मोक्षका साक्षात्साधन क्या है ?

उत्तरः– ब्रह्म औ आत्माकी एकताका अपरोक्षज्ञान। मोक्षका साक्षात्साधन है ॥

प्रश्नः– मोक्षका अवांतर (ज्ञानद्वारा) साधन क्या है ?

उत्तरः– निष्कामकर्म औ उपासनाआदिक अनेक मोक्षके अवांतरसाधन हैं ॥

प्रश्नः– तिस ज्ञानका विषय क्या है ?

उत्तरः– आत्मा औ ब्रह्मकी एकता। ज्ञानका विषय है॥

प्रश्नः– आत्माका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः– देह। इंद्रिय। प्राण। मन। बुद्धि।

अज्ञान । औ शून्यसैं भिन्न । अकर्ता । अभोक्ता । असंग । व्यापक । चेतन । आत्माका स्वरूप है ॥

प्रश्नः— ब्रह्मका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः— निष्प्रपंच । असंग । परिपूर्ण । चेतन । ब्रह्मका स्वरूप है ॥

प्रश्नः— ब्रह्मआत्माकी एकता कैसी है ?

उत्तरः— सच्चिदानंद । ऐश्वर्यस्वरूप । सदा विद्यमान । ब्रह्मआत्माकी एकता है ॥

प्रश्नः— ज्ञानका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः— जीवब्रह्मके अभेदका निश्चय । ज्ञानका स्वरूप है ॥

प्रश्नः— ज्ञानका साक्षात्‌अंतरंग (समीपका) साधन क्या है ?

उत्तरः— ब्रह्मनिष्ठगुरुके मुखसैं महावाक्यके अर्थका श्रवण । ज्ञानका साक्षात्‌अंतरंगसाधन है ॥

प्रश्नः– ज्ञानके परंपरासैं अंतरंगसाधन कौनसैं हैं ?

उत्तरः– विवेक। वैराग्य। षट्संपत्ति (शम। दम। उपरति। तितिक्षा। श्रद्धा। समाधान)। मुमुक्षुता। "तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थका शोधन। श्रवण। मनन। औ निदिध्यासन। ये आठ ज्ञानके परंपरासैं अंतरंगसाधन हैं ॥

प्रश्नः–ज्ञानके बहिरंग (दूरके) साधन कौन हैं?

उत्तरः– निष्कामकर्म औ निष्कामउपासना आदिक। ज्ञानके बहिरंगसाधन हैं ॥

प्रश्नः–ज्ञानके सर्व मिलिके कितनैं साधन हैं ?

उत्तरः– ज्ञानके सर्व मिलिके एकादश (११ वा कछु अधिक) साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये वेदांतप्रमेयनिरूपणनामिका पंचदशकला समाप्ता ॥ १५ ॥

अथ षोडशकला प्रारंभ ॥ १६ ॥

॥ वेदांतपदार्थसंज्ञा वर्णन ॥

अजिव्हत्वादि ६।१४०
- अजिव्हत्व
- नपुंसकत्व
- पंगुत्व
- अंधत्व
- बधिरत्व
- मुग्धत्व

अतलादि ७।१४९
- अतल
- वितल
- सुतल
- तलातल
- रसातल
- महातल
- पाताल

अध्यात्मताप २।१७
- आधि (मानसताप)
- व्याधि (शारीरताप)

अध्यात्मादि ३।२९
- इंद्रिय (अध्यात्म)
- देवता (अधिदैव)
- विषय (अधिभूत)

विक्षेप

अभाव ५ । १२६

प्रागभाव

प्रध्वंसाभाव

अन्योऽन्याभाव

अत्यंताभाव

सामयिकाभाव

अरिवर्ग ६ । १२८

काम । मोह

क्रोध । मद

लोभ । मत्सर

अर्थवाद ३ । ६८

अनुवाद

गुणवाद

भुतार्थवाद

अवधि ३ । ५३

बोधकी

वैराग्यकी

उपरामकी

अवस्था ३ । ९९

जाग्रत । सुषुप्ति

स्वप्न

अवस्था ७ । १४६

अज्ञान

आवरण

विक्षेप

परोक्षज्ञान

अपरोक्षज्ञान

शोकनाश

तृप्ति

अवस्था ६ । १३३

शिशु । किशोर

कौमार । यौवन

पौगंड । जरा

आन्ध्यादि ३ । ९९

आन्ध्य । मांद्य । पटुत्व

आर्तादि भक्त ४ । ९७

आर्त । अर्थार्थी

जिज्ञासु । ज्ञानी

आश्रम ४ । ८२

ब्रह्मचर्य

गृहस्थ

वानप्रस्थ

संन्यास

ईश्वरके भग ६ । १४३

समग्रऐश्वर्य

समग्रधर्म

समग्रयश

समग्रश्री

समग्रज्ञान

समग्रवैराग्य

ईश्वरके ज्ञान ६ । १४४

उत्पत्ति । आगति

पलय । विद्या

गति । अविद्या

उत्पत्यादिक्रिया ४ । ९८

उत्पत्ति । विकार

प्राप्ति । संस्कार

उद्देशादि ३ । ७९

उद्देश । परीक्षा

लक्षण

उपवायु ५ । १०८

नाग । देवदत्त

कूर्म । धनंजय

कृकल

उपासना २ । २३

सगुण । निर्गुण

आरंभ । विवर्त
परिणाम
काल ३ । ४२
भूत
भविष्यत्
वर्तमान
कोश ५ । १०२
अन्नमय
प्राणमय
मनोमय
विज्ञानमय
आनंदमय
कौशिक ६ । १३०
त्वक् । मेद
मांस । मज्जा
रुधिर । अस्थि
क्लेश ५ । १२०
अविद्या
अस्मिता
राग
द्वेष
अभिनिवेश
ख्याति ५ । ११९
असत्
आत्म
अन्यथा
अख्याति
अनिर्वचनीय
गन्ध २ । १६
सुगंध । दुर्गंध
गुण ३ । ४१
सत्व । रज । तम
चैतन्य ७ । १४७
ईश्वर । प्रमाण

त्रिपुटी १४ । १७२
देखो पृष्ठ ९५

दृष्टांत ५ । ११८
शुक्तिविषै रजत
रज्जुविषै सर्प
स्थाणुविषै पुरुष
गगनविषै नीलता
मरीचिकाविषै जल

द्रव्यादिपदार्थ ७।१५५
द्रव्य । समवाय
गुण । अभाव
कर्म । विशेष
सामान्य ।

धर्मादि ४ । १००
धर्म । काम
अर्थ । मोक्ष

धातु ७ । १५२
रस । मज्जा
रुधिर । अस्थि
मांस । रेत
मेद

नाडिका औ देवता
१० । १६६
इडा (चंद्र) हरि
पिंगला (सूर्य) ब्रह्मा
सुषुम्णा (मध्यमा) रुद्र
गांधारी (दक्षिणनेत्र)
इंद्र
हस्तिजिव्हा (वामनेत्र)
वरुण
पूषा (दक्षिणकर्ण) ईश्वर
यशस्विनी (वामकर्ण)
ब्रह्मा
कुहू (गुदा) पृथ्वी

स्पर्शन
केलि
कीर्तन
गुह्यभाषण
संकल्प
निश्चय
क्रियाजन्यसुख
इनसैं विपरीत।

ब्रह्मविदादि ४ । ९२
ब्रह्मवित्
ब्रह्मविद्वर
ब्रह्मविद्वरीयान्
ब्रह्मविद्वरिष्ठ

ब्राह्मणकेव्रत १२ । १७१
ज्ञान । लज्जा
सत्य । तितिक्षा
शम । अनसूया
दम । यज्ञ
श्रुत । दान
अमात्सर्य । धैर्य

भागवतधर्म १३।१७२
सकामकर्मके फलका विपरीत दर्शन ।
धनगृहपुत्रादिकविषै दुःखबुद्धि औ चलबुद्धि ।
परलोकविषै नश्वरबुद्धि ।
शब्दब्रह्म औ परब्रह्मविषै कुशल गुरुप्रति गमन ।
गुरुविषै ईश्वरबुद्धि औ निष्कपट सेवा ।
परमेश्वरविषै सर्व कर्म

समर्पण ।	दर्शन औ भगव-
भक्तिवैराग्यसहित स्व-	द्रूपआत्माविषै सर्व
रूपानुभव ।	भूतनका दर्शन ।
साधुसंग ।	जन्मकर्म वर्णाश्रमा-
शौच । तप । तितिक्षा ।	दि करि देहविषै
मौन ।	निराभिमान औ
स्वाध्याय । आर्जव ।	स्वपरबुद्धिका अ-
ब्रह्मचर्य । अहिंसा ।	भाव ।
औ द्वंद्वसमत्व ।	भूतग्राम ४ । ९१
सर्वत्र आत्मारूपईश्व	जरायुज । उद्भिज्ज
रका दर्शन ।	अंडज । स्वेदज
कैवल्य । ग्रहनबांधना ।	भूमिका ७ । १९०
अनिकेतता । एकांत	शुभेच्छा
(विविक्त) चीरवस्त्र ।	सुविचारणा
संतोष ।	तनुमानसा
सर्व भूतनविषै आत्मा-	सत्वापत्ति
के भगवद्भावका	असंसक्ति

पदार्थाभाविनी
तुरीयगा

भूरादिलोक ७।१४८

भूर् । जन
भुवर् । तप
स्वर् । सत्य
महर्

भेद ५।१२८

जीवईशका भेद
जीवजीवका भेद
जीवजडका भेद
ईशजडका भेद
जडजडका भेद

भ्रम ५।११६

भेद । विकार
कर्तृत्व । सत्यत्व
संग

भ्रम ६।१४१

कुल । वर्ण
गोत्र । आश्रम
जाति । नाम

भ्रमविवर्त दृष्टांत ५। ११७

बिंबप्रतिबिंब
लोहितस्फटिक
घटाकाश
रज्जुसर्प
कनककुंडल

मद ८।१६१

कुल । यौवन
शील । विद्या
धन । तप
रूप । राज्य

महत्ता हेतुधर्म १२ । १७०

धनाढ्यता । तेज
अभिजन । प्रभाव
रूप । बल
तप । पौरुष
श्रुत । बुद्धि
ओज । योग

महायज्ञ ५ । १२२

देव । मनुष्य
ऋषि । भूत
पितर

मायाकेनाम १५।१७४

माया । सत्या
अविद्या । मूला
प्रकृति । तूला
शक्ति । योनी
अव्यक्त
अव्याकृत
अजा
अज्ञान
तम
तुच्छा
अनिर्वचनीया

मिश्रकर्म ३ । ३४

उत्कृष्ट । सामान्य
मध्यम

मूर्ति ३ । ४२

ब्रह्मा । विष्णु । शिव

मूर्तिमद ८ । १६२

पृथ्वी । आकाश
जल । चंद्र
तेज । सूर्य
पवन । आत्ममद

मैत्र्यादि ४ । ९०

मैत्री । मुदिता

करुणा । उपेक्षा

मोक्षद्वारपाल ४।१०१

शम । विचार

संतोष । सत्संग

मौनादि ७ । १८१

मौन

योगासन

योग

तितिक्षा

एकांतशीलता

निःस्पृहता

समता

यम ५ । ११२

अहिंसा । ब्रह्मचर्य

सत्य । अपरिग्रह

अस्तेय

युक्ति ४ । ९५

अध्यात्मविद्या

साधुसंग

वासनात्याग

प्राणायाम

योगभूमिका ५।११४

क्षेप । एकाग्र

विक्षेप । निरोध

मूढ

योगभूमिका ४ । ९४

वाणीलय

मनोलय

बुद्धिलय

अहंकारलय

रस ६ । १४२

मधुर । कटुक

वाक्य २ । १९
अवांतरवाक्य
महावाक्य

वाद २ । १८
प्रतिबिंबवाद
अवच्छेदवाद

वादादि ३ । ७७
वाद । जल्प । वितंडा

वासना ३ । ४८
लोकवासना
शास्त्रवासना
देहवासना

विकार ६ । १२९
जन्म
अस्तिता
वृद्धि
विपरिणाम
अपक्षय
विनाश

विधिवाक्य ३ । ६९
अपूर्वविधि
नियमविधि
परिसंख्याविधि

विपरीतभावना २।९
प्रमाणगत
प्रमेयगत

विवेकादि ४ । ८४
विवेक
वैराग्य
षट्संपत्ति
मुमुक्षुता

वेद ४ । ८७
ऋग् । साम
यजुष् । अथर्वण

स्पर्श । गंध
रूप ।

शमादि ६ । १२९

शम । तितिक्षा
दम । श्रद्धा
उपरति । समाधान

शरीर ३ । २८

स्थूल । कारण
सूक्ष्म

शास्त्र ६ । १३४

सांख्य
योग
न्याय
वैशेषिक
पूर्वमीमांसा
उत्तरमीमांसा

शृंगारादि रस १० । १६७

शृंगार । भयानक
वीर । बीभत्स
करुणा । रौद्र
अद्भुत । शांति
हास्य । प्रेमभक्ति

श्रवणादि ३ । ४९

श्रवण
मनन
निदिध्यासन

श्रवणादिफल ३ । ६०

प्रमाणसंशयनाश
प्रमेयसंशयनाश
विपर्ययनाश

संशय २ । ७

प्रमाणगत

ज्ञाता । भोग
ज्ञान । कर्ता
ज्ञेय । करण
भोक्ता । क्रिया
भोग्य

सुषुप्ति ३ । ६४
सुषुप्तिजाग्रत
सुषुप्तिस्वप्न
सुषुप्तिसुषुप्ति

सुषुप्त्यादि ३ । ५९
सुषुप्ति । समाधि
मूर्छा

सूत्र ६ । १३८
जैमिनीय
आश्वलायन
आपस्तंब
बौधायन
कात्यायन
वैखानसीय

सूक्ष्मभूत ५ । ११०
शब्द । रस
स्पर्श । गंध
रूप

सूक्ष्मशरीर २ । ३
समष्टि । व्यष्टि

स्थूलभूत ५ । १११
आकाश । जल
वायु । पृथ्वी
तेज

स्थूलशरीर २ । ४
समष्टि । [illegible]

स्पर्श ४ । ९[illegible]
शीत । कोमल
उष्ण । कठिन

वेदान्त

२

श्रीपंचदशीका प्रथम औ पंचम प्रकरण. ... १
श्रीपंचदशी मूलमात्र.... ... ... ०॥=
श्रीईशाद्यष्टोपनिषद् । मूल औ श्रीशंकरभाष्य अनुसार हिंदुस्थानीमैं. ४
श्रीबालबोध टीकासहित. ... ... ०॥=
,, रत्नग्रंथ चित्रित कपडेके पूठेसहित. ... १
श्रीपदार्थमंजूषा (वेदांतपदार्थ कोश) ... ४
श्रीवेदस्तुति । अन्वययुक्त । तथा गुर्जर भाषा ०।-

श्रीवेदांतविनोद.

इस नामसैं अनेक लघुग्रंथ प्रकट किये जाते हैं ॥ तिनमैं वेदांतपदावलि तथा वेदांतपदार्थसंज्ञा छपे हैं ॥ प्रत्येक अंककी कीमत ०)= रखी है । औ कोइबी ७ अंकका मात्र रु० ०||| पडेगा.

१ वेदांपदावलि (श्रीविचारचंद्रोदयका सार)
२ वेदांतपदार्थसंज्ञा.
३ सूफीओंके गजल.
४ देवाभक्तके पद.
५ अखाभक्तके पद.
६ प्रस्ताविक श्लोक अर्थ सहित.
७ वेदांतस्तोत्र संग्रह अर्थ सहित.

इनसें आदिलेके अनेक लघुग्रंथ ऊपरि लिखे क्रमसैं नहीं परंतु समयसजोग अनुसार प्रकट किये जावेंगे ॥